श्रीकाशीनाथ ज्यौतिषभवन ग्रन्थमाला का द्वितीय मणि

सचित्र

हस्तरेखा विज्ञान

२४२ चित्रों से युक्त

नष्ट जन्म पत्र उद्धार सहित

भारतीय रेखा शास्त्र एवं पाश्चात्य रेखाविदों के मतों
का अभूतपूर्व समावेश

सम्पादक
ज्योतिषतीर्थ ज्योतिश्शास्त्रालंकार
श्री हरगोविन्द द्विवेदी
श्री काशीविश्वेश्वरगणेश पञ्चाङ्ग के सम्पादक
अध्यक्ष-श्री काशीनाथ ज्यौतिष भवन,
वाराणसी ।
संशोधित तथा परिवर्तित
श्री सच्चिदानन्द उपाध्याय

प्रकाशक
क्रान्ति प्रकाशन
वाराणसी ।

प्रकाशक
क्रान्ति प्रकाशन
वाराणसी।

चित्रकार—श्री 'दर्शन'

तृतीयावृत्ति २०००

वैक्रमीय २०२६

मूल्य ३-५०

मुद्रक
हरनन्दन
विनायक प्रेस,
साक्षीविनायक, वाराणसी।

श्रीकाशीनाथ ज्यौतिषभवनके संस्थापक, श्रीकाशीविश्वेश्वर
गणेश पञ्चाङ्गके प्रवर्त्तक, सचित्र जन्मपत्रके प्रणेता,
अनेकों राज्योंमें प्रतिष्ठा प्राप्त, राज्य ज्यौतिषी,
ज्यौतिषाचार्य, ज्यौतिषशास्त्रालङ्कार
स्वर्गीय श्री पं० काशीनाथ द्विवेदी
ज्यौतिषीजीके
करकमलोंमें
सादर समर्पित

पूज्य भ्रातृचरण !

आपने अपने जीवनके शेष समयमें जिस 'श्रीकाशीनाथ ज्यौतिष भवन'की स्थापना की थी, जिसके परिचयमें अनेक विभागोंके साथ-साथ एक 'ग्रन्थ प्रकाशन' विभागका भी निर्देश किया था, वह आपके विकराल कालके द्वारा अकाल ही में कवलित हो जानेके कारण आपकी वह इच्छा पूर्ण न हो सकी थी। पर रोगशय्यापर पड़े हुए अन्तिम क्षणमें आपके मुखारविन्दसे निकला हुआ वह आशीर्वाद 'यदि काशी पहुँच जाओगे तो कुछ होकर रहोगे', आज भी मेरे अन्तःकरणमें सञ्चारित है। सम्भवतः उसीका बल मेरे जीवनका सम्बल बनकर मुझे उज्जीवित कर रहा है जिससे मैं आपकी उस वरदात्मिकावाणीसे अर्जित शक्तिके फलस्वरूप यह तुच्छ भेंट 'ग्रन्थ-माला'के द्वितीयपुष्पके रूपमें 'त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये,'के अनुसार सप्रेम समर्पित करता हुआ परम प्रसन्नताका अनुभव कर रहा हूँ।

भवदीय स्नेहभाजन
अनुज
हरगोविन्द

आभार-प्रदर्शन

सहायक ग्रंथों की सूची

१—स्कन्द पुराण	(संस्कृत)
२—अग्नि पुराण	,,
३—नारद पुराण	,,
४—काशी खण्ड	,,
५—यवनाचार्य	,,
६—पञ्च-पक्षी	,,
७—सामुद्रिक रहस्य	,,
८—सामुद्रिक कुञ्जिका	,,
९—हस्तसञ्जीवन	,,
१०—हस्तरेखा विचार	(बङ्गला)
११—सामुद्रिक दीपिका	(हिन्दी)
१२—सामुद्रिक प्रबोध	(मराठी)
१३—कर लक्खन	(प्राकृत-संस्कृत)
१४—हैण्ड पामिस्ट्री	(अंग्रेजी)
१५—हैण्ड रीडिङ्ग	,,

उपर्युक्त ग्रन्थोंके आधारपर ही प्रस्तुत पुस्तक का संकलन किया गया है, अतः इन लेखकों एवं प्रकाशकोंके प्रति मैं कृतज्ञता प्रदर्शित करता हुआ क्षमा प्रार्थी हूँ।

—हरगोविन्द द्विवेदी

विषय-सूची

* श्रीगणेशाय नमः *

अपनी बात

मानव-जीवन एक सांसारिक संग्राम है, जो कि ऊँची-नीची मानवीय जटिल समस्याओं को लेकर अपनी तीव्र या मन्द गति द्वारा ऊबड़-खाबड़ मार्गको पार करता है, इस मार्गकी सम-विषम भूमि एवं कण्टकाकीर्ण संस्थान तथा सहज सुखद सुपन्थका ज्ञान होना इस मानवीय जीवनके लिए परमापेक्षित है। क्या स्त्री, पुरुष ? सभी अपने प्रकाशमय भविष्यकी अभिव्यक्ति चाहते हैं।

हमारी आयु कितनी है ? विवाह कब होगा ? दाम्पत्य जीवन कैसा रहेगा ? आर्थिक जीवनकी स्थिति क्या होगी ? सामाजिक एवं नैतिक स्तर कैसा रहेगा ? भाग्योदय कब, किस दिशामें, किसके द्वारा और किस प्रकार होगा ? वैदेशिक यात्रा एवं विद्या प्राप्तिका योग कैसा है ? आदि-आदि अनेकानेक प्रश्नों का ताँता आये दिन आँखों के सामने झूलता रहता है; उपर्युक्त श्रृङ्खलामें आबद्ध सभी वर्गके लोग यह जाननेके लिए अपनी परम उत्सुकता प्रकट करते हैं। कथित प्रश्नों का सम्यक् ज्ञान करानेवाले दो ही शास्त्र आजकल उपलब्ध हैं, १ ज्योतिष, २ सामुद्रिक।

१—ज्योतिष शास्त्रका गणित एवं फलित जन्म समयादिकी पूर्ण शुद्धि पर आधारित है जो कि:—"इष्ट विना सब भ्रष्ट है" वाली कहावतसे स्पष्ट हो जाता है और उस समयका सम्यक् ज्ञान करनेके लिए खगोलका विशेष अध्ययन परम वाञ्छनीय है, परन्तु इस वैज्ञानिक युगमें विभिन्न घटी यन्त्रों का निर्माण हुआ और आलस्य वश ज्योतिर्वेत्ताओंने उन्हींके आश्रित होकर कार्यारम्भ कर दिया फलतः शनैः-शनैः समय-साधनमें अशुद्धि की झलक आने लगी, क्योंकि कृत्रिम एवं प्राकृतिक वस्तु विशेषमें अन्तर आया और समयकी शुद्धिका लोप यत्र-तत्र परिलक्षित होकर ज्योतिष शास्त्र पर आक्षेप करने लगा। आज वह शास्त्र अनेक प्रकारकी शंकाओंका अखाड़ा बन गया है। फिर भी यदि पूर्वाचार्य प्रणीत प्राचीन पद्धतिको प्रयोजित करते हुए इस शास्त्रको उपयोगमें लाया जाय तो निस्सन्देह कालज्ञान करनेवाला यह अपनी सानीका एक ही अनोखा शास्त्र कहा जा सकता है।

यूरोपीय कतिपय विशिष्ट विद्वानों ने अपनी विवेचनात्मक बुद्धि द्वारा इस शास्त्रकी सत्यताको नतमस्तक होकर स्वीकार करते हुए मुक्त कण्ठसे भूरि-भूरि

प्रशंसा की है, तभी तो "सफलं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्राकौं यत्र साक्षिणौ" कह कर हमारे ऋषियोंने इसे प्रतिष्ठित किया है। भला चन्द्रमा और सूर्य जिस शास्त्रके साक्षी हों यह शास्त्र भी कभी असत्य हो सकता है। भले ही उसके जाननेवाले प्रमादवश सत्यतासे वञ्चित रह जायँ, परन्तु शास्त्रको सत्यतामें किसी प्रकारका सन्देह नहीं।

२—अब दूसरा शास्त्र है "सामुद्रिक शास्त्र" जिसे कि "सामुद्रं अंग लक्षणम्" कहकर आचार्योंने इंगित किया है। वास्तवमें यही एक ऐसा शास्त्र है जिसके द्वारां कि मनुष्यमात्रके विभिन्न अंग-प्रत्यङ्गोंके लक्षणों पर से समस्त फलकी कल्पना की जा सकती है, परन्तु इसमें दो अंगोंके लक्षणों परसे विशेष फल निरूपित किया गया है—१ मुखाकृति पर २ हस्तरेखा पर। उसमें भी मुखाकृतिकी अपेक्षा हस्तरेखाके विचारको प्रधानता देते हुए व्यापक एवं विस्तृत बनाया गया है। इसका कारण यह है कि स्त्री-पुरुषोंके विभिन्न अंग वस्त्रोंसे आच्छादित रहनेके कारण सहसा दृष्टि पथपर नहीं आ सकते, जबकि मुख एवं करतलको सुविधानुदेखा जा सकता है। परन्तु मुखाकृति परसे मनुष्यके स्वभाव एवं सामयिक सुख-दुःखोद्भूत, हर्षोद्विग्नता चिन्ता, समवेदनादि का ही सम्यक् ज्ञान हो सकता है जीवनमें होनेवाली महत्त्वपूर्ण घटनाओंका परिज्ञान मुखाकृति परसे नहीं किया जा सकता क्योंकि यह शास्त्रसम्भव नहीं है।

बस! इसी कारण करतलगत रेखाओंको विशेष महत्त्व दिया गया है, इन स्थूल एवं सूक्ष्म रेखाओं द्वारा जीवनके समस्त शुभाशुभ फलकी कल्पना करनेकी आज्ञा पूर्वाचार्योंने दी है प्रकृति होनेके कारण इन रेखाओं पर कल्पित किया हुआ फलादेश यथातथ्य एवं स्पष्ट रहता है, इसमें सन्देह नहीं। हमारे पूज्य ऋषियों एवं रेखा शास्त्रवेत्ताओं ने इन्हीं प्राकृतिक रेखाचिन्हों एवं करतलगत अन्य अवयवों पर नवग्रहों एवं द्वादश राशियों की कल्पना करके ज्योतिष शास्त्र-को इसीमें समाविष्ट कर दिया है, जिसके द्वारा कि मनुष्यका नष्ट जन्मपत्र तथा वर्षपत्रका निर्माण शुद्ध रीतिसे किया जा सकता है। इस शास्त्रमें अब दो मतोंका समावेश हो गया है :—१ पौर्वात्य और २ पाश्चात्य अपनी-अपनी कल्पना एवं अनुभूति द्वारा उभय मतावलम्वी अपने-अपने फलादेशके वर्णनसे जनताको चमत्कृत करते हुए देखे गए हैं, परन्तु दोनों मतोंमें कुछ न कुछ आंशिक त्रुटियाँ दिखाई देती हैं, इधर कुछ समयसे वर्त्तमानकालिका रेखा शास्त्रज्ञोंने दोनों मतोंका समन्वय करते हुए कुछ ग्रन्थोंका निर्माणकिया है जिनके द्वारा फलादेश कहनेमें सुविधा एवं सत्यताका प्रतिबिम्ब सामने उपस्थित होकर जनसमुदायमें प्रत्यक्षका प्रादुर्भाव

कर देता है और "विश्वासौ फलदायकः" के अनुसार प्रत्येक कार्यों में विश्वासके द्वारा ही फलकी सिद्धि होती है और वह विश्वास शास्त्रकी सत्यता पर निर्भर रहता है।

बस! इसी उद्देश्यको दृष्टिकोणमें रखते हुए प्रस्तुत पुस्तकका सङ्कलन किया गया है। इसमें पौर्वात्य एवं पाश्चात्य दोनों मतोंका सम्यक् प्रकारेण समावेश करते हुए जन-साधारणके समझमें आनेवाली सरल एवं सुबोधगम्य भाषाका प्रयोग किया गया है।

अनेक ग्रन्थोंके मन्थनोद्भूत सारांशका समन्वय करते हुए स्वानुभूत तथा परानुभूतिका पुट देकर पुस्तककी उपयोगिताको समुन्नत करनेका भरसक प्रयत्न किया गया है।

जिस पुस्तकसे हमें चित्र एवं विशिष्ट सामग्रीकी समुपलब्धि हुई है परिमार्जित बङ्गला भाषासे सम्बलित उस पुस्तकका नाम है "हस्तरेखा विचार" इस पुस्तकके सुयोग्यतम लेखक श्री पं० सुरेन्द्रनाथ भट्टाचार्यजीके हम विशेष आभारी हैं, जिनकी अनुपम कृतिके आधार पर यह पुस्तक साङ्गोपाङ्ग सम्पन्न हो सकी है।

इस पुस्तककी उपादेयता बढ़ानेका सबसे बड़ा श्रेय है, त्यागनिष्ठ तपोमूर्त्ति गुरुकल्प पूज्य श्री १०८ श्री स्वामी त्यागानन्द पुरीजी महाराजको जिन्होंने समय-समय पर अपनी अमूल्य सम्मति द्वारा हमें विशेष सहयोग दिया है, या यों कहिए कि उन्हीं सद्गुरु देवकी वरदात्मिका वाणीका ही यह एक प्रच्छन्न प्रतिबिम्ब है।

अन्तमें ज्योतिषशास्त्री, साहित्य रत्न पं० श्रीरामदयालु त्रिपाठीजी (महोबा) तथा पं० श्री देवकीनन्दजी शास्त्री (मानमन्दिर काशी एवं भाई श्री गंगेश्वर झा (एम० ए०, रिसर्च स्कालर) को हम धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकते, कि जिनके अतुल सहयोग एवं सत्प्रेरणा द्वारा प्रेरित होकर हम इस पुस्तकके संकलन करनेमें सफल हो सके हैं।

दृष्टि दोष या किसी अन्य कारणवश रहनेवाली त्रुटियोंके लिए हम विद्वत्समाजसे क्षमा प्रार्थी होकर इस कृतिको अपना ही समझ कर अपनानेके लिए आग्रह करेंगे।

भैरवाष्टमी
० २०१३
काशी

श्री हरगोविन्द द्विवेदी

श्रीगुरुचरणेभ्यो नमः । श्रीसरस्वत्यै नमः । ॐ नमः परादेवतायै ।

आशीर्वचन

सामुद्रिक शास्त्र ज्योतिष शास्त्रका ही एक अंग है। आरम्भमें इसका नाम लक्षण शास्त्र था। कालांतरमें इसी लक्षण शास्त्रका नाम सामुद्रिक शास्त्र पड़ा। आजसे हजारों वर्ष पूर्व व्यास, पराशर, श्री सूर्य, कात्यायन, छागलेय, गर्ग, गौतम, अत्रि, कश्यप तथा वृहस्पति आदि महर्षियोंने इसे प्रकट किया था।

"यज्जातकं व्यास पराशरो वै, श्रीसूर्यकात्यायनछागलेयः।
कृतन्तु द्वैविध्यहं ब्रवीमि युक्तं सुसामुद्रिकयुक्तिभेदैः ॥"

बाल्मीकि व्यासादि रचित रामायण तथा स्कन्द पुराणादिके देखनेसे स्पष्ट पता चला हैं कि यह शास्त्र अति प्राचीनकालसे पूर्ण उन्नत दशामें इस देशमें सम्मानपूर्वक प्रचलित था। किसी व्यक्तिको किसी उच्च पद पर नियुक्त करनेके समय तथा किसीसे कुछ सम्बन्ध स्थापित करनेके पहिले सामुद्रिकके अनुसार उसकी परीक्षा कर ली जाती थी। यदि सामुद्रिक लक्षणानुसार कोई व्यक्ति किसी कार्य पर नियुक्त करने योग्य प्रतीत नहीं होता या तो उस व्यक्तिको उस कार्य पर पर नियुक्त करने योग्य प्रतीत नहीं होता था तो उस व्यक्तिको उस कार्य पर नियुक्त नहीं किया जाता था। इसी तरह जब तक किसी कन्या या वरकी सामुद्रिक शास्त्रोक्त लक्षणों से परीक्षा नहीं कर ली जाती थी तब तक उस कन्या या वरका विवाह नहीं होने पाता था। मान्वादि धर्म-शास्त्रों में इस बातका स्पष्ट उल्लेख है।

बाल्मीकि रामायणके युद्ध-काण्डके ४८ वें सर्गमें राम व लक्ष्मणजी के बध हो जानेका समाचार पाकर सीताजी के विलापका वर्णन है। उक्त प्रसङ्गमें सीताजी के मुखारविन्दसे जो शोकोद्गार निकले हैं उससे लक्षण-शास्त्रके प्रति उनके दृढ़ विश्वासकी स्पष्ट झलक मिलती है।

"भर्तारं निहतं दृष्ट्वा लक्ष्मणं च महाबलम्।
विललाप भृशं सीता करुणं शोककर्शिता ॥ १ ॥

ऊचुर्लक्षणिनी ये मां पुत्रिण्यविधवेति च ।
तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृतवादिनः ॥ २ ॥
वैधव्यं यान्ति यैर्नार्यो लक्षणैर्भाग्यदुर्लभाः ।
तात्मनस्तानि पश्यामि पश्यन्ती हतलक्षणा ॥ ७ ॥
आधिराज्येऽभिषेको मे ब्राह्मणै पतिना सह ।
कृतान्तकुशलैरुक्तं तत्सर्वं वितथीकृतम् ॥ १४ ॥

इन वचनोंसे ईस्वीय सन्के पूर्व चार-पाँच हजार वर्षसे ही इस शास्त्रका अधिक प्रचार स्पष्ट ही लक्षित होता है। पाण्डवों के समयमें भी इस शास्त्रका अच्छी रीतिसे प्रचार था। सुयोधनके करतलस्थ लक्ष्य चिह्नकी कथा महाभारतमें बड़े अच्छे ढंगसे वर्णित है।

लक्षण शास्त्र व सामुद्रिक शास्त्र ये शब्द जैसे भारतमें समस्त शरीर बोधक हैं वैसे अन्य देशोंके सामुद्रिक शास्त्रमें नहीं हैं। इस शारीरिक लक्षण विद्याको जैसे-जैसे उनके देशों में जानकारी होती गई वैसे-वैसे उस-उस विभागानुसार उन-उन अंगों का नाम रखकर अलग-अलग अंगों के लक्षण विचारके शास्त्र बनते गए। उदाहरणार्थ हस्त सामुद्रिक (कायरोमेन्सी या पामेस्ट्री), मस्तक परीक्षा (फेनालाजी), मुख परीक्षा (फिजिओग्रामी), और स्वर परीक्षा (हाँकेपी , चलने तथा अन्य हाव-भाव परक (गेट्स एण्ड गेश्चर्स), अक्षर परक (ग्राफालाजी) इत्यादि पद्धतिसे फल कथनका प्रयत्न आरम्भ हुआ है। किन्तु हमारे भारतमें आचार्योंने सहस्रावधि-वर्ष पूर्व ही कहा है कि—

"अतः सुखसमृद्धयर्थमादौ लक्षणमीक्षयेत ।
वपुरावर्तगन्धाच्च छाया सत्त्वस्वरो गतिः ॥
वर्णश्चेदष्टधा प्रोक्ता बुधैर्लक्षणभूमिका ।
आपादतलमारभ्य यावन्मौलिरुहं क्रमात् ॥
यथामति प्रवक्ष्यामि लक्षणानि मुने शृणु ।
तथा—नव रन्ध्राणि हस्ताङ्घ्रिः पृष्ठनाभि शिरो वपुः ॥
कण्ठ वक्षोदरोर्वादि सह रेखाम्परीक्षयेत् ।
शरीरावर्त्त गतिच्छाया स्वर वर्णगन्ध सत्वानि ॥
दृष्टि शीलादि जिह्वानि विज्ञाय फलमीरयेत् ।

स्त्री-पुरुषोंके अंग लक्षणोंकी परीक्षाका उपाय तथा शरीर लक्षण विद्याकी जो रूप-रेखा हमारे आचार्यों ने रक्खी है उसीका अनुकरण करनेका आरम्भ अब पाश्चात्य देशोंमें होने लगा है।

ईस्वीय सन्‌के तीन हजार वर्ष पूर्व चीन देशमें, तथा दो हजार वर्ष पूर्व ग्रीस तथा रोम आदि देशोंमें इस शास्त्रके अस्तित्वका पता चलता है। फिर चीनसे ग्रीस तथा ग्रीससे योरोप देशमें चारों ओर प्रसारित होनेका प्रमाण भी ऐतिहासिकोंके लिये नया नहीं। योरपमें प्रचलित 'कायरोमेन्सी', फिजिओग्रामी, फ्रेनालाजी आदि शब्द ग्रीक भाषाके ही हैं इसके अतिरिक्त रामायण तथा महाभारत आदिके उद्ध-रणोंसे स्पष्ट है कि चीनसे भी पहले यह शास्त्र भारतवर्षमें पूर्ण रूपसे प्रचलित था।

इस शास्त्रका उभयदेशीय इतिहास व परिस्थिति

अपने यहाँ के इस शास्त्रके पूर्वाचार्योंके अति प्राचीन ग्रन्थ तो मिलते ही नहीं और जो उपलब्ध भी हैं उनके देखनेसे इसके श्रृंखलाबद्ध इतिहासकी योजना नहीं दिख पड़ती। गर्ग, नारद, प्रह्लाद, वाराहमिहिरादि आचार्योंने इस पर कुछ विचार किया था, ऐसा ज्ञात होता है परन्तु उन्होंने अपने ग्रन्थोंमें शरीरके अंग-प्रत्यंगादि सर्व अवयवों सहित सम्पूर्ण शरीरके चिह्नोंके लक्षण और उनका फल विचार जो वर्णित किये हैं उनमें एक अंग विशेषका भी जैसा चाहिए वैसा विशेष उहापोहके साथ विचार नहीं हुआ है। हथेली परकी चार रेखाओं, अंगुलियों परकी कुछ रेखाओं तथा अन्यान्य चिह्नोंका यत्किञ्चित् वर्णनमात्र मिलता है।

वराह मिहिरके पश्चात् आज दिन पर्यन्त इसपर किसीमे स्वतन्त्र एवं शोधक बुद्धिसे कोई ग्रन्थ लिखा हो ऐसा नहीं दिखता। वर्त्तमान समयमें जो ग्रन्थ लिखे गए हैं उनको ग्रन्थ कहनेकी अपेक्षा पाश्चात्य सामुद्रिकका त्रुटिपूर्ण भाषान्तर कहना ही भला है। उनमें न तो अपने इधरके ग्रन्थोंके पूर्ण प्रमाण हैं और न तो पाश्चात्व ग्रन्थोंके ही। यदि दोनोंमें एक भी होता तो अच्छा था। हमारे पूर्वाचार्योंने जो कुछ इस शास्त्रके सम्बन्धमें थोड़ा-बहुत विचारकर इसका दिग्दर्शन कराया है, उससे अधिक इस विषयमें कुछ भी प्राप्त नहीं है।

किसी भी कारणसे हो शोधक बुद्धिसे किसीने इस शास्त्रका अनुसन्धान विचार-पूर्वक नहीं किया। किसीने कुछ किया भी हो तो उस जमानेमें जब हिन्दू शास्त्र ढूँढ़-ढूँढ़के जलाए जा रहे थे सम्भव है कि वह भी जला दिया गया हो और चारों

ओरसे उच्च शिखर पर चढ़े हुए इस हमारे शास्त्रकी प्रगतिका नाश हो गया हो।

अब योरोपमें हुए इस शास्त्रकी प्रगतिका विचार करते हैं तो विदित होता है कि वहाँ १७०० सत्रह सौ वर्षसे इस शास्त्रका सुसम्बद्ध इतिहास मिलता है।

ड्राइडन सरीखे विद्वानोंके छोटे-बड़े उल्लेख छोड़ देनेपर भी दूसरे शतकमें आर्टीमीडोरस नामके विद्वान्की इस विषय पर छोटी-सी पुस्तिका मिलती है, तदनन्तर बारह सौ से तेरह सौ वर्ष पर्यन्त यह शास्त्र यहाँ भी निद्रावस्थामें ही रहा। तत्पश्चात् हार्टलायबनकी ईस्वी सन् १४४८ में 'डी कुन्स्टवाँय रोमंटिआ' नामकी पुस्तक प्रसिद्ध हुई, उसके बाद कोकत्सका ईस्वी सन् १५०४ में और 'डी लाचने' नामक विद्वान्का सन् १६५४ में एक-एक पुस्तक प्रसिद्ध हुआ। उसके बाद फ्रेंच, जर्मन, इटालियन स्त्री-पुरुष ग्रन्थकारोंने इस विषय पर बहुत ही परिश्रम किया और अठारहवीं एवं उन्नीसवीं शताव्दीमें तो अमेरिकामें इस शास्त्रसे सम्बन्धित बहुत-सी पुस्तकें लिखी गईं। 'एनक डोटस्डीडोरन्स' नामक ग्रन्थ कर्त्ता ने उपरोक्त कोकत्स में ऐसा लिख रक्खा है कि :—"मेरी मृत्यु दूसरे के द्वारा मस्तक में आघात पहुँचानेसे अमुक दिवस पर होगी," उसके अनुसार ही निर्दिष्ट दिवस पर वैसी बात हुई थी।

गत चार-पाँच सौ वर्ष से इस शास्त्र पर परिश्रम होना आरम्भ होकर आज इस शास्त्र का सुसम्बद्ध व सुसंगठित रूप प्राप्त हो चला है और योरोप में अब वर्त्तमान समय में इसका अत्यधिक प्रचार हो रहा है।

यद्यपि योरोपीय पाश्चात्य सामुद्रिक शास्त्र वेत्ताओं ने विशेषानुसन्धान द्वारा इस विषय को विकसित करने की सफल चेष्टा की है तथापि भारतीय विद्वानों का यह परम्परागत प्राचीन शास्त्र आज भी अपनी चमत्कृत कलाओं द्वारा गौरवान्वित होकर अपने अनूठेपन के लिए प्रख्यात है।

इस विषय पर विभिन्न भाषाओं में बड़े-बड़े ग्रन्थों के निर्माण हुए हैं अन्वेषण करने पर जिसकी जो सामग्री जहाँ से उपलब्ध हो सकी उसने अपने-अपने ग्रन्थों में उसका समावेश करने का प्रयास किया है परन्तु वास्तविक अनुभव द्वारा किसी ने भी इसका दिग्दर्शन नहीं कराया।

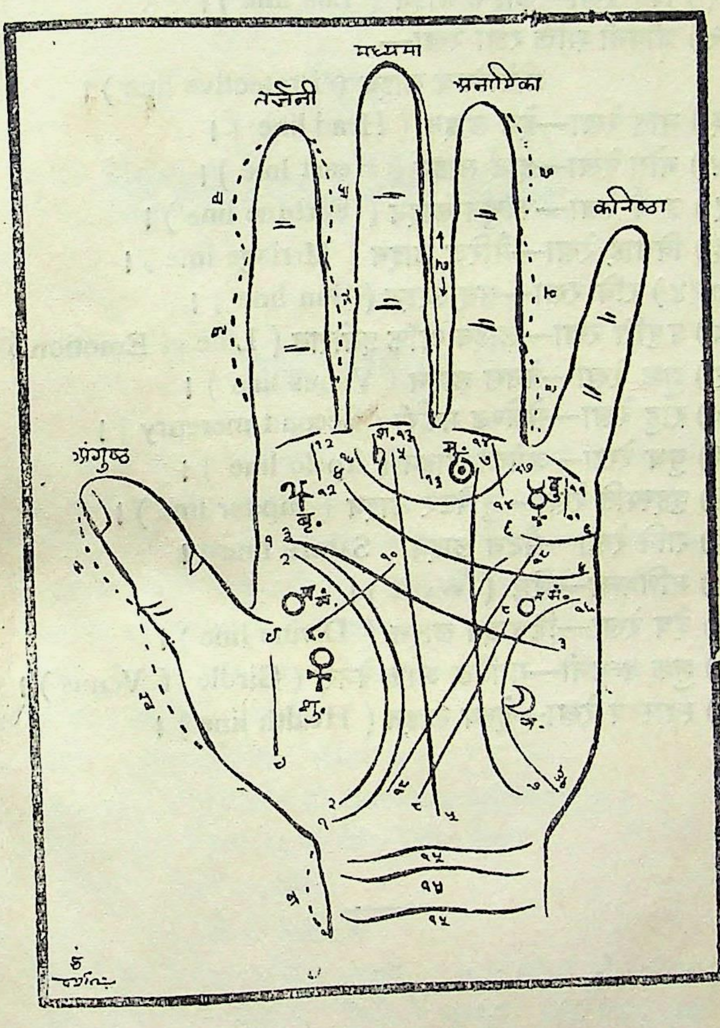
अनुभव सिद्ध विद्वानोंको इन प्राकृतिक रेखाओं द्वारा अतीत-अनागत तथा वर्तमान तीन कालिक घटनाओं का ज्ञान हस्तामलक की भाँति होता है परन्तु ऐसे सिद्ध पुरुषों का एक तो दर्शन ही परम दुर्लभ है और यदि किसी प्रकार साक्षात्कार हो भी जाय तो इस विद्या को ये गोपनीय समझ कर किसी के सामने प्रकाश में भी नहीं आने देते और अन्ततोगत्वा वह कला उन्हीं के नश्वर शरीर के साथ विलय हो जाती है।

प्रस्तुत पुस्तक सामुद्रिक शास्त्राब्धि मन्थन द्वारा निर्मित नवीनता के समान है। इसमें शास्त्र सम्मत सारभूत वस्तुओं के साथ अनुभूति विशेष का समन्वय करने का सफल प्रयास लेखक द्वारा किया गया है जो कि बहुत ही परिमार्जित एवं परिष्कृत है। यह पुस्तक सामुद्रिक शास्त्र या लक्षण शास्त्र जैसा विशाल ग्रन्थ न होकर 'हस्त-रेखा-विज्ञान' मात्र ही है तथापि पाठकों को इसमें लक्षण-शास्त्र जैसी सामग्री भी प्रचुर मात्रामें प्राप्त हो जायगी। इस 'हस्त-रेखा-विज्ञान' में पौर्वात्य एवं पाश्चात्य दोनों देशोंके विद्वानों के परिश्रम से लाभ उठाने का पूर्ण प्रयास किया गया है। चित्रोंके उदाहरणों द्वारा इस गहन-गम्भीर शास्त्र को सरल विज्ञान के रूप में डालकर संकलन कर्त्ताने सर्व-साधारण जनता को लाभान्वित करने का बड़ा ही श्लाघ्य प्रयत्न किया है। सत्य ही यह संकलन अपने ढङ्ग का अनूठा ही कहा जा सकता है। यह कृति प्रकाशित होकर जनता जनार्दन के लिए विशेषोपकारी रूप में प्रतिष्ठित होगी ऐसा मेरा विश्वास है।

उत्तर काशी
सौर मार्गशीर्ष ८
२०१३

—स्वामी त्यागानन्द पुरी

रेखा-परिचय



रेखा-परिचय

(१) पितृ रेखा—लाइफ लाइन (Life line)।
(२) जीवनी शक्ति रक्षा रेखा—
प्रोटेक्टिव लाइन (Protective line)।
(३) मातृ रेखा—हेड लाइन (Head line)।
(४) भोग रेखा—हार्ट लाइन (Heart line)।
(५) ऊर्ध्व रेखा—फॉर्चुन लाइन (Fortune line)।
(६) विवाह रेखा—मैरिज लाइन (Mrriage line)।
(७,१४) रवि रेखा—सन् लाइन (Sun line)।
(८) प्रवृत्ति रेखा—लाइन ऑफ इमोशन (Line of Emotion)।
(९) शुक्र रेखा—वेनस लाइन (Venus line)।
(१०) राहु रेखा—सेकेण्ड मर्करी (Second mercury)।
(११) बुध रेखा—अपेलो लाइन (Apelo line)।
(१२) वृहस्पति रेखा—जुपिटर लाइन (Jupiter line)।
(१३) शनि रेखा—सैटर्न लाइन (Saturn line)।
(१५) मणिबन्ध—रिष्ट (Wrist)।
(१६) दैव रेखा—डिवाइन लाइन (Divine line)।
(१७) शुक्र बन्धनी—गार्डिल आफ वेनस (Girdle of Venus)।
(१८) स्वास्थ्य रेखा—हेल्थ लाइन (Health line)।

|| श्रोः ||

सचित्र

हस्तरेखा-विज्ञान

—:oo:—

प्रथम अध्याय

हस्तरेखा-विचार अथवा हाथ की भाषा पढ़ने से पहले हाथ के विषय में पूरी जानकारी का होना अत्यन्त आवश्यक है। हाथ के गठन और बनावट पर, मानव-प्रकृति, उसमें वंश परम्परागत दोष या गुण अथवा कौन-सा व्यक्ति किस श्रेणी के कार्य के उपयुक्त है इत्यादि वस्तुयें, निर्धारित होती हैं। इसलिये हस्तरेखा-विशेषज्ञों ने हाथ के बनावट को सात प्रकार का बतलाया है।

१—निकृष्ट हाथ (Elementary hand)

२—मिश्रित (Mixed hand)

३—वर्गाकार (Square या Useful hand)

४—चमसाकार (Spatulate या Nervous active type)

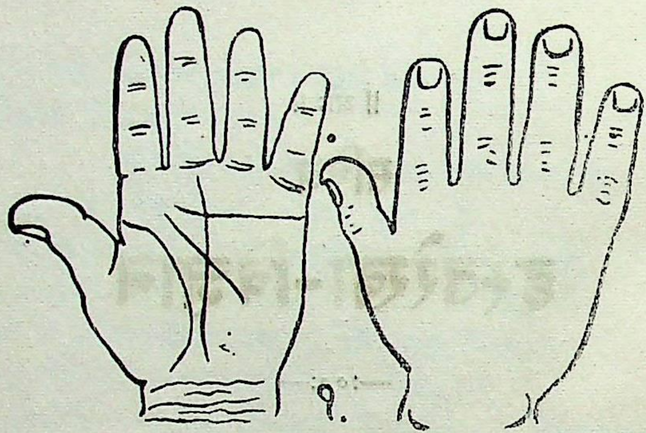
५—आदर्शवादी (Psychic या Idealistic विषम)

६—दार्शनिक (Philosophic)

७—कलाकार या (Conic artistic)

१. निकृष्ट हाथ (Elementary hand)—निम्न प्रकार की (Mentality) बुद्धि के लोगों का ऐसा हाथ होता है। देखने में खुरदुरा, भद्दा, बड़ा, मोटा, भारी हथेली, छोटी उँगलियाँ और छोटे नाखून होते हैं; क्योंकि हस्तरेखा-विशेषज्ञों का मत है कि बुद्धिसत्ता तब आती है जब उँगलियाँ हथेली से बड़ी हों। जैसे जंगली खतरनाक जानवरों की हथेली की हड्डियाँ ही पूरे हाथ को बनाती हैं, उस प्रकार हथेली जितना ही हाथ पर अधिकार बताती हुई दिखाई दे उतनी ही पशुवत्-वृत्ति

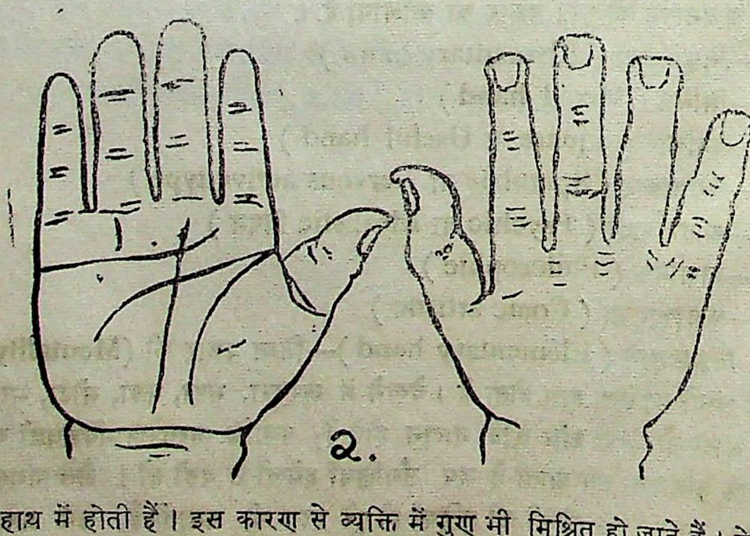
व्यक्ति में होगी। ऐसे हाथों में रेखायें और अन्य निशान बहुत थोड़े होते हैं। ऐसे व्यक्तियों को रूप रंग कुछ नहीं भाता। विषयों (Passion) पर उनका अधिकार



१.

नहीं होता। वे एक प्रकार के (Brute) निर्दयी होते हैं। अँगूठा भी छोटा और मोटा होता है। इनमें चतुराई भी निम्नकोटि की होती है। बोझा ढोनेवाले मजदूरों का हाथ अधिकतर ऐसा ही होता है।

२. *मिश्रित हाथ* (Mixed hand)—मिश्रित हाथ को पहचानना थोड़ा कठिन होता है। वर्गाकार, चमसाकार, कलाकार, दार्शनिक अथवा आदर्शवादी हाथ यह है, इसे समझना कठिन हो जाता है। इसी प्रकार तरह-तरह की उँगलियाँ

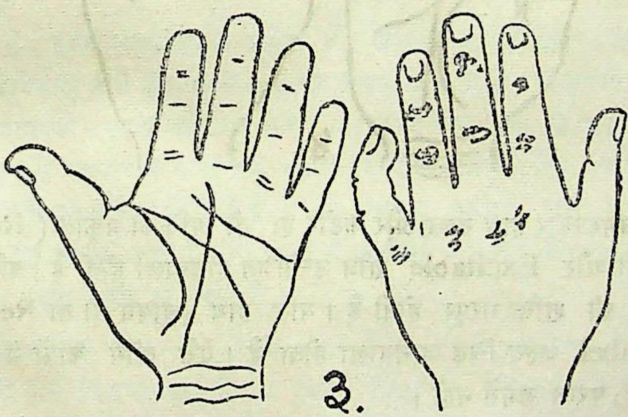


२.

भी हाथ में होती हैं। इस कारण से व्यक्ति में गुण भी मिश्रित हो जाते हैं। वे सदा अपने को समय के अनुसार उसमें ढाल देनेवाले होते हैं। चतुर होते हुये भी अपनी

योग्यता का उपयोग करने में वे गलती करते हैं। बातचीत में ये तेज होते हैं। विज्ञान, कला या केवल गप्प ही क्यों न हो, सभी में भाग लेनेवाले ऐसे लोग होते हैं। इनकी मस्तिष्क-रेखा कुछ बड़ी हो तो ऐसे व्यक्ति सफल भी होते हैं। उनके लिये प्रत्येक काम आसान हो जाता है तथा वे कभी ड्रामा लिखते हैं तो कभी गैस, स्टोव बनाने की सोचेंगे तो कभी आकाश में उड़ने की नई तरकीब ढूँढ़ निकालने की बातें सोचने लगते हैं। इस प्रकार हथेली के आधार पर इनके गुणों में अच्छाई या बुराई आती है; क्योंकि इनमें शारीरिक या मानसिक दोनों प्रकार से कार्य करने की अच्छी क्षमता होती है। फिर भी जहाँ कूटिबुद्धि या बुद्धि-चातुर्य्य की आवश्यकता पड़ती है ये अधिक सफल होते हैं। राजनीतिक विषयों में पर्याप्त उन्नति करने वालों में ऐसे श्रेणी के लोग अधिकतर पाये जाते हैं।

३ वर्गाकार हाथ (Square)—वर्गाकार हाथ कलाई के पास व उँगलियों के आधार की ओर तथा उँगलियों के पार चौकोर सा दिखाई देता है। नाखून भी छोटे और चौकोर होते हैं। ऐसे लोग समय के पाबन्द, हर-एक वस्तुको समुचित रूप में चाहनेवाले व कर्तव्य-परायण होते हैं। ऐसा लक्षण इनमें इनके आचरण के कारण होता है। इनके अन्दर हर वस्तुओं का स्थान होता है ऐसे लोग

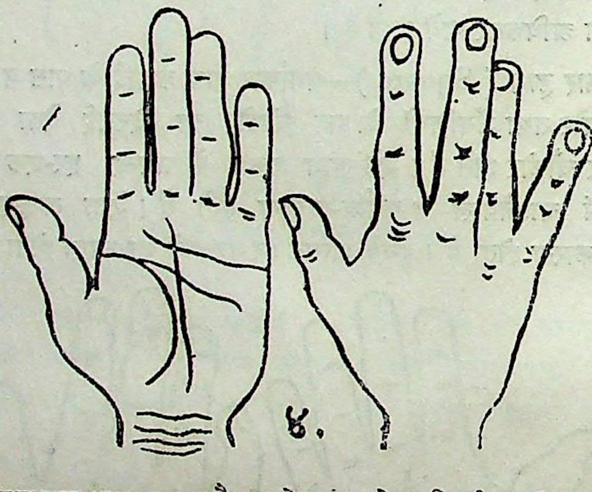


3.

Authority और Discipline का आदर करते हैं। इसी प्रकार दिमाग भी अपने स्थान पर होता है। ये लोग कानून को आदर से देखते हैं तथा रीतिरिवाज (Custom) के गुलाम होते हैं। किसी काम को जिद न करके तर्क से करनेवाले होते हैं। युद्ध में भी ये शान्ति चाहते हैं। बनावटीपन से इन्हें घृणा होती है। कार्य्यों में दक्ष होते हैं; परन्तु अपने को हर परिस्थितियों में तद्रूप बनाने की क्षमता इनमें नहीं होती। खेती और व्यापार को ये प्रोत्साहन देनेवाले होते हैं। वर्गाकार हाथ होते हुये भी उँगलियाँ भिन्न प्रकार की होती हैं। जैसे वर्गाकार हाथ और छोटी

वर्गाकार उँगलियाँ, वर्गाकार हाथ और गठीली उँगलियाँ, वर्गाकार हाथ और चमसाकार उँगलियाँ वर्गाकार हाथ और कलाकार उँगलियाँ, वर्गाकार हाथ और विषम उँगलियाँ इस प्रकार के मिश्रण हो जानेसे गुणोंमें पर्याप्त परिवर्तन हो जाता है, जो उँगलियों की विभिन्न दशापर आधारित होता है।

४. *चमसाकार हाथ*:—(Spatulate Hand) Spatulate या चमसाकार हाथ या तो कलाई के पास या उँगलियों के जोड़ों पास चौड़ा होता है। उँगलियों का शिरा डाक्टरों के चम्मच् की शक्ल का होता है। कहीं से वर्गाकार होने का लक्षण नहीं होता।

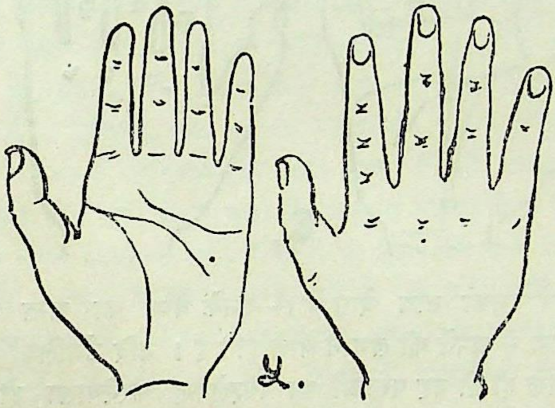


४.

यदि चमसाकार हाथ सख्त और कठोर हो तो व्यक्तिकी प्रकृति (Restless) भटकनेवाली और Excitable शीघ्र उत्तोजित होनेवाली होती है। परिश्रम और काम करने की शक्ति भरपूर होती है। यदि हाथ मुलायम हो तो Restlese के साथ Irritabel जल्द चिढ़ जानेवाला होता है। ऐसे लोग कार्यों में कूद पड़ने वाले होते हैं; परन्तु जमते नहीं।

बड़े नाविक Exploreres, खोज करनेवाले deicoverers और Engineer इन्जीनियर तथा कारीगरी के काम करनेवालों के ऐसे हाथ होते हैं; फिर भी इतने ही लोगों में सीमित न रहकर भिन्न-भिन्न पेशावालों के ऐसे हाथ होते हैं। मूल कारण जिसे तत्व कह सकते हैं। इनमें यह गुण होता है कि वे एकाकी स्वतन्त्रता के प्रेमी होते हैं और ज्ञात नियमों के द्वारा अज्ञात वस्तुओं की खोज करनेवाले होते हैं। डाक्टर या ऐक्टर भी हुये तो अपने अनुरूपगुणों के द्वारा एक नई रूपरेखा तैयारकरते हैं। नये बिचारों के तथा बहादुर होते हैं, जो भविष्य के लिए जीवन देते हैं।

५. *आदर्शवादी या* **Psychic**/*या* **Idealistic** *हाथ*—सबसे सुन्दर, परन्तु भाग्य-हीन हाथ यही होता है। इसकी बनावट लम्बी संकरी मुलायम तथा उँगलियाँ लम्बी और धीरे-धीरे पतली होती जाती हैं। नाखून बादाम के शक्ल के होते हैं। ऐसे लोग जीवन-युद्ध के योग्य नहीं होते। इनके विचार स्वप्नील होते हैं। ये प्रेमी और प्रत्येक दिशा में सुन्दरता चाहते हैं। ये अधिक विनम्र और शान्त चित्तके होते हैं। इनके ऊपर यदि कोई थोड़ी दया दिखाये तो उसके ऊपर विश्वास करने

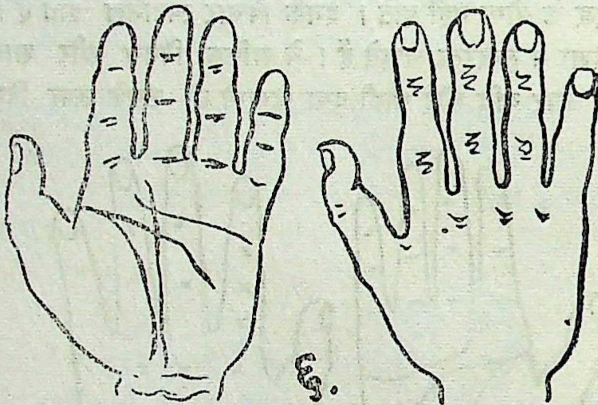


५.

लग जाते हैं। इनमें समयानुकूल चलना और अनुशासन नहीं होता। सदा दूसरों से प्रभावित होनेवाले होते हैं। इनमें धर्म की भावनायें होती हैं। ये सचाई को समझते हैं, परन्तु सत्य की तलाश नहीं कर पाते। ऐसे बच्चे पैदा हों तो माता पिता को चाहिये कि उसे व्यापार में न लगावें, वरना वह पागल हो जायेगा। पागलखानों में अधिकतर ऐसे ही लोग पाये जाते हैं। यह अधिक धार्मिक और उपदेशक हो सकते हैं। इस कारण उन्हें ऐसे ही कार्यों में लगाना चाहिये। Fame प्रसिद्धि और Fortune भाग्य इनसे दूर रहता है।

६. *दार्शनिक हाथ*—(Philosophic)—Philosophy दो शब्दों से बना है Philos जिसका अर्थ है प्रेम दुसरा Sophia जिसका अर्थ Wisdom यानी बुद्धिमत्ता दोनों Greek यूनानी शब्द हैं। दोनों शब्दों के योग से ही शब्द की योग्यता का बोध होता है। ऐसा हाथ आसानी से पहचाना जा सकता है। हाथ लम्बा, होता है कुछ कोण लिये होता है उंगलियों में हड्डी का बोध होता है। उँगलियों के जोड़ उभाड़ लिये होते हैं। नाखून लम्बे होते हैं। ऐसे हाथ रुपये पैसों के मामले में ठीक नहीं होते परन्तु ऐसे व्यक्ति बुद्धिमान अधिक होते हैं। ये मनुष्यता का खयाल करने वाले होते हैं रुपये पैसे से इन्हें मोह नहीं होता। अपने को दूसरोंसे उच्च समझनेवाले होते हैं। ऐसे लोग अधिकतर भारत में ही पाये जाते हैं वह भी,

ब्राह्मणों और योगियों का ऐसा हाथ होता है। शान्त स्वभाव, गंभीर और अधिक सोचनेवाले यह होते हैं। एक शक का भी व्यवहार करने में ऐसे लोग सावधान होते हैं। इनके साथ में अत्याचार हो तो यह भूल नहीं सकते, समय की प्रतीक्षा में



६.

रहते हैं और समय इनका साथ देता है।—इनके धैर्य्य का अन्त नहीं होता, तथा सत्य की खोज में अपने को लगाने वाले होते हैं। यदि उँगलियाँ चिकनी हों और हाथ दार्शनिक हो तो वह वस्तुओं का विश्लेषण करनेवाला होता है यदि उँगली कलाकार हो तो व्यक्ति को बरबाद कर देती है।

७. Conic *कलाकार हाथ*—कलाकार मध्यम श्रेणी (Medium Size) का होता है जो ऊपर की ओर पतला होता जाता है उँगलियाँ आधार की ओर



७.

भरी होती हैं नाखून वाले भाग पर थोड़ी नुकीली होती हैं। कलाकार हाथ का पहला गुण उसकी कल्पना और उसके भाव होते हैं। आराम पसन्द काम न

करना और विचारों के जल्दबाज होते हैं। धैर्य की कमी होती है इस कारण किसी भी कार्य को पूरा नहीं कर पाते। उनकी शिक्षा-दीक्षा कम भी हो तो, किसी विषय के झुकाव को शीघ्र पहचानने वाले होते हैं इसलिये बात करने में प्रवीण होते है उनकी दोस्ती और प्रेम में भी परिवर्तन हुआ करता है।

इन्हीं गुणों के आधार पर ये भ्रमणशील भी होते हैं। Quick tempered यानी इनकी मस्तिष्क-क्रिया शीघ्र बदला करती है। इस कारण किसी चीज को जल्द पसन्द और ना पसन्द करने वाले होते हैं। दयालु और दूसरों के प्रति उदार होते हुये भी जहाँ उनके आराम का प्रश्न होगा, वे मतलबी हो जाया करते हैं परन्तु रुपये से इनका प्रेम नहीं होता अपने भावों के कारण ये कलाकार होते हैं। सुन्दर रंग, गीत, सुन्दरता, ग़म, रंज सब का प्रभाव इन पर शीघ्र पड़ता है। यदि हाथ रबड़ की तरह हो तो इनमें कुछ दृढ़ता आती है, और अच्छे गुणों की वृद्धि होती है। यदि हाथ कड़ा हो तो कला में सफलता मिलती है। ऐक्टर या ऐक्ट्रेस जो भी होंवे अपने प्राकृतिक भावों से लोगों को हिला देने वाले होते हैं। कलाकार हाथ हो और उँगलियों का शिर। बर्गाकार हो तो प्रयत्नशील और सफल भी होते हैं। कलाकार हाथ और उँगलियों का शिरा चमसाकार हो तो ऐसे लोग अच्छे रंगसाज़ ह ते हैं। कलाकार हाथ और उँगलियाँ दार्शनिक हों तो उँगलियों के अनुरूप व्यक्ति के गुणों में परिवर्तन हो जायगा।

हथेली के तीन भाग

पहला—उँगलियों वाला भाग जो ऊपरी भाग कहा जाता है यह व्यक्ति दिमागी शक्ति तथा कार्य का परिचय देता है।

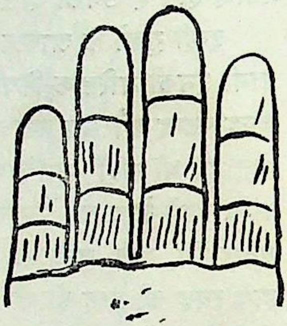
दूसरा—बीचवाला भाग वह है जो उँगलियों के आधार तथा चन्द्रमा और शुक्रपर्वत के शिरों के बीच का होता है यह व्यक्ति के धन दौलत सम्बन्धी सीमा को बताता है।

तीसरा भाग नीचे का हिस्सा होता है जो कलाई तक होता है इससे व्यक्ति के निम्न प्रकार की पसन्द जैसे नाच गाना इत्यादि का बोध कराता है।

हाथ में यदि उँगलियाँ अधिक प्रमुख प्रतीत हों तो व्यक्ति में दिमागी शक्ति अधिक होती है। यदि बीचवाला भाग प्रमुख दिखाई दे तो वह व्यापार और दैनिक जीवन सम्बन्धी कार्यों में कुशलता लाती है। यदि नीचेवाला भाग प्रमुख प्रतीत हो तो वह नाच, गान और आराम पसन्द करनेवाला होता है। उसका आचरण पशु जैसा होता है। इसी प्रकार एक भागका मिश्रण दूसरे भाग से करके व्यक्ति की कार्यक्षमता को समझना चाहिये।

उँगलियाँ

ऊपर जैसा वर्णन किया जा चुका है हथेली का बटवारा करने पर उँगलियाँ अलग हो जाती हैं उन पर गौर करना चाहिये कि वे छोटी हैं या लम्बी हैं, चिकनी हैं या गाँठदार। उनके शिरों को समझना चाहिये कि वे वर्गाकार, चमसाकार या नुकीली हैं। क्योंकि हथेली के गुणों में परिवर्तन होना विभिन्न प्रकार के उँगलियों पर निर्भर होता है और उँगलियों के गुणों में परिवर्तन होना उनके शिरों पर निर्भर होता है। इस प्रकार—



(८)

(१) जिसकी उँगलियों का अग्रभाग सूक्ष्म हो वह मेधावी होता है।

(२) जिसकी उँगलियाँ चिपटी हों उसका गुजर बसर नौकरी से होता है।

(३) जिसकी उँगलियाँ मोटी हों वह निर्धन होता है।

(४) छोटी उँगलियोंवाला विनयी होता है।

(५) जिसकी उँगलियाँ घनी हों वह धनी होता है।

(६) जिसके अँगूठे के मध्य में या मूल स्थान में ताम्रवर्ण यवरेखा हो वह व्यक्ति धनवान होता या राजसुख पाता है।

(७) अँगूठे के जड़स्थान में वेदी जैसी रेखा हो तो वह अग्निहोत्री होता है।

(८) जिसके हाथ की उँगलियाँ एक सीध में हों वह व्यक्ति भाग्यवान् होता है।

(९) जिसिकी उँगली ऊँचे स्थित होती है उस व्यक्ति में उस उँगली के ग्रह की प्रधानता होती है और उस ग्रह का प्रभाव विशेष होता है।

(१०) जिसकी उँगलियाँ कठोर हों वह कठोर हृदय, दृढ़प्रतिज्ञ और कौशली होता है।

(११) जिसके हाथ की उँगलियाँ अधिक लम्बी हों वह छिद्रान्वेषी, निष्ठुर और बिना कारण अत्याचार करनेवाला होता है।

(१२) यदि उँगलियाँ अधिक छोटी हों तो वह स्वार्थी, आलसी बुद्धिहीन और निष्ठुर होता है।

(१३) जिसकी उँगलियाँ हाथ की अपेक्षा कुछ छोटी हों वह बुद्धिमान् और सुविचारवाला होता है।

तर्जनी उँगली को मध्यमा के प्रथम पोर के आधे भाग तक होना चाहिये। इतना होने से कर्मठ जीवन होता है अधिक लम्बी होने से वह व्यक्ति अत्याचारी हो जाता है। यदि अधिक छोटी हो तो वह जिम्मेदारी के कार्यों के योग्य नहीं होता। टेढ़ी होने से व्यक्ति यशहीन होता है।

हाथ को भीतर की ओर मोड़ने पर मध्यमा उँगली को शुक्रपर्वत के आधार तक जाना चाहिये यदि वह साधारण है तो व्यक्ति ज्ञानवान् होता है। यदि बहुत बड़ी हो तो सदा असंतुष्ट रहनेवाला, अधिक छोटी हो तो चंचल मनवाला और वाचाल होता है। टेढ़ी हो तो व्यक्ति मूर्छारोग से पीड़ित रहनेवाला होता है। वह हत्याकारी भी होता है।

अनामिका को तर्जनी के ही बराबर होना चाहिये और इतनी लम्बी होने से व्यक्ति सौन्दर्य्य का उपासक तथा कलाकार होता है। अति बड़ी होने से व्यक्ति जुआड़ी होता है अधिक छोटी होने से सौन्दर्य्य और ज्ञानहीन होता है। टेढ़ी होने से कला और विद्या से हीन होता है।

कनिष्ठा को अनामिका के प्रथम संधि तक जाना चाहिये इस प्रकार वह साधारण लम्बी हो तो व्यक्ति भावुक, कवि, दयालु और उन्नति की इच्छावाला होता है। अत्यन्त बड़ी हो तो वह विचारों में मस्त रहनेवाला होता है। अधिक छोटी हो तो वह बिना भविष्य का विचार किये कार्य करनेवाला होता है टेढ़ी होने से धर्महीन और अन्याय करनेवाला होता है।

१. तर्जनी, मध्यमा से अधिक लम्बी हो तो वह जिद्दी और पागल होता है।

२. तर्जनी मध्यमा की अपेक्षा छोटी हो तो वह डरपोक और लजालु स्वभाव का होता है।

३. तर्जनी मध्यमा के बराबर हो तो वह क्षमताप्रिय और दिग्विजयी होता है। नैपोलियन की तर्जनी उँगली इस प्रकार थी।

४. तर्जनी अनामिका से अधिक लम्बी हो तो वह आशावादी होता है।

५. तर्जनो अनामिका के बराबर हो तो वह यशी और अर्थवादी होता है।

६. तर्जनी अनामिका से अधिक छोटी हो तो वह उच्च आकांक्षाहीन होता है।

७. मध्यमा तर्जनी से लम्बी हो तो व्यक्ति निर्बोध और अभिमानी होता है।

८. मध्यमा तर्जनी के बराबर हो तो वह उच्च आकांक्षावाला सौन्दर्यप्रिय और भावप्रवण होता है।

९. मध्यमा तर्जनी से छोटी हो तो वह पागल होता है।

१०. मध्यमा अनामिका से अत्यन्त बड़ी हो तो वह कला और साहित्य में उन्नति करनेवाला होता है। सत्यप्रिय तथा सदा दूसरों की भलाई का ध्यान रखता है।

११. मध्यमा अनामिका के बराबर हो तो वह जुआड़ी होता है।

१२. मध्यमा अनामिका से छोटी हो तो उस व्यक्ति का मस्तिष्क विकृत होता है।

१३. अनामिका मध्यमा से अधिक छोटी हो तो व्यक्ति में बुद्धि-दोष पैदा होता है जिससे व्यक्ति को अपने ही कार्यों से हानि होती है।

१४. अनामिका मध्यमा के बराबर हो तो व्यक्ति जुए का प्रेमी होता है।

१५. अनामिका मध्यमा से छोटी हो तो किसी जिम्मेदारी के काम में दुःख मिलता है।

१६. अनामिका और तर्जनी बराबर हों तो व्यक्ति यशी होता है।

१७. अनामिका तर्जनी से छोटी हो तो अत्तन्त आशावादी व्यक्ति होता है।

१८. अनामिका तर्जनी से अधिक बड़ी हो तो कलाकुशल और उच्च आकांक्षा से व्यक्तिहीन होता है।

१९. अनामिका कनिष्ठा के बराबर हो तो उदार और दूसरों की भलाई करनेवाला होता है।

२०. अनामिका कनिष्ठा से अधिक लम्बी हो तो शिल्पकला में पटुता प्राप्त होती है।

२१. कनिष्ठा और अनामिका बराबर हो तो व्यक्ति अच्छा भाषण देनेवाला और अपने भावों को भलीभाँति व्यक्त करनेवाला होता है।

२२. कनिष्ठा यदि तर्जनी के बराबर हो तो व्यक्ति विद्वान्, वैज्ञानिक या रसायनिक होता है।

अँगूठा

अँगूठा व्यक्ति के जीवन का हाल बताने में प्रथम होता है इसके द्वारा मनुष्य के काम करने का तरीका उसका स्वभाव इत्यादि जाना जाता है। जिप्सी लोग अँगूठे पर विशेष ध्यान देते हैं। भारत में भी अँगूठे को लोग श्रेष्ठ मानते हैं। इसकी दशा शक्ति, कोण तथा टेढ़ापन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। ईसाइयों के त्योहारों पर भी अँगूठा परमात्मा को प्रदर्शित करता है। पादरी सरदार की तरफ से जो आशीर्वाद दिया जाता है वह अँगूठे से या पहली और दूसरी उँगली से ही दिया जाता है।

यह भी देखा जाता है कि जब बच्चा पैदा होता है तो उसका अँगूठा उँगलियों से ढँका रहता है परन्तु ज्यों-ज्यों बच्चे में चेतनाशक्ति जाग्रत होने लगती है

अँगूठा बाहर की ओर हो जाता है। अँगूठे से तीन बड़ी शक्तियों का बोध होता है।

१. नाखून वाला पोर—इच्छा का स्थान होता है।

२. उसके नीचे अर्थात् मध्यभाग तर्क शक्ति का स्थान।

३. तीसरा पोर प्रेमका स्थान होता है।

(१) लम्बा सीधा और देखने में सुन्दर अँगूठे से आत्मबल तथा दूसरों पर प्रभाव डालने की शक्ति मिलती है।

(२) बहुत भरा हुआ पीछे की ओर झुका अँगूठा रहनेसे फिजूल-खर्ची तथा दान-दक्षिणा करने वाली प्रकृति होती है।

(३) चिकना पतला और पीछे की ओर मुड़ा हुआ अँगूठा होनेसे मिज़ाज़ पर अधिकार, शान्ति, सुदृढ़ राय देने वाला न्यायी तथा दूसरों से अत्यन्त मेल रखने वाली प्रकृति होती है।

(४) यदि अँगूठा अधिक नुकीला पीछे की ओर मुड़ा हुआ हो तो बहुत जल्दबाज़ तथा फिजूलखर्च आदत वाला होता है।

(५) पहली गाँठ पर यदि अँगूठा सख्त और सीधा है तो वह दूसरों के बह-कावे में जल्द आ जाने वाला व्यक्ति होता है व जिद्दी होता है परन्तु ऐसे व्क्ति विश्वासी होते हैं।

(६) यदि पहला पोर टेढ़ा हो जाय और भीतर की ओर मुड़ा हो तो वह तंग दिल, संकुचित हृदय वाला व कंजूस होता है तथा सक्की और अविश्वासी होता है।

(७) यदि पहला पोर छोटा और कमज़ोर हो तो मनुष्य बदल जाने वाले स्वभाव का, आगापीछा करने वाला होता है।

(८) मोटा और भद्दा अँगूठा जिसे Clubb d Thumb कहते हैं जिनके होता है वह बहुत तूफान मिज़ाज़ी तथा गुस्सेवाले होते हैं। थोड़े गुस्से से भी इनका चेहरा लाल हो जाता है और क्रोध में खून कर डालने वाले होते हैं।

(९) यदि अँगूठे का दूसरा पोर बड़ा हो तो व्यक्ति कदम-कदम पर उलझता रहेगा। यदि यह पहले पोर से बड़ा हो तो इच्छा शक्ति के कारण कुछ तय नहीं कर पाता इस कारण कार्य करने में अशक्त रहता है।

(१०) यदि पहला और दूसरा पोर बराबर हैं तो वह व्यक्ति अपनी इच्छी शक्ति से भरपूर होता है और उसके विचारों या तर्कों में भी समझदारी होती है। ऐसा व्यक्ति पक्का और आदरणीय होता है।

(११) यदि दूसरा पोर भद्दा और मोटा हो तो व्यक्ति अच्छे-अच्छे विचारों और उपायों को रखते हुये भी समस्याओं को सुलझाने की शक्ति न होने से सफल नहीं होता।

(१२) यदि दूसरा पोर सुन्दर और अँगूठे में कमर की तरह खाली जगह हो तो व्यक्ति में धोखेबाज़ होने की आदत होती है तथा कूटनीतिज्ञ प्रकृति का होता है।

(१३) अँगूठे के नीचे शुक्रपर्वत पर प्रेम का स्थान होता है यदि यह स्थान लम्बा व साफ हो तो व्यक्ति पवित्र विचारों वाला प्रेमी, आत्मचिन्तन करने वाला होता है।

(१४) यदि यह स्थान भद्दा और छोटा हो तो वह प्रेम में भी भद्दापन लाता है और किसी से भी बदलाकी इच्छा से ही प्रेम करता है। यदि शुक्रपर्वत पर बहुत सी रेखायें हों तो यह बात और पुष्ट हो जाती है।

(१५) अँगूठा यदि पहली अँगुली से नाप में बड़ा हो तो जितना अधिक बड़ा होगा उतनी अधिक बुद्धि की विशेषता व्यक्त होती है।

(१६) यदि कनिष्ठा उँगली लम्बी हो और अँगूठे का पहला पोर उभड़ा हुआ हो तो व्यक्ति राजनीतिक जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

नाखून

(१) नाखूनों में चन्द्रमा का होना आवश्यक होता है। यह चन्द्रमा नाखूनों के जड़ में अर्ध चन्द्राकार सफेद-सफेद दिखाई देता है इसके न होने से हृदय की कमज़ोरी का बोध होता है।

(२) बहुत बड़ा चन्द्रमा होने से रुधिर का प्रवाह तेज होता है। उसे उत्तेजना के कार्य नहीं करने चाहिये। ऐसे लोगों को प्रायः मूर्छा, पक्षाघात, अर्धाङ्ग इत्यादि रोग होते हैं।

(३) जिसका नाखून लम्बा होता है उन्हें शरीर के ऊपरी भाग वाले अंग की बिमारी पैदा होती है जैसे गला सूजना, खाँसी, जुकाम, निमोनियाँ या फेफड़ों की बिमारी इत्यादि।

(४) जिनका नाखून छोटा होता है उन्हें हृदयरोग होता है वह बहुत बहस करने वाले होते हैं।

(५) पतले चपटे अधिक छोटे नाखून जिसमें चन्द्र न हों, जिसमें गड़े से मालूम हों तो सुनबहरी, लकवा इत्यादि का भय होता है।

(६) यदि कौड़ी या सीपो के आकार के नाखून हों तो यह ज्यादा भयदायक होते हैं।

(७) नीले रंगके नाखून और भी अधिक भयंकर रोग पैदा करते हैं।

(८) लम्बे और संकरे नाखून कमर के कमजोर होने का लक्षण है अधिक लम्बा मुड़ा हुआ हो तो रीढ़ सम्बन्धी रोग होता है।

(९) नाखूनों पर सफेद दाग स्नावयिक दुर्बलता बताता है।

(१०) लम्बे नाखून वाले कोमल स्वभाव के होते हैं वे सभ्य होते हैं तथा किसी चीज को जल्द समझ लेते हैं परन्तु कभी कभी बहमी होते हैं।

(११) लम्बे मुड़े हुये पीले नाखून निर्दयी लोगों के होते हैं। चिड़िया मारने वाले या मछली पकड़ने वाले शिकारियों का ऐसा नाखून होता है।

(१२) छोटे नाखून वाले तर्क वितर्क करनेवाले बिना जाँच पड़ताल के किसी बात पर विश्वास न करनेवाले होते हैं।

(१३) नाखून यदि लम्बाई की अपेक्षा चौड़ाई में अधिक हो तो ऐसे चिन्ह वाले दूसरों की खिल्ली हंसी उड़ाने वाले होते हैं।

नाखूनों के दाग

	सफेद दाग।	काले दाग
अँगूठा	प्रेम	गलत कार्य
पहली उँगली	लाभ	नुकसान
दूसरी	सफ़र	मौतका भय
तीसरी	सन्मान्	अपमान
चौथी	व्यापारमें लाभ	व्यापार में हानि

हथेली

१. लम्बी हथेली वाले नियमित क्रियाशील (Regular active) होते हैं।

२. छोटे हाथ वालों में काम की कमी, सोचना अधिक होता है।

३. छोटे हाथ वालों के अक्षर बड़े होते हैं।

४ हथेली और उँगलियों की लम्बाई समान हो तो अच्छा है।

५. चौड़ी हथेली वाले भले ही गरीब हों परन्तु उदार होते हैं।

६ पतली सूखी सी कठोर हथेली बिना उत्साह वालों की होती है ऐसे व्यक्ति डरपोक व निर्धन होते हैं।

७. लम्बी और मुलायम हथेली से मनुष्य आरामपसन्द होता है।

८. हथेली भारी मुलायम बेढंगे आकार की हो तो व्यक्ति विषय-भोगों वाला व कामी होता है।

६. हथेली में गहराई का होना दुर्भाग्य होता है।

१०. यदि हथेली में गहराई का ढाल जीवन रेखा की ओर हो तो घरेलू सम्बन्धी कामों में निराशा होती है। यदि कहीं हाथ में किसी रोग का भी लक्षण प्रतीत हो तो वह रोग भयानक होता है।

११. हथेली में गहराई यदि हृदयरेखा के नीचे मालूम पड़े तो इष्टमित्रों से निराशा मिलती है।

१२ हथेली की गहराई यदि भाग्यरेखा के नीचे हो तो व्यापार या रुपये पैसों के मामले में बुरा होता है।

हथेली के पर्वत

पूरी हथेली की दशा पर विचार करने के पश्चात् हाथ का बँटवारा करना चाहिये इस प्रकार के बँटवारेको ग्रह, पर्वत या (Mounts) कहते हैं जो निम्नप्रकार से आठ हैं।

१ शुक्रपर्वत—अगूठे के आधार में जो उभाड़ है और जो जीवन रेखा से घिरा हुआ प्रतीत होता है उसे शुक्र पर्वत कहते हैं। यदि यह स्थान अधिक बड़ा न हो तो अच्छा होता है। यह पर्वत हाथ की एक प्रमुख नली को ढकता है इसलिये यदि यह अच्छे उभाड़ में हो तो व्यक्ति का स्वास्थ सुन्दर व जोशीला होता है। पर्वत छोटा हो तो जोश की कमी और स्वास्थ भी ठीक नहीं रहेगा। बहुत बड़ा पर्वत हो जाने से व्यक्ति में जोश की अधिकता हो जाती है जिससे वह अपने विपरीत पक्षीय apposite sex वाले की ओर झुकता है स्त्री हो तो पुरुष की ओर पुरुष हो तो स्त्री की ओर झुकाव की अधिकता होती है। शुक्रपर्वत दूसरों में प्रेम, उदारता इत्यादि का बोध कराता है।



(६)

इससे दूसरों को प्रसन्न करने की इच्छा, प्रेम, सुन्दरता, नाच गीत इत्यादि का बोध होता है।

१. शुक्रस्थान उज्वल, लाल, पुष्ट और उठा हुआ हो तो व्यक्ति, दयालु सौन्दर्य व नृत्य, गीत प्रिय, उच्चाकांक्षी, ज्ञानी, चिकित्सक व कानून का पण्डित होता है।

२. अधिक ऊँचा होने से व्यक्ति विद्वान् होते हुये भी व्यभिचारी निर्लज्ज और अभिमानी हुआ करता है।

३. शुक्रस्थान नीचा और अपुष्ट रहने से व्यक्ति निराशप्रणयी व उग्र प्रकृति का होता है तथा वह स्वार्थी और वीर्य सम्बन्धी रोग से पीड़ित होता है।

४. यदि शुक्रस्थान रक्ताभ हो और उस पर कई छेद से प्रतीत हों तो व्यक्ति कामुक होता है और अभिनय, नृत्यगीत इत्यादि आनन्दजनक-कार्य का चाहने वाला होगा।

५. अँगूठे की प्रथम संधि के निकट शुक्रस्थान के ऊपर एक क्रास का चिह्न रहने से व्यक्ति अधर्माचारी, दुश्चरित्र और लम्पट होता है।

६. यदि दो तीन क्रास चिह्न अँगूठे की दूसरी संधि के समीप हों तो व्यक्ति विद्या विनयादि गुण-सम्पन्न, कर्तव्य-परायण व ईश्वर-भक्त होता है।

७. किसी स्त्री के हाथ में शुक्र के उच्चस्थान के निकट अँगूठे की प्रथम संधि के ऊपर दो या तीन क्रास-चिह्न रहने से वह कलहप्रिय, अविश्वासिनी, पर निन्दक व राजद्रोहिणी होती है।

८. स्त्री के हाथ में शुक्र के उच्च स्थान के बीच में वृत्तका चिह्न हो तो वह वेश्या होती है। अनेकों पुरुषों के सहवास होने के बाद भी वह सदा अतृप्त ही रहती है।

२. *वृहस्पति पर्वत*—पहली उँगली के नीचे उभड़े हुये भाग को वृहस्पति स्थान कहते हैं। उभाड़ पर रहने से व्यक्ति में, उत्साह गर्व, आकांक्षा और शक्ति की इच्छा होती है। गुरुग्रह सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं।

१. वृहस्पति स्थान उच्च होने से व्यक्ति उच्चभिलाषी स्वाधीनचेता सत्यवादी, दशाकांक्षी, आदर्शवादी, धार्मिक, ज्ञानी और सच्चरित्र होता है।

२. वृहस्पति स्थान अधिक ऊँचा होने से व्यक्ति स्वार्थी, दांमिक स्वेच्छाचारी अतिकामी और आमोदप्रिय होता है।

३. वृहस्पति स्थान अनुच्च होने से व्यक्ति आरब्ध, कार्य संपादन में अक्षम, अल्पबुद्धि, हीनशक्ति तथा उसकी चिन्तनायें निरर्थक होती हैं।

४. वृहंस्पति स्थान पर एक या दो क्रास का चिह्न रहने से वह व्यक्ति धर्म के विषय में उच्च-सम्मान व उच्च-पद पाता है।

५. यदि वृहस्पति स्थान पर एक चौकोर, वर्ग का निशान रहे तो यह वर्ग सभी आपदाओं से व्यक्ति की रक्षा करता है तथा यदि उसके भीतर से एक दूसरी रेखा चली जाय तो वह निष्कलंक जीवन, सतत् सुख और आनन्द, सम्मान और पूरी आयु तक सौभाग्य प्राप्त करता रहता है।

६. भोगरेखा से उठकर एक रेखा वृहस्पति के उच्च स्थान को काट दे तो उस व्यक्ति की एकाएक मृत्यु होती है।

७. वृहस्पति का स्थान (रवि) के समान उँचा होने से व्यक्ति यशस्वी और भाग्यवान् होता है।

८. वृहस्पति स्थान यदि बुद्ध के समान ऊँचा हो तो वह व्यक्ति विद्वान् उच्चाभिलाषी, विश्वासी, वैज्ञानिक, कवि, उदार और प्रेमिक होता है।

९. वृहस्पति स्थान मंगल के समान ऊँचा होने से व्यक्ति दूसरे पर प्रभुत्व का अभिलाषी, साहसी और योद्धा हुआ करता है।

१०. वृहस्पति स्थान चन्द्र के समान ऊँचा हो तो व्यक्ति साहित्यिक, सुकवि और भावुक होता है।

११. वृहस्पति स्थान शुक्र के तह से ऊँचा होने से व्यक्ति उदार, स्नेही, ज्ञानी, समदर्शी, न्यायनिष्ठ और आमोदप्रिय होता है।

१२. वृहस्पति स्थान शनि के समान उच्च हो तो व्यक्ति अदृष्टवादी, धैर्यवान् व भाग्यवान् होता है।

१३. वृहस्पति स्थान राहु के समान उच्च होने से व्यक्ति अदृष्टवादी, स्थिर लक्ष्य और कार्य में आलसी होता है।

१४. वृहस्पति स्थान अपुष्ट अनुच्च होने से व्यक्ति को वातश्लेष्म, क्षय रोग, अनिद्रा और चर्मरोगादि अनेक व्याधियाँ भुगतनी पड़ती हैं।

१५. शनिपर्वत—दूसरी उँगली के नीचे उभड़े हुये स्थान को शनिपर्वत कहते हैं। यह शान्त, बुद्धिमान किसी काम में दत्तचित्त होने की शक्ति, गम्भीर विद्याओं का अध्ययन, पवित्र गीतों से प्रेम होने की संज्ञा देता है।

(१) शनिक्षेत्र उच्च और पुष्ट होने से व्यक्ति चिन्ताशील, प्रभुत्वकामी, कार्यक्षम, इच्छाशक्ति वाला, निर्जन प्रिय अति-संयमी चिकित्सक व ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता रासायनिक व गुप्त विद्या में पारदर्शी होता है।

(२) शनिस्थान अधिक उच्च होने से व्यक्ति रूखे-स्वभाव वाला निःसंग रहने वाला व खामखयाली होता है।

(३) शनिस्थान अनुच्च होने से व्यक्ति संदिग्धमति, आत्महत्या का अभिलाषी नीच अन्तःकरण वाला, लोभी, मिथ्यावादी, भीरु और अभागा होता है। भोग रेखा तथा दूसरी रेखायें बलवान हों तो इन दोषों में कमी हो जाती है।

(४) शनि के उच्च स्थान पर अनेक रेखायें होने से व्यक्ति भिक्षुवृत्ति डरपोकपन और धोखेबाज़ी में जेल जाता है।

(५) शनि का उच्च स्थान यदि बुद्ध के समान उँचा हो तो वह गुप्तविद्या, विज्ञान और चिकित्साविद्या में पण्डित होता है और नीचा होने से धोखेबाज़ होता है।

(६) शनि स्थान रवि के समान उँचा हो तो व्यक्ति हमेशा दुखी रहता है व नीचा रहने से दुर्बलता प्राप्ति होती है।

(७) मणिबन्ध अथवा मंगल के क्षेत्र से एक प्रत्यक्ष रेखा शनि के उच्चस्थान के बीच से जाकर मध्यमा उँगली के किसी एक संधि के बीच समाप्त हो तो किसी प्रकार का शारीरिक और मानसिक दुःख अथवा जेल जाने का निर्देश मिलता है।

(४) *सूर्य या रविपर्वत*—यह तीसरा उँगली के नीचे का उभड़ा हुआ स्थान होता है। यदि उभाड़ पर हो तो जितनी सुन्दर चीजें हैं उनके प्रति यह उत्साह पैदा करता है व्यक्ति चाहे स्वयं कलाकार न हो परन्तु वह कला प्रेमी अवश्य होता है। इससे रंगसाजी, कविता, साहित्य तथा जितने भी सोचकर लिखने के काम हैं उनके प्रति श्रद्धा पैदा होती है। उसका मस्तिष्क और विचार सुन्दर होता है।

(१) रवि का क्षेत्र उँचा होने से व्यक्ति संगीत, शिल्प, साहित्य और कलाविद्या में पादर्शी, सौन्दर्य्य प्रिय, दयालु, आत्मविश्वासी, उदार, भावुक, भाग्यवान् धैर्य्यशील, सम्मानभाजन, तीक्ष्ण बुद्धियुक्त, अकपट, वाग्मी और धनशाली होता है।

(२) रविक्षेत्र अनुच्च होने से ऊपर लिखे हुये गुणों के विपरीत फल होता है।

(३) रविस्थान अत्यधिक उच्च होने से व्यक्ति दांभिक, अविवेचक आमोदप्रिय, चंचल, खयाली, कृपण, वाचाल और पितृधन का नाश करने वाला होता है।

(४) यदि विना कटी हुई कई छोटी छोटी रेखायें सूर्य्य उँगली की प्रथम संधि से निकल कर भोगरेखा की ओर फैलें तो वे रेखायें एक जनसत्ता और अनेक सूक्ष्मबुद्धि-सम्पन्न, अनेक प्रकार की विज्ञानशिक्षा में समर्पित चित्र की निर्देशकारी होती हैं। यदि वे रेखयें टेढ़ी और खण्डित हों तो ऊपर के गुणों का विपरीत फल होता है और अपयश के साथ दरिद्रता आती है।

(५) भोगरेखा से उठी हुई केवल एक रेखा अनामिका के संधि की ओर गमन करे तो ऐश्वर्य की प्रप्ति कराती है। यह रेखा जिस उँगली की जिस संधि में जाकर समाप्त होगी उसी संधि के निर्दिष्ट मास में उस ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। इसकी प्रथम संधि कन्या राशि का स्थान है अतः अश्विन मास में द्वितीय संधि में सामाप्त होने पर सिंह राशि में अर्थात् भाद्रमास में तथा तृतीय संधि में समाप्त होने से कर्क यानी श्रावण मास में सम्पत्ति प्राप्त होगी।

(६) यदि किसी व्यक्ति की अनामिका (तीसरी) उँगली के प्रथम और द्वितीय संधि के वीच कई सरल और समान लम्बी निर्दिष्ट रेखा रहे तो वह व्यक्ति वाणिज्य, परिश्रम और गो-भैंसे आदि पशुपालन और वर्धन द्वारा अपने धन की वृद्धि करता है।

(७) *बुद्धपर्वत*—चौथी उँगली यानी कनिष्ठा के मूल में जो फूला हुआ स्थान होता है वह बुधपर्वत कहा जाता है। इससे परिवर्तनों का होना, रद्दोवदल चाहने वाला, सफर, विचार शीघ्रता इत्यादि का प्रकटन होता है। यदि यह पर्वत और पर्वतों की अपेक्षा अधिक उभाड़ पर हो और हाथ की अन्य दशायें भी ठीक हों तो सुन्दर होता है, यदि उच्च हो परन्तु अन्य विचार से हथेली खराब हो तो अभाग्य की प्राप्ति होती है।

(१) बुध का क्षेत्र ऊँचा होने से व्यक्ति प्रतिभावान् कानून का व्यवसायी तीक्ष्णबुद्धि-शाली, अदृष्टवादी, वैज्ञानिक, ज्योतिर्विद, वाग्मी, मानव-चरित्र का ज्ञाता, दूसरेके चरित्र का अनुमान करने में पण्डित, धीशक्ति-सम्पन्न और शिल्पी होता है।

(२) बुध का स्थान अति उच्च होने से व्यक्ति निर्वोध, विश्वासधातक, अभिमानी, हताशप्रेमी, खयाली और विद्या लाभ में व्याघात प्राप्त करता है।

(३) बुध का स्थान समानांश, उच्चतायुक्त और उत्तम वर्ण-विशिष्ट होने से व्यक्ति स्थिर-प्रज्ञ, मनसा, वाचा, कर्मणा से चरित्रता का रक्षक, विज्ञान में प्रीति रखने वाला और महत्ता प्राप्त किया करता है।

(४) बुध के उच्चस्थान का अर्द्धांश अवांछित, असम, और रेखा समूह से पूर्ण रहने से व्यक्ति विद्वान्, दृढ़चित्त, विश्वासी, सत्य-परायण और सौभाग्यशाली होता है।

(५) बुधस्थान नीचा रहने से व्यक्ति बुद्धिहीन, प्रिय परिजनों से मनोमालिन्य रखने वाला और प्रबंचक होता है।

६. बुध स्थान शुक्र के समान होने से व्यक्ति विलक्षण ज्ञान वाला, जनप्रिय, आत्मविश्वासी, प्रखर मानसिक शक्ति-सम्पन्न और पुत्र पौत्रादि से सुख प्राप्त करता है।

६. *मंगलपर्वत*—बुध के नीचे और अँगूठे के विपरीत दिशा में हथेली में होता है। इस से साहस, आत्मरक्षण में पटुता और नैतिकता इत्यादि व्यक्ति में आती है यदि यह स्थान दोषयुक्त हो जायें तो व्यक्तियों में अत्याचार और दुर्गुण पैदा होते हैं।

१. मंगलक्षेत्र समभाव उच्च हो तो व्यक्ति साहसी, प्रभुत्वाकांक्षी रणनिपुण और नैतिक बलशाली होता है।

२. मंगलक्षेत्र नीचा रहने से व्यक्ति अत्याचारी, घातक, हत्याकारी विप्लवी और राजद्रोही होता है।

३. यदि किसी की भाग्यरेखा मंगलक्षेत्र में जाय तो व्यक्ति को बन्दीत्व, कारावास और दासत्व मिलता है।

४. यदि किसी के मंगल क्षेत्र के अन्दर पितृरेखा को भग्न करने वाली रेखा स्पष्ट, समान और अदीर्घ हो तो वह युद्ध-कार्य में अति सौभाग्यशाली और सम्मानित पद प्राप्त करेगा। यह चिह्न वीरत्व का निर्देशक होता है।

५. यदि मंगलक्षेत्र के मध्य स्थित त्रिकोण के बीच अन्य कई छोटे छोटे त्रिकोण में हों और वे कलाई की ओर अग्रसर हों तो वे द्वन्द्व युद्ध में पराजित होकर लज्जा प्राप्ति तथा प्राणनाश के ज्ञापक होंगे। ये छोटे त्रिकोण मातृरेखा और यकृत रेखा की ओर अग्रसर हों तो युद्ध में विजय और गौरव के ज्ञापक होते हैं।

६. किसी व्यक्ति के मंगलक्षेत्र के बीच पितृरेखा को भग्न करने वाली रेखा क्षुद्र हो तो युद्ध में दुर्भाग्यकारी होती है। उस व्यक्ति की आत्मश्लाघा, आलसता, कपटता, लज्जाहीनता, संदिग्ध चित्तता, दांभिकता, धैर्यहीनता तथा अत्यधिक धनलोलुपता आदि दोष बताने वाली होती है।

७. यदि किसी व्यक्ति का मंगल क्षेत्र अवनत और उसके बीच की रेखायें आपस में असमान व्यवधान रखने वाली तथा टेढ़ी हों तो युद्ध में उसकी मृत्यु अथवा मस्तक में भयानक आघात प्राप्ति या पहाड़ इत्यादि ऊँचे स्थान से गिरने से हड्डियाँ टूटेगी।

७. *चन्द्रपर्वतः*—मंगल पर्वत के नीचे और शुक्र पर्वत के विपरीत दिशा में हथेली में होता है। चन्द्र स्थान पुष्ट होने से व्यक्ति में भावुकता, कल्पना, प्रकृति

सौन्दर्यप्रेम तथा व्यक्ति अत्यन्त चिन्ताशील होता है। हाथ की दशा ठीक होने से कवित्वशक्ति भी होती है।

१. चन्द्रक्षेत्र उच्च होने से व्यक्ति स्मृति शक्ति सम्पन्न, भावुक, कल्पनाकारी सुलेखक, प्रेमिक, संगीतज्ञ, उत्साही, प्राकृतिक सौन्दर्यप्रिय, तैराक व भ्रमण करने वाला होता है।

२. चन्द्रक्षेत्र अत्यन्त उच्च होने से व्यक्ति अति कल्पना प्रवण, आविष्कारक और चिन्ताशील होता है।

३. चन्द्रक्षेत्र अत्यन्त नीचा होने से व्यक्ति अस्थिरचित्त, आलसी, एकान्त, रूखे स्वभाव वाला होता है।

४. चन्द्रक्षेत्र मंगल के समान ऊँचा होने से व्यक्ति अति धीरज के साथ अपने कार्यों को निपटाता है।

५. किसी व्यक्ति के हाथ की कई पीली रेखायें चन्द्रस्थान के बीच नत होकर और श्यामवर्ण हो जाने पर ये रेखायें उच्च व्यक्ति को जल थल दोनों राहों से भ्रमण, व्यवसाय विषय की आलोचना में और राजनीतिक कार्य-समूह में दुर्भाग्य की ज्ञापक होती है।

६. चन्द्रक्षेत्र के ऊपर गोल रेखा रहने से वह व्यक्ति की एक आँख की क्षति अथवा पक्षाघात, मूर्छा आदि रोग की सूचना देती है।

८. राहुपर्वत—राहु क्षेत्र को कुछ लोग दूसरा मंगलपर्वत मानते हैं यह पर्वत वृहस्पतिक्षेत्र के नीचे और शुक्रपर्वत के ऊपर को होता है परन्तु सदा जीवन रेखा के भीतर ही होता है।

यदि यह उमड़ा हुआ हो तो व्यक्ति साहसी चतुर और स्वाधीनचेता होता है। वहुत बड़ा राहुपर्वत हो जाने से व्यक्ति बहुत झगड़ा हो जाता है। तथा उसकी पैतृक सम्पत्ति का नाश होता है।

१. राहुक्षेत्र समभाव उच्च होने से व्यक्ति सुचतुर, कलह आदि से विरत दैहिक अपेक्षा नैतिक बलशाली, मलेच्छ और नीच संसर्गकारी, उत्तराधिकार सूत्र से पैतृक धन का अधिकारी, आश्रित-प्रतिपालक, दृढ़चेता तथा तार्किक होता है।

२. राहुक्षेत्र निम्न होने से व्यक्ति कलहप्रिय, महा चंचल-चित्त पैत्रिक सम्पत्ति का नाशक, लोकहित-कार्य में अड़ंगा डालनेवाला बलहीन और कापुरुष होता है।

ग्रह स्थान परिवर्तन

यदि कोई पर्वत किसी दूसरे पर्वत की ओर झुका हो तो दोनों का गुण एक दूसरे से मिल जाता है। और वे ही दोनों मिलकर अपनी दशा के अनुसार बढ़ते हैं। जैसे यदि शनि–बृहस्पति की ओर झुके तो शनि अपनी गम्भीरता बृहस्पति को दे देता है इसी प्रकार वह अपनी बुद्धिमानी, शोक और धार्मिक विचार भी बृहस्पति में पैदा करता है इसी प्रकार यदि शनि सूर्य्य की ओर झुके तो व्यक्ति के कलाकारी विचारों में गम्भीर विचारधारा, उदासी इत्यादि मिल जायगी। यदि सूर्य का झुकाव बुध की ओर हो जाय तो व्यक्ति के व्यापार या विज्ञान में कला का मिश्रण होगा।



(१०)

ग्रहचिह्नों के अपने अपने स्थान में अवस्थित रहने से अपने अपने गुण के अनुसार फल की वृद्धि करते हैं। ग्रहचिह्न अपने स्थान के अतिरिक्त दूसरे ग्रह के स्थान में हो जाया करते हैं, जैसे बुध का चिह्न रवि या बृहस्पति के स्थान में या चन्द्र का चिह्न बृहस्पति स्थान में। इस प्रकार चन्द्रमा का चिह्न बृहस्पति स्थान में हो तो व्यक्ति की आध्यात्मिक-शक्ति विशेष रूप से बढ़ती है। बुध का चिह्न बृहस्पति स्थान में हो तो व्यक्ति वाक्यचातुर्य्य से प्रशंसनीय होता है और निर्विघ्न अपने कार्यों को पूरा करने में क्षम्य होता है। बुध का चिह्न रवि के स्थान में रहने से व्यक्ति विज्ञानशास्त्र की आलोचना में सुख्याति प्राप्त करता है।

ग्रह प्रभाव— १. शुक्र और चन्द्रमा शरीर के नीचेवाले भाग के स्वामी होते हैं।

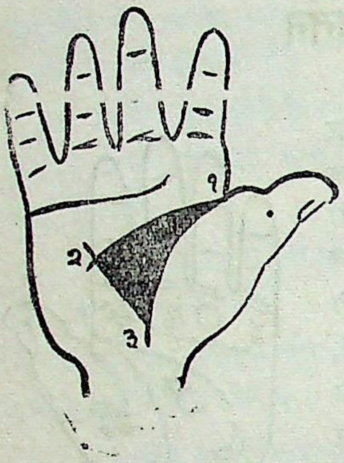
२. बृहस्पति, फेफड़ों और मस्तिष्क का स्वामी होता है।

३. मंगल, शिर और गले का स्वामी है।

४. सूर्य, हृदय, आँख और भुजाओं पर शासन करता है।

५. बुध, कलेजा और शरीर के नीचे भाग पर अधिकार रखता है।

इस प्रकार जो ग्रह जिस अंग का स्वामी होगा मनुष्य की बीमारियाँ उसी ग्रह सम्बन्धित होंगी।



(११)

हथेली में त्रिभुजक्षेत्र--पितृ, मातृ, और स्वास्थ्य इन तीन रेखाओं से बना हुआ एक विशेष त्रिकोण करतल में किसी किसी के हाथ में प्रत्यक्ष और स्पष्ट होता है।

१. मातृरेखा और स्वास्थ्य रेखा के संयोग स्थान को मध्य-कोण कहते हैं यह कोण सुस्पष्ट होने से व्यक्ति, कोमल हृदय उदार, तीक्ष्ण-बुद्धि और दीर्घजीवी होता है किन्तु यही कोण यदि अस्पष्ट हो तो वह जातक की चित्त दुर्बलता और भग्न स्वास्थ्य का परिचायक होता है।

२. पितृरेखा और स्वास्थ्यरेखा के कोण को निम्नकोण कहते हैं। यह कोण सुस्पष्ट, प्रसारित होने से व्यक्ति दीर्घायु, बुद्धिमान, उदार दानशील और स्वास्थ्यवान होता है किन्तु इसी त्रिकोण के प्रशस्त न होने से जातक स्नायुवीय दुर्बलता से मृतप्राय दृष्टिगत होता है।

३. पितृरेखा और मातृरेखा के संयोग-स्थान को उच्चकोण कहते हैं इस कोण के सुस्पष्ट होने से व्यक्ति विद्वान् बुद्धिमान, सुवक्ता जनप्रिय और अटूट स्वास्थ्यवान होता है।

४. यदि त्रिकोण की तीनों दिशायें सुस्पष्ट और अभग्न हों तो व्यक्ति दीर्घजीवी, निडर और सौभाग्यशाली होता है।

५. त्रिभुज के बीच अर्धचन्द्र-चिह्न होने से व्यक्ति अव्यवस्थित-चित्त, निष्ठुर और कलहप्रिय होता है। अर्धचन्द्र-चिह्न मातृरेखा के ऊपर होने से व्यक्ति अविवेचना प्रयुक्त आत्महत्या करता है। अर्धचन्द्र-चिह्न स्वास्थ्यरेखा के ऊपर हो तो क्षमताशाली और निरोग होता है।

चतुर्भुज क्षेत्र--करतल में, भोग और मातृरेखाओं के बीच में स्थित चौकोर स्थान को हथेली का चतुष्कोण कहते हैं। इस चौकोर से व्यक्ति की रक्षा होती है।

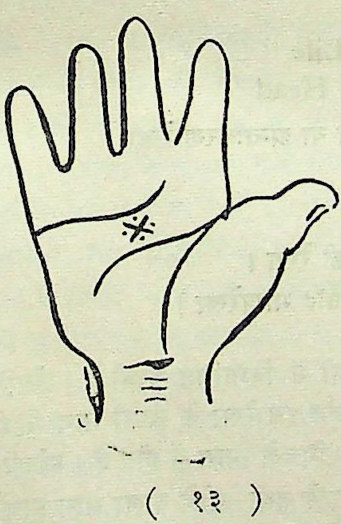
जिन सब क्षेत्रों, चिह्नों या अन्य रेखाओं द्वारा व्यक्ति को यदि किसी कारण वश अशुभ की सूचना मिलती है, उन्हीं सब स्थानों में यदि चतुष्कोण हो तो व्यक्ति उन अशुभ सूचनाओं से मुक्ति पाता है।



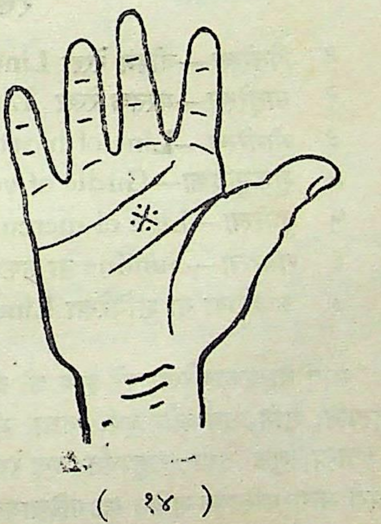
(१२)

हथेली के मध्य का यह चतुष्कोण चिन्ह व्यक्ति के रथ, हाथी, घोड़ा, यान वाहनादि के उपयोग या ज़लाशय इत्यादि खुदवाने जैसे लोकहित कार्य्य में रत रहने का विज्ञापन करता है। इसके सुस्पष्ट सुगठित और अभग्न होने से व्यक्ति धीरमति, आत्मविश्वासी, उदार, सुविचार, साहसी और कर्तव्यपरायण होता है तथा उसके अस्पष्ट तथा छिन्न-भिन्न होने से व्यक्ति आडम्बरपूर्ण, अस्थिर-चित्त और भीरु स्वभाव का होता है। यह चतुष्कोण यदि समभाव में थोड़ा अर्थात् चतुष्कोण की कोई भुजा यदि किसी ओर अवनत या दीर्घ नहीं है तो व्यक्ति को शुभ फल की प्राप्ति होती है।

यदि यह चतुष्कोण शनिक्षेत्र के नीचे अधिक चौड़ा हो तो व्यक्ति अपनी निजी ख्याति, प्रतिपत्ति के प्रति दृष्टि नहीं रखता और यदि वह रविक्षेत्र के

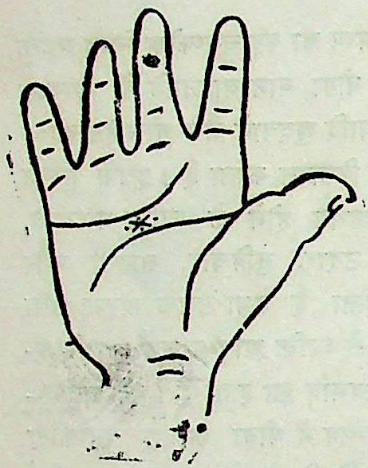


(१३)



(१४)

नीचे अधिक चौड़ा हो तो व्यक्ति निजी ख्याति पाने के प्रति विशेष ध्यान रखने वाला होता है और लोकनिन्दाओं से विशेष रूप से डरने वाला होता है।



(१५)

यदि भोगरेखा मातृरेखा की ओर अथवा मातृरेखा भोगरेखा की ओर धनुषाकार में अवनत होकर चतुर्भुजक्षेत्र को संकीर्ण कर दें तो व्यक्ति अविवेचक, ख्याली, निष्ठुर और नीच अन्तःकरण का होता है ।

प्रधान रेखायें सात प्रकार की होती हैं

रेखायें

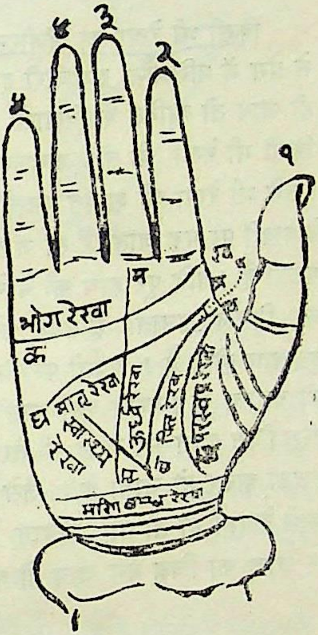
१ *पितृरेखा*—जीवन रेखा Line of Life
२ *मातृरेखा*—मस्तक रेखा Line of Head
३ *भोगरेखा*—**Line of heart** हृदय या अन्तःकरण रेखा ।
४ *शुक्रमुद्रिका*—**Girdle of venus**
५ *बुधरेखा*—**Line of mercury**
६ *रविरेखा*—**Sunline** या सफलता की रेखा ।
७ ऊर्ध्वरेखा या शनिरेखा **Line of fate** भाग्यरेखा ।

मातृ या मस्तकरेखा पूरे हाथ को दो भागों में विभाजित करती है । उँगलियाँ वृहस्पति, शनि, सूर्य और बुध, तथा मंगलपर्वत इस रेखा के ऊपरी भाग में होता है । चन्द्र, शुक्र तथा राहुपर्वत इस रेखा के निचले भाग में होते हैं । हथेली का ऊपरी भाग मस्तिष्क-शक्ति का परिचायक होता है तथा नीचे वाला भाग हाथ का आधार होता है । जो निम्नप्रकार की शक्तियों का बोध कराता है ।

इस प्रकार हाथ के बँटवारे को समझ लेने के पश्चात् किसी व्यक्ति के आचरण को समझना बहुत आसान हो जाता है । जैसे यदि मस्तकरेखा विषम रूप से ऊपर या नीचे किसी तरफ झुक जाय तो यह किसी दोष विशेष की सूचना

देती है। रेखाओं को साफ, सुन्दर होना चाहिये न तो चौड़ी और न पीले रंग की होनी चाहिये उनमें कोई तोड़द्वीप तथा और खराबियाँ नहीं होनी चाहिये।

रेखायें यदि पीले रंग की हों तो यह अच्छे स्वास्थ्य की कमी, शक्ति की क्षीणता तथा किसी काम को न कर पाने की दशा की प्रतीक होती हैं।



(१६)

लालरेखाओं से आशापूर्ण हालत तथा चुस्त चालाक, दिमागी-शक्ति का भास होता है, पीली रेखाओं से व्यक्ति के लीवर सम्बन्धी दोष, घमन्ड और सीमित तथा संकुचित रहने का स्वभाव प्रकट होता है।

काली रेखाओं से दुःख, संजीदगी तथा बदला लेनेवाली प्रवृत्ति व्यक्ति में होती है जो क्षमा करना नहीं जानता। रेखायें मुरझाई हुई सी या कमी लिये हुये भी होती हैं, इससे आनेवाले खतरों का बोध होता है। किसी अकेले निशान से कुछ निष्कर्ष नहीं निकलता बल्कि दोनों हाथों को देखना चाहियें। यदि दोनों हाथों के लक्षण एक से हैं तो निश्चय ही प्रकट लक्षणों के अनुरूप फर्क होगा। यदि कोई खतरा है तो उसको रोका या टाला जा सकता है या नहीं, इस वस्तु को भी हाथ में खोजना चाहिये। कि रेखा के साथ में यदि भगिनीरेखा Sister line हो तो इससे उस रेखा की शक्ति बढ़ती है। यदि किसी टूटी हुई रेखा के साथ ऐसी सहायक रेखा हो तो उस तोड़ वाले खतरे से व्यक्ति की रक्षा होती है या तद्रूप खतरे में कमी लाती है। जीवन रेखा को छोड़ कर यदि किसी भी रेखा के अन्त में रेखा दो फाकों में से विभक्त सी हो तो इससे भी रेखा की शक्ति बढ़ती है। यदि रेखा के अन्त में दो फाकों के बदले कई फाकें हो जायें और झब्बानुमा हो जायँ तो इससे रेखा की शक्ति में कमी हो जाती है। किसी रेखा में से यदि कोई साख ऊपर की ओर जा रही हो उस रेखा की शक्ति बढ़ती है यदि साख नीचे की ओर जा रही हो तो शक्ति घटती है और व्यक्ति की अवनति कराती है। इसी प्रकार भोगरेखा के आरम्भ में ऊपर जाने वाली रेखा में व्यक्ति के सुन्दर प्रेम को बताती हैं तथा नीचे जाने वाली रेखायें उल्टा फल देती हैं। इसी प्रकार मस्तकरेखा पर से ऊपर जाने वाली

साखों से व्यक्ति में चालाकी, उत्साहपूर्णता बुद्धिमता बढ़ती है तथा भाग्यरेखा से ऊपर उठने वाली साखों से उसी उमर में व्यक्ति को आर्थिक सफलता में लाती हैं।

किसी भी रेखा का जंजीरनुमा हो जाना ठीक नहीं है। भोगरेखा में ऐसा होने से प्रेम में परिवर्तन, कमजोरी इत्यादि का बोध होता है। मस्तकरेखा जंजीरनुमा हो जाय तो व्यक्ति के विचारों में अस्थिरता और बुद्धि की कमी हो जाती है। किसी भी रेखा के तोड़ असफलता लाते हैं, रेखा लहरियादार टेढ़ी मेढ़ी हो तो इससे भी रेखा की शक्ति घटती है। बाल की तरह पतली रेखायें भी यदि मुख्य रेखाओं पर पड़ जाती हैं तो जंजीर की शकल बना लेती हैं, इससे भी रेखा की शक्ति घटती है। यदि पूरे हाथ की ये रेखायें चारों ओर दौड़ी हों तो यह दिमागी-शक्ति को निर्बल बनाती हैं तथा परेशानियाँ लाती हैं और व्यक्ति में स्नावयिक दुर्बलता होती है। पर्वतों पर त्रिशूल, खड़ी रेखायें, वृत्त हों तो यह उनकी शक्ति को बढ़ाता है। परन्तु वहाँ क्रास या जालीनुमा चिह्न हो तो शक्ति घटती है। इस तरह जिस पर्वत पर जाल की तरह बहुत सी रेखायें हो तो उस पर्वत के गुणों में उलटा असर हो जाता है। जैसे शुक्रपर्वत उच्च हो और उस पर स्वच्छ सुन्दर खड़ी रेखायें हो तो वह विद्वान् उच्चाकांक्षी तथा कलाकार होता है। परन्तु उस पर जाल का चिह्न बन जाय तो वह व्यभिचारी तथा निर्लज्ज हो।

पितृ रेखा (Line of Life)

बृहस्पति पर्वत के नीचे हथेली के बगल से उठकर तर्जनी और अँगूठा अर्थात् बृहस्पति और राहुपर्वत के बीच होती हुई शुक्रपर्वत को घेरने वाली रेखा को पितृरेखा या जीवनी रेखा कहते हैं। इस रेखा पर से समय निर्धारित होता हैं। इसी पर से बीमारी या मृत्यु इत्यादि का भी अनुभव होता है तथा दूसरी रेखाओं से प्रकट होने वाली खास घटनाओं की पुष्टि इस रेखा द्वारा की जाती है। पितृरेखा लम्बी तंग गहरी होनी चाहिये जिसमें कोई तोड़ और क्रास इत्यादि नहीं हो। इस प्रकार का व्यक्ति दीर्घजीवी व सुन्दर स्वास्थ्य वाला, अच्छा शक्तिशाली होता है।



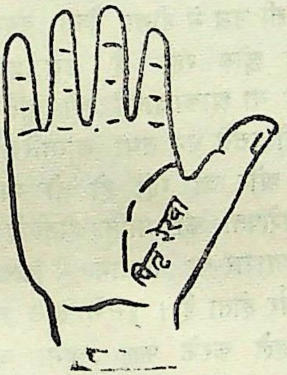
(१७)

यदि पितृरेखा जंजीरनुमा छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हो और हथेली मुलायम हो तो अवश्य ही स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। यदि वही पितृरेखा कुछ दूर चलकर लगातार एक हो जाय तो पुनः स्वास्थ्य की प्राप्ति हो जाती है।



(१८)

यदि बायें हाथ में पितृरेखा टूटी फूटी हो और दाहिने हाथ में ठीक हो तो इससे किसी खतरनाक बीमारी का बोध होता है। लेकिन यदि दोनों में टूटी हो तो अवश्य मृत्यु की सूचना मिलती है। यदि कहीं पितृरेखा की कोई साख शुक्रपर्वत की ओर जा रही हो तो मृत्यु की पुष्टि और अधिक हो जाती है।



(१९)

यदि पितृरेखा हाथ के बगल से निकलने के बजाय बृहस्पतिपर्वत के आधार ही से निकली हो तो उस व्यक्ति का जीवन प्रारम्भ-काल से ही उच्चाकांक्षा लिये हुए होता है।

जिस व्यक्ति की पितृरेखा के समानान्तर एक और रेखा निकट से ही जा रही हो वह पितृरेखा की सिस्टर (भगिनीरेखा) लाइन होती है और पितृरेखा को बल देती है। ऐसे व्यक्ति दीर्घायु व सौभाग्यशाली होते हैं। राजपुरुष या उच्चपदस्थ होते हैं। स्त्री के हाथ में ऐसा होने से वह सुख सौभाग्यशालिनी व पतिप्रिया होती है।



(२०)

पितृरेखा से निकलकर शाखें कभी-कभी ऊपर और नीचे दोनों ओर जाती हैं। ऊपर की शाखायें सदा उन्नति को ओर ले जाती हैं तथा नीचे जाने वाली शाखें अवनति कराती हैं। इस रेखा से कोई शाख निकल कर नीचे की ओर शुक्रपर्वत पर जा रही हों तो जिस स्थान से शाख निकल रही है उसी वयमान् में व्यक्ति का निधन होता है। ऊर जाने वाली शाखों का झुकाव भिन्न-भिन्न होता है जैसे जीवनरेखा की कोई शाख निकल कर यदि वृहस्पतिपर्वत की ओर जाय तो इससे व्यक्ति की पदोन्नति अथवा व्यापारी है तो उसके व्यापार की सीमा बहुत बढ़ जायगी, जिससे लाभ होगा। यह उसी उम्र में होगा जिस वयमान में पितृरेखा रेखा छोड़ रही है इस शाख का



(२१)

प्रधान गुण Successful ambition होता है या आकांक्षाओं की पूर्ति। यदि पितृरेखा की शाख शनि की ओर जा रही है तो इससे धन तथा सांसारिक चीजों की वृद्धि होती है। यदि वह शाख सूर्यपर्वत की ओर जा रही हो तो व्यक्ति के हाथ के आधार पर उसे (Distruction) विशेषता की प्राप्ति होती है। यदि वह शाख बुध की ओर जाती है तो व्यक्ति की व्यापार या विज्ञान में असाधारण उन्नति होती है। यह सब गुण हाथों पर ही निर्भर होता है। इसके लिये वर्गाकार चमसाकार या कलाकार हाथ का निरूपण पहले करके फल कहना चाहिये। जैसे यदि पितृरेखा की कोई शाख बुध की ओर जा रही है और हाथ वर्गाकार है तो व्यापार या विज्ञान में उन्नति होगी। यदि चमसाकार (Spatulate) हाथ है तो invention या Discovers यानी नवीन चीजों की खोज या आविष्कार में व्यक्ति सफल होगा। कलाकार हाथ होगा तो व्यक्ति पर्याप्त धन प्राप्ति करने में सफल हो सकेगा।

पितृ या जीवनरेखा पर नक्षत्र या क्रास का चिह्न हो तो जिस स्थान पर ऐसा चिह्न है उसी उमर में भयानक दुर्घटना या कोई बड़ी बीमारी का संकेत मिलता है। किस प्रकार की बीमारी



(२२)

या दुर्घटना होगी इसे जानने के लिए हाथ में रेखाओं तथा स्थानों पर दृष्टि डालनी होगी। यदि जीवनरेखा के प्रारम्भ में ही ऐसे चिह्न हों तो वह माता पिता के सुख से वञ्चित रहता है।



(२३)

पितृरेखा मणिबन्द के पास मछली मारने वाले काँटों के समान हो तो व्यक्ति मूर्ख होता है। उसके ऊपर जिम्मेदारी के काम नहीं छोड़ने चाहिये। वह स्वार्थी तथा विना प्रयोजन के इधर उधर घूमने वाला और स्मरण-शक्ति का निर्बल या अस्थिर-चित्त का होता है।



(२४)

पितृरेखा के आधार से शुक्रपर्वत पर यदि कोई त्रिकोण चिह्न बना हुआ हो तो उस व्यक्ति की आदत झूठ बोलने की होती है। वह आडम्बरी तथा बहुत ज्यादा बोलने वाला होता है।



(२५)

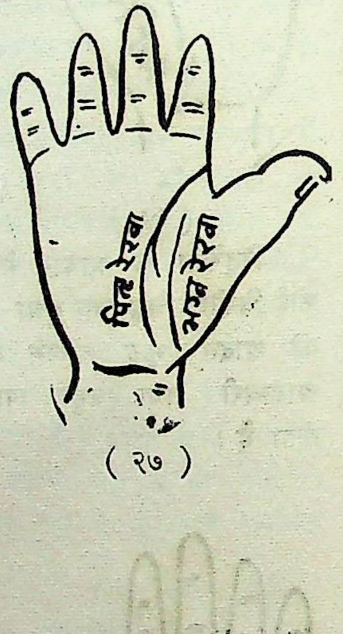
शुक्रस्थान से चलकर यदि कोई रेखा पितृरेखा को छूती हो तो यह कष्ट देती है। यदि उसे काट देती है तो भयानक कष्ट होता है। इस प्रकार यदि कई रेखायें पितृरेखा को काट दें तो जिस जिस उमर में पितृरेखा इस प्रकार कटती है उस उमर में व्यक्ति को कष्टों की सामना करना पड़ेगा।



यदि पितृरेखा पर तारे (Star) का चिह्न हो और उसकी किरण साखें, वृहस्पति, शुक्र या मंगल के पास तक जा रही हों तो यह नक्षत्र यश प्रेम या लड़ाई, झगड़ों सम्बन्धी दुर्भाग्य की सूचना दे रहा है। यदि ज़ीवन रेखा पाण्डुवर्णँ की हो तो जीवन को भी खतरा होते है।

(२६)

यदि जीवन रेखा से कोई साख निकल कर नीचे की ओर शुक्रस्थान पर जा रही हो और जीवनरेखा के समानान्तर उसकी सिस्टर (भगिनि) रेखा अवरोध गर्त से जा रही हो तो किसी भयानक बीमारी या दुर्घटना से व्यक्ति के जीवन की रक्षा कठिनाइयों के पश्चात् होगी।



(२७)



मणिवन्ध के ऊपर पितृरेखा पर यदि क्रास या गुणा के दो चिह्न हों तो व्यक्ति अत्यन्त कामुक होता है वह खयाली दुनियाँ में रहने वाला तथा बहुत बोलने वाला होता है।

(२८)



(२९)

यदि पितृ और मातृरेखायें आपस में मिल कर चली हों तो व्यक्ति में बुद्धिमत्ता होती है। वह भावुक भी होता है और बहुत होशियार भी। उसे यश और सम्मान की प्राप्ति होती है। तथा यदि पितृ और मातृरेखा में थोड़ा अन्तर हो तो व्यक्ति अपने विचारों को कार्य्यरूप में लाने में अधिक सफल होता है। यह go neaded spirit वाला होता है। यदि फासला अधिक भी हो तो उसको अपने ऊपर अधिक विश्वास होने के कारण वह किसी भी कार्य को जल्द कर बैठता है। किसी कार्य के निमित्त तर्क का उपयोग वह नहीं कर सकता। इस कारण उसमें बेवकूफी होती है। यदि पितृ और मातृरेखायें आपस में जुड़ी हुई बहुत दूर तक हथेली में जाकर फिर विलग हुई हों तो यह व्यक्ति के अत्यधिक सुकोमलता और डरपोकपन का ज्ञापक होती हैं। यदि रेखायें कमजोर या पतली हों तो व्यक्ति सदा अस्वस्था के कारण परेशान रहेगा। वह आवश्यकता से अधिक डरपोक और होशियार भी होता है।



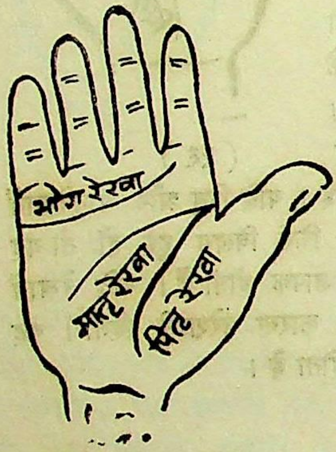
(३०)

यदि पितृ, मातृ और योगरेखायें आपस में उद्‌गम स्थान पर ही जुड़ी हुई हों तो यह अत्यन्त अभाग्य का चिह्न है। ऐसे व्यक्ति स्वयं खतरों की ओर दौड़ते हैं। यदि पितृरेखा हाथ के मध्य में हो और उसकी एक शाख चन्द्रपर्वत की ओर जा रही हो तो वह व्यक्ति सफर की तीव्रतर इच्छा रखता है और सफल भी होता है। यदि पितृ रेखा से लटकती हुई बहुत सी रेखायें बाल की तरह पतली पतली हों तो उस व्यक्ति में शक्ति की क्षीणता का परिचय मिलता है।

यदि पितृरेखा अन्त में विभक्त हो और रेखाओं में पर्याप्त अन्तर हो तो व्यक्ति अपनी जन्मभूमि से दूर देश में ही मृत्यु पायेगा। यदि पितृरेखा पर द्वीप का चिह्न हो तो जिस स्थान पर द्वीप है उस वयमान में बीमारी या अस्वस्थ होने की सूचना मिलती है। यदि द्वीप पितृरेखा के उद्‌गम स्थान में ही तो व्यक्ति के जन्म में सन्देह होता है।

मंगलक्षेत्र से कोई रेखा चलकर पितृरेखा को काट रही हो और उस पर वर्ग हो तो किसी दुर्घटना से व्यक्ति की रक्षा होती है। यदि पितृरेखा किसी वर्ग के आर पार जा रही हो तो किसी बीमारी से व्यक्ति की रक्षा होगी। यदि वर्ग किसी कटाव को घेरता हो तो व्यक्ति को रक्षा किसी मृत्यु-तुल्य दुर्घटना से होती है।

मातृरेखा



(३१)

इसे **Line of Head** या मस्तकरेखा भी कहते हैं मातृरेखा का निकास बृहस्पति-पर्वत के पास से या बृहस्पतिपर्वत पर से ही होता है। किसी भी व्यक्ति के भाग्य का निर्माण इस रेखा की दशा पर ही आधारित होता है। क्योंकि यदि व्यक्ति में बुद्धिबल नहीं हो तो शारीरिक-बल कितना ही अधिक होते हुये भी वह मृत्यु-तुल्य सा होता है और उसका जीवन नष्ट-प्राय होता है। इस रेखा को बृहस्पतिपर्व पर से या कहीं पास से निकलकर हाथ से दूसरी ओर मंगलपर्वत के नीचे और चन्द्रपर्वत के ऊपर तक सीधे जाना चाहिये।

किसी भी रेखा की शक्ति पर विचार करने के पहले व्यक्ति के हाथ पर अवश्य ध्यान देना चाहिये। क्योंकि एक ही प्रकार की रेखा वर्गाकार और विषम हाथों में पड़ जाय तो दोनों के गुणों में पर्याप्त अन्तर हो जाता है।

अँगूठा और तर्जनी के बीच में यदि मातृरेखा, पितृरेखा से कहीं दूर हो तो व्यक्ति में मूर्खता आती है। ऐसे लोगों को माता पिता का सुख नहीं प्राप्त होता और न तो जातक ही पिता माता को सुख पहुंचा सकता है।



(३२)

यदि मातृरेखा, पितृरेखा के साथ निकास स्थान पर ही जुड़ी सी मालूम पड़े तो व्यक्ति में विलक्षण बुद्धिमत्ता होती है। यदि उसी स्थान पर मातृरेखा से कई रेखायें शाखा की तरह निकली हों तो व्यक्ति प्रबल कल्पना-शक्ति वाला तथा बड़ी आकांक्षाओं वाला और अधिक धैर्यशाली तथा गुप्त-विद्यानुरागी होता है।



(३३)



(३४)

यदि मातृरेखा के अन्त में एक या कई शाखायें निकल कर चन्द्रपर्वत पर गई हों तो व्यक्ति के जीवन में अनेकों परिवर्तन होते हैं। वह समय पर बड़ा उदार तथा समयानुसार अत्यधिक कठोर भी हो सकता है। समाज में सम्मनित होने की योग्यता ऐसे लोगों में होती है।

यदि मातृरेखा दीर्घ हो और उसमें कोई तोड़-फोड़ न हो तथा किनारे पर साखाहीन हो तो वह व्यक्ति प्रखर बुद्धि वाला तथा उदार होता है। जिस व्यक्ति के हाथ में मस्तक रेखा नहीं हो तो वह मूर्ख तथा सिर सम्बन्धी बीमारियों से पीड़ित होता है।

यदि मातृरेखा कुछ अंश लिये हुये पितृ-रेखा से सम्मिलित हो और वह रेखा चन्द्रक्षेत्र तक फैली हो तो व्यक्ति चंचल-चित्त वाला, आलसी बोलचाल में मन्द होता है परन्तु वह गम्भीर चिन्तनशील लेखनपटु और आत्मनिर्भर होता है।



(३५)



(३६)

दीर्घ मातृरेखा अभग्न और किनारों पर शाखाहीन हो तो जातक प्रखर मानसिक शक्ति-वाला, तीक्ष्णबुद्धि-सम्पन्न, सुविचारक तथा दयालु होता है। क्षुद्र मातृरेखा बुद्धिहीनता की द्योतक और गम्भीर मातृरेखा पक्षाघात रोग की निर्देशक होती है।

यदि मातृरेखा गहरी हो और उस पर कटाव के चिह्न हों तो वह व्यक्ति शिरपीड़ा इत्यादि बीमारियों से पीड़ित रहा करता है। यदि रेखा पतली हो तथा कमजोर दिखाई पड़े और कटाव रेखायें गहरी हों तो लकवारोग का भय होता है। ऐसे लोगों को बचपन में ही मातृ-वियोग हो जाता है।



(३७)



(३८)

यदि मातृरेखा कुछ दूर सीधी जाकर फिर चन्द्रस्थान पर मुड़ गई हो तो व्यक्ति की बुद्धिमत्ता तथा उसकी बुद्धिवृत्ति का विकास अवश्य होता है। वह सदा अपने (Common sense) बुद्धिबल का ही प्रयोग किया करता है। यदि यही रेखा थोड़ा ढाल लिये हुये प्रारम्भ से ही चन्द्रस्थान तक गई हो तो हाथ के अनुसार कोई बड़ा गायक, पेन्टर या लेखक होगा। यदि चन्द्रस्थान पर यह ढालूरेखा दो शाख वाली हो जाय तो उसमें अद्भुत लेखन-शक्ति होती है।

मातृरेखा और भोगरेखा के मध्य का स्थान प्रशस्त होने से व्यक्ति उदार आत्मनिर्भर तथा दृढ़-संकल्प वाला होता है। इससे हाथ का चौकोर कहते हैं यह जितना ही सुन्दर चौकोर बनेगा। व्यक्ति का जीवन भी उतना ही सुन्दर होगा। यदि यह चौकोर संकीर्ण हो जाता है तो व्यक्ति संकीर्णमना लोभी दरिद्र और मिथ्यावादी होता है।



(३९)



(४०)

पितृ और मातृरेखाओं के बीच यदि कोई तिरछी रेखा शुक्रस्थान से निकलकर आई हो तो व्यक्ति में भद्रता और साहस विशेष प्रकार का होता है। परन्तु यह तिरछी रेखा यदि दूसरी उँगली के निकट तक गई हो तो व्यक्ति की हत्या किसी के द्वारा होती है, स्त्री के हाथ में ऐसा रहने से पतिपत्नी के मनोमालिन्य होता है।

मातृरेखा देखा गया है कि अधिकतर दोहरी नहीं होती परन्तु यदि ऐसी दिखाई दे तो जिस व्यक्ति के हाथ में है, उसमें दिमागी शक्ति बहुत अधिक होगी। ऐसे लोग विनम्र, भावुक और कठोर दोनों होते हैं। किसी भी कार्य को करने के लायक वे अपने को मोड़ सकते हैं। ऐसे लोग कई भाषाओं को जानने वाले होते हैं (Linguistic) तथा इन्हें पैंतीस से पचास वर्ष के भीतर पैतृक-सम्पत्ति पाने का योग हुआ करता है।



(४१)



(४२)

यदि किसी की मातृरेखा धनुषाकार होकर भोग रेखा की ओर झुकी सी प्रतीत हो तो व्यक्ति को अस्त्र इत्यादि से चोट लगने का भय होता है। साथ ही यदि वह रेखा पतली और पीले रंग वाली हो तो व्यक्ति में खून की कमी और तद्जन्य रोग उत्पन्न हुआ करते हैं।



(४३)

स्थूल और गम्भीर मातृरेखा की छोटी-छोटी संगी रेखायें माता के विरुद्ध व्यक्ति मस्तिष्क को मोड़ती हैं तथा माता के विरुद्ध क्रोध उत्पन्न करके व्यक्ति में ऐसे भावों को पैदा करती हैं व्यक्ति मातृघातक बन सकता है।



(४४)

मातृरेखा से कोई साख उठकर यदि बुध पर्वत तक जाय तो व्यक्ति शान्त और धर्मपरायण होता है विज्ञान की ओर उसकी रुचि होती है। यदि इसी भाँति रेखा निकलकर चन्द्रपर्वत की ओर जाय तो व्यक्ति का झुकाव गुप्तविद्या जानने की ओर होगा तथा वह सूर्यपर्वत पर जाती हो तो व्यक्ति के हाथ के लक्षणों के अनुसार उसके रुचि विशेष पर आधारित विषय में उसकी विख्याति होगी। यदि मातृरेखा से निकली शाख शनि की ओर जाय तो संगत, धर्म और विचारों की गहराई में जाने वाला व्यक्ति होता है यदि मातृरेखा की साख निकल कर केवल भोगरेखा में मिल गई हो तो वह व्यक्ति किसी गहरे प्रेम में पड़कर हानि उठाता है।

यदि दोनों हाथों में मातृरेखा टूटी हो तो व्यक्ति की मृत्यु शिर में चोट लगने से एकाएक होगी। यदि मातृरेखा दोनों हाथों में टूटी हो और प्रत्येक के तोड़ के स्थान के पहले ही दूसरी सहायक रेखायें उससे सटी हुई जाँय तो मृत्यु से रक्षा हो जायगी। मातृरेखा पर द्वीप होना बुरा है। यह व्यक्ति में पागल पन लाता है और वह पागलपन द्वीपके लम्बाई के अनुसार वयमान तक रहेगा।

यदि वृहस्पतिपर्वत पर Star तारे का चिह्न हो और मातृरेखा से कोई शाख निकलकर उस तारे की ओर संकेत कर रही हो तो व्यक्ति को जीवन में आश्चर्य-जनक सफलता मिलती है यदि व्यक्ति की मातृरेखा किसी वर्ग से गुजरे तो व्यक्ति कि हिम्मत के कारण किसी दुर्घटना से उसकी रक्षा होगी।

यदि ढालू मातृरेखा और पितृरेखा के बीच का फासला अधिक नहीं है तो व्यक्ति को अधिक लाभ होता है। ऐसे लोग बैरिस्टर, ऐक्टर या भाषण देने वाले होते हैं। यदि फासला बहुत कम है तो व्यक्ति बड़ा भावुक होता है और मामूली चीजों के लिए भी दुःखी होता है।

कभी कभी मातृरेखा राहुपर्वत से निकली हुई दिखाई पड़ती है। ऐसी रेखा ठीक नहीं होती व्यक्ति बड़ा लापरवाह तथा लड़ने झगड़ने वाला होता है।

भोगरेखा (Line of Heart)

भोगरेखा उँगलियों के नीचे स्थिर पर्वतों के आधार पर होती है। इसका निकास मध्यमा उँगली के नीचे से या प्रथमा और मध्यमा उँगली के बीच से अथवा वृहस्पतिपर्वत पर से होता है। यह रेखा प्रेम सम्बन्धी सभी बातें बताती है। इस रेखा की समानता मातृरेखा से करना चाहिये। यदि भोगरेखा मातृरेखा की अपेक्षा अधिक भरपूर है तो व्यक्ति प्रेम और मुहब्बत को चाहने में, दूसरे मरजों और इच्छाओं को छोड़ता है। यदि भोग-रेखा भरपूर हो और मातृरेखा भी भरी पूरी है तो व्यक्ति अपनी प्रेमीप्रकृति का व्यवहार सदा दूसरों की भलाई के निमित्त करेगा।



(४५)

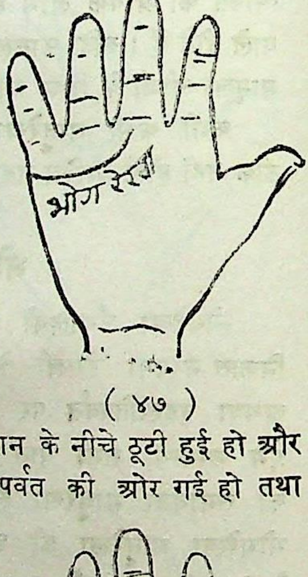
यदि भोगरेखा वृहस्पतिपर्वत पर से प्रारम्भ हो तो व्यक्ति शुद्ध प्रेम वाला होता है तथा दूसरों से भी वह अपने प्रति वैसा ही प्रेम व्यवहार चाहता

है। पहली और दूसरी उँगली के बीच से निकली हुई रेखा अधिक ठीक मानी जाती है। शनिस्थान या दूसरी उँगली के नीचे से रेखा निकली हो और जंजीरदार हो अथवा चौंड़ी सी फैली फैली प्रतीत हो तो ऐसा पुरुष स्त्री से या स्त्री पुरुष से घृणा करने वाली होती है।



(४६)

यदि भोगरेखा निकास स्थान पर दो फाकों वाली हो तो व्यक्ति में उदारता और विशुद्ध प्रेम की भावना होती है यदि रेखा पूरे लम्बान में हो और पहली उँगली पर्यन्त तक इसकी कोई शाख हो तो वह आदर्शप्रेमी होता है।



(४७)

शनिपर्वत पर से चली हुई भोगरेखा जिसकी निम्नकोटि की होती है वह व्यक्ति स्वार्थी, इर्ष्यालु, कामुक स्नेह और प्रेम-विहीन होता है। उसका प्रेम भी स्वार्थ के लिये ही होता है मतलब निकल जाने के बाद सम्बन्ध भी नहीं रखता।

भोगरेखा यदि वृहस्पतिपर्वत से चलकर शनिस्थान के नीचे टूटी हुई हो और उसके आगे रेखा ठीक दिशा में बुध तथा चन्द्रपर्वत की ओर गई हो तथा इसमें से कई एक शाखें गई हों तो व्यक्ति के उत्तम मनोभाव होते हुये भी कष्टों का सामना करते हुये धन लाभ करता है। जिसके हाथ में भोगरेखा न हो वह कठोर हृदय तथा प्रेमसे शून्य होता है। ऐसे व्यक्ति की इच्छायें लोहे की तरह न झुकने वाली होती है। तथा हृदयरेखा, में तोड़ होने से निराशा एवं दुख मिलता है। जैसे दूसरी उँगली के नीचे टूटी हो तो भाग्य से निराशा तीसरी उँगली के नीचे टूटी हो तो घमन्ड में निराशा और दुःख तथा चौथी उँगली के नीचे टूटी हो तो बेवकूफी और लालच से कष्ट की प्राप्ति होती है।

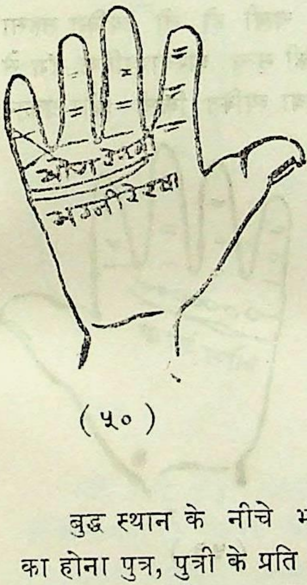


(४८)

पहली और दूसरी उँगली के बीच से चली हुई भोगरेखा अधिक उत्तम मानी जाती है यह व्यक्ति शान्तिप्रिय उदार तथा प्रेमी होता है। उसमें सन्तोष की मात्रा भी होती है। वह न तो प्रेम के पीछे पड़कर अपना सर्वस्व लुटा देने वाला होता है और न तो केवल स्वार्थ के लिये प्रेम जताने वाला होता है। भाग्य के लिये भी यह रेखा अच्छी होती है।



(४६)



(५०)

भोगरेखा यदि दोहरी पड़ जाय तो व्यक्ति में प्रेम मात्रा अधिक होती है। वह सौन्दर्य्यप्रिय, गुणवान करुणहृदय तथा प्रेमी स्वभाव का होता है। यदि साथ साथ मातृरेखा ढालू और लम्बी हो तो उसकी प्रेमी प्रकृति दूसरों की भलाई में लगती है ऐसे लोग अपने को न्यौछावर करने वाले होते हैं।

बुद्ध स्थान के नीचे भोगरेखा में साखाओं का होना पुत्र, पुत्री के प्रति प्रेम का द्योतक होता है। जो व्यक्ति सन्तान के प्रति स्नेहहीन होते हैं उनके हाथों में ऐसी साखायें नहीं दृष्टिगत होती जिस व्यक्ति के हाथ में इस प्रकार की रेखा नहीं होती वे प्रायः सन्तानहीन होते हैं तथा दूसरों के बच्चों के प्रति भी उनमें कुछ ममता नहीं होती।



(५१)



यदि हृदयरेखा हथेली में एक छोर से दूसरे छोर तक फैली हो तो प्रेम की अधिकता होती हैं परन्तु उसका झुकाव डाह की ओर होता है अर्थात् व्यक्ति डाही होता है। स्त्रियों के हाथ में इस प्रकार की भोगरेखा पड़ जाने से वह चरित्रहीना हो जाया करती हैं।

(५२)

यदि भोगरेखा मातृ तथा पितृरेखा से मिलकर चली हो तो व्यक्ति सहसा हर कामों में कूद पड़ने वाला होता है। ऐसे लोगों की मृत्यु अस्वाभाविक ढंग से होती है जैसे जल में डूबकर या आग से जलकर अथवा व्यक्ति किसी और प्रकार आत्म हत्या कर ले। इत्यादि।

यदि भोगरेखा श्रृंखलाकार हो तो व्यक्ति हृदय रोग से पीड़ित रहने वाला और लम्पट होता है। इसका प्रेम बहुत दिनों तक चलने वाला नहीं होता। यदि यह रेखा शनिपर्वत से प्रारम्भ हुई हो तो प्राणी अपने से विलोम वाली नसल से घृणा करने वाला होता है। अर्थात् पुरुष स्त्री से और स्त्री हुई तो पुरुषसे घृणा करने वाली होती है।



(५३)



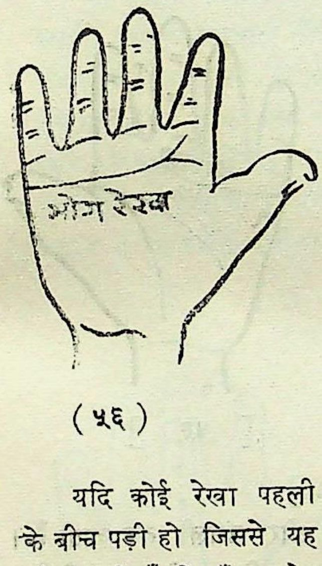
यदि भोगरेखा से कोई शाख निकलकर मातृरेखा को काटती हुई पितृरेखा को स्पर्श करले तो व्यक्ति अव्यवस्थित-चित्त, हठी और स्वार्थी हो जाता है। प्रायः उसका वैवाहिक-जीवन अशान्तिपूर्ण हो जाता है।

(५४)

यदि बुध ऊँगली के नीचे भोगरेखा पर वृत्त का चिह्न हो तो व्यक्ति का प्रेम सन्तान के प्रति असाधारण होता है।



(५५)



(५६)

यदि भोगरेखा प्रारम्भ से दो फाकों वाली हो जिसकी एक फाँक बृहस्पति के उच्च स्थान पर तथा दूसरी अंगूठे की ओर हो तो व्यक्ति में असाधारण प्रतिभा होती है। वह उदार अल्प-भाषी तथा स्थिर लक्ष्य होता है। उसका जीवन भी शान्तिपूर्ण होता है।

यदि कोई रेखा पहली और दूसरी उंगली के बीच पड़ी हो जिससे यह प्रतीत हो कि पहली और दूसरी उँगलियाँ इसके द्वारा विभक्त हो गई हैं और वह हथेली में आगे चली गई हो और प्रकट करे कि यह रेखा भोगरेखा को काट रही है तो व्यक्ति की मृत्यु शिर में चोट लगने से होती है यदि यह आभासित हो कि भोगरेखा ही उसे काट कर आगे बढ़ रही है तो व्यक्ति की रक्षा मृत्यु से हो जाती है।



[५७]



[५८]

यदि भोगरेखा की कोई शाखा पहली उँगली की ओर गई हो और दूसरी रेखा मिलकर इससे त्रिकोण बना दे तो व्यक्ति की मृत्यु हठात् होती है।



[५९]

यदि भोगरेखा किसी अन्य रेखा द्वारा अंक के निकट कटी हो तो व्यक्ति को किसी शुभाकांक्षी और फलदायक मित्र की प्राप्ति होती है तथा अंक २ के निकट यदि कोई रेखा भोगरेखा से निकलकर मातृरेखा की ओर जारही हो तो किसी धनी व्यक्ति द्वारा उसकी हानि होती है।

ऊर्ध्वरेखा [Fateline]

भाग्यरेखा कलाई से निकलकर हाथ के दूसरी ओर उंगली तक जाती है। यदि यह रेखा भली प्रकार चिह्नित हो तो अच्छा व्यक्तित्व बोध कराती है। यदि हाथ में दूसरी रेखायें अच्छी हैं तो व्यक्ति अपने व्यक्तिगत परिश्रम द्वारा विजय और सफलतायें प्राप्त करेगा। इस रेखा के गुण को पढ़ने के लिये व्यक्ति के हाथ की दशा और उसके भेद पर पहले विचार कर लेना आवश्यक होता है। बहुत सफल हाथों में भी यह रेखा कभी कभी भली प्रकार से चिह्नित नहीं होती। खासतौर पर निकृष्ट वर्गाकार और चमसाकार हाथों में। दार्शनिक कलाकार तथा विषम हाथों में यह रेखा पूरी गहराई लिये हुये होती है। परन्तु इसका फल कम होता है। इसलिये कलाकार हाथ में यदि बहुत पुष्टरेखा हो तो वर्गाकार हाथ में उतनी ही पुष्टरेखा की तुलना में वह उसका आधा भी फल

नहीं दे पाती। इस प्रकार एक वर्गाकार हाथ की एक छोटी भी उर्ध्वरेखा सांसारिक सफलताओं के विषय में अधिक महत्वपूर्ण होती है।

इस रेखा की एक विचित्र बात भी होती है कि जिसकी ऊर्ध्वरेखा बहुत पुष्ठ होती है वह भाग्य पर ही अधिक विश्वास करने वाला हो जाता है। परन्तु वर्गाकार चमसाकार हाथ वाले विरले ही होते हैं जो भाग्य पर विश्वास करते हों क्योंकि उनके हाथ में बहुत कम पुष्ठ ऊर्ध्वरेखा होती है।

भाग्यरेखा का निकास-स्थान प्रायः निम्नलिखित स्थानों से हुआ करता है। १—जीवनरेखा से २—कलाई से, ३—चन्द्रपर्वत से ४—मस्तकरेखा से ५—भोगरेखा से।

भाग्यरेखा साफ-साफ बिना किसी तोड़ के अर्थात् अखन्डित, ललाई लिये हुये शनिपर्वत के उच्चस्थान तक जाती हो तो व्यक्ति का जीवन सुखमय होता है। उसे बिना अधिक परिश्रम किये हुये सांसारिक सुख उपभोग की वस्तुओं के निमित्त द्रव्य इत्यादि की प्राप्ति हुआ करती है तथा समाज में यह व्यक्ति धनीमानी होता है।



(६०)

यदि भाग्यरेखा मणिबन्ध से उठकर मध्यमा या शनि की उँगली के दूसरे पोर तक पहुँच जाय तो व्यक्ति अत्यन्त सौभाग्यशाली होता है। यदि प्रथम पोर तक रेखा गई हो तो वह अतुल ऐश्वर्य का स्वामी होता है तथा भाग्यशाली होता है।



(६१)

यदि भाग्यरेखा मणिबन्ध से उठकर तर्जनी या बृहस्पति के उच्च स्थान तक जाय तो व्यक्ति बड़ा धार्मिक तथा लोगों की भलाई के लिये चिन्तित,



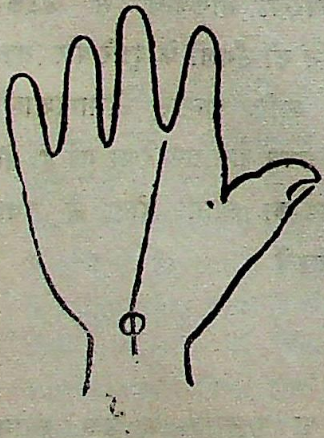
[६२]

अच्छे-अच्छे विचारों को ध्यान में लाने वाला होता है यदि वही रेखा दूसरी उँगली या शनिपर्वत तक गई हो तो वह सुखी धनवान् और परिवार का भरापूरा होता है। तीसरी उँगली या सूर्य्यपर्वत तक यदि ऐसी रेखा गई हो तो व्यक्ति स्वाधीनचेता अत्याधिक धन पैदा करनेवाला तथा पुत्र पौत्रादि से युक्त होता है। चौथी उँगली या बुध के उच्च स्थान तक गई रेखा व्यक्ति को यशस्वी, धार्मिक, सम्मानित करती है।

चन्द्रपर्वत से निकली हुई भाग्यरेखा व्यक्ति को सौभाग्य और सफलता दूसरों के द्वारा दिलाती है तथा ऐसे लोग जनता के अधिक कृपापात्र होते हैं यानी ऐसे लोग दूसरों की सहायता से जीवन में उन्नति लाभ करते हैं और जनप्रिय होते हैं। यदि भाग्यरेखा सीधी हो परन्तु चन्द्रपर्वत से कोई शाख निकलकर ऊर्ध्वरेखा में मिली हो तो उसका भी फल करीब करीब वही होता है। किसी स्त्री के हाथ में यदि किरणरेखा इसी प्रकार भाग्यरेखा को स्पर्श करती है तो वय में उसका विवाह किसी धनी व्यक्ति के साथ होता है।



[६३]



[६४]

यदि भाग्यरेखा पर वृत्त का चिह्न हो तो व्यक्ति का झुकाव व्यभिचार की ओर होता है तथा भाग्यरेखा पर वर्ग का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति की बचत रुपये पैसे की हानि से होती है। यदि क्रास का चिह्न हो तो दुःख की प्राप्ति तथा द्वीप चिह्न होने से अभाग्य की सूचना मिलती है।

ऊर्ध्वरेखा के अन्त में यदि बहुत-सी छोटी-छोटी रेखायें अंकित होकर उसे झब्बानुमा बना दें तो व्यक्ति का झुकाव धन-प्राप्ति की तरफ कितने ही ओर को हो जाता है इस कारण उसे किसी विषय में पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती। ऐसे लोगों का प्रायः कारावास भोगना पड़ता है।



[६५]

हथेली के निचले भाग में यदि ऊर्ध्वरेखा पर तोड़ हो तो यह निश्चय ही अभाग्य की निशानी और हानि होने का लक्षण है परन्तु तोड़ स्थान के पहले यदि ऊर्ध्वरेखा को कोई सहायकरेखा चली हो तो व्यक्ति के विचार के अनुसार उसके जीवन में कोई पूरा परिवर्तन उसी वयमान में होता है जो सफलता-दायक होती है। हाथ की और दशाओं के अनुसार यदि टूटी हुई ऊर्ध्व रेखा पर विचार हो तो व्यक्ति को गठियावात जैसी बीमारियाँ होती हैं तथा व्यक्ति में चोरी की आदतें पड़ती हैं।



[६६]

यदि ऊर्ध्वरेखा टेढ़ी-मेढ़ी होती हुई गई हो और पतली पितृरेखा हो तो व्यक्ति शारीरिक दुर्बलताओं के कारण सुख-सौभाग्य की प्राप्ति में बाधा प्राप्त करता रहता है तथा उसका जीवन परिवर्तनों से भरा हुआ होता है, जिस कारण वह उन्नति नहीं कर पाता।



(६७)



[६८]

ऊर्ध्वरेखा सीधी मातृरेखा को पार करती हुई वृहस्पतिपर्वत की ओर गई हो तो व्यक्ति की आकांक्षा अधिक उच्च होती है तथा वह प्रारंभ से ही सांसारिक वस्तुओं को प्राप्त करने में प्रयत्न शील होता है। एवं उसकी आयु बहुत लम्बी होती है।



[६९]

उर्ध्वरेखा टूटी-फूटी सी छिन्न-भिन्न हो तो व्यक्ति के जीवन में अनेक परिवर्तन, धन नाश और तरह-तरह की अशान्ति पैदा हुआ करती हैं। व्यक्ति को शारीरिक रोग भी बहुत प्रकार से घेरे रहते हैं।



[७०]

लहरियादार ऊर्ध्वरेखा व्यक्ति में अस्थिरता लाती है। हाथ की दशा के अनुसार कभी सौभाग्य कभी दुर्भाग्य की प्राप्ति होती रहती है। फिर भी यदि वह भोग रेखा के ऊपर सरल और अखण्डित दशा में फैली हो तो व्यक्ति को ४० वर्ष की उम्र के बाद शुभ फलदायक होती है।

पितृरेखा से निकली हुई भाग्यरेखा को पार्थिवरेखा कहते हैं इस रेखा द्वारा धनयोग उच्चपद की प्राप्ति इत्यादि का ज्ञान होता है। यदि यह रेखा प्रारम्भ से ही पुष्ट है तो अपने निजी योग्यता द्वारा धन और सफलता प्राप्त करता

है यदि यह पितृरेखा के बगल से निकली हुई है तो ज्ञात होता है कि व्यक्ति का प्रारम्भिक-जीवन माता पिता या सम्बन्धियों की इच्छाओं पर बलिदान हुआ है।

यदि भाग्यरेखा कलाई के पास से निकलकर अपने मन्तव्य स्थान शनि तक जाय तो यह अत्यधिक सौभाग्य का चिह्न है। इस प्रकार भाग्यरेखा की कोई शाख यदि किसी पर्वत पर जाती हो तो उस पर्वत के गुण के अनुसार व्यक्ति को सफलता मिलती है।

यदि भाग्यरेखा हृदयरेखा (भोगरेखा) द्वार रुक जाय तो व्यक्ति की सफलता किसी प्रेमबन्धन द्वारा नष्ट हो जाती है। यदि भाग्य और भोग दोनों रेखायें मिलकर बृहस्पतिपर्वत पर चढ़ जाय तो व्यक्ति की सभी इच्छायें प्रेम के द्वारा पूर्ति होती हैं।

यदि भाग्यरेखा ऐसी मालूम पड़े कि वह मातृरेखा द्वारा रुक गई है तो व्यक्ति की ही किसी बड़ी गलती के द्वारा उसकी सफलता में बाधा पड़ती है।

यदि भाग्यरेखा का निकास मस्तकरेखा से हो तो व्यक्ति के जीवन के आखिरी भाग में उसे सफलता मिलती है वह भी एक कठोर जीवनयुद्ध के पश्चात् और उसकी ही मानसिक परिश्रम और योग्यता द्वारा।

यदि भाग्य (ऊर्ध्वरेखा) रेखा का निकास हृदयरेखा से हो तो बहुत ही बाद जीवन में व्यक्ति की कठिनाइयाँ दूर हो सकेंगी।

यदि भाग्य (ऊर्ध्व) रेखा दोहरी हो तो यह एक अत्यन्त सुन्दर लक्षण है। यदि ये दोनों रेखायें भिन्न-भिन्न दिशाओं में पृथक-पृथक पर्वतों पर जाती हों तो और उत्तम है। क्योंकि ऊपरी पर्वत के दो भाग्योदय कारक् पर्वतों की शक्ति उन्हें मिलती है। इस प्रकार से व्यक्ति राज्य, भाग्य और भोग की क्षमता रखता है। बिना भाग्यरेखा के भी व्यक्ति का सफल जीवन देखने को मिलता है लेकिन फिर उनका जीवन मामूली तरह से ही गुजरने वाला होता है। वे खा पी तो लेते हैं हरन्तु जीवन का सच्चा सुख उन्हे नहीं प्राप्त होता।



(७१)

रविरेखा (Line of Suxess)

इसे Line of Brilliancy का सफलता की रेखा भी कहते हैं। हाथ के किस्म के आधार पर ऊर्ध्वरेखा की ही तरह इस पर भी विचार किया जाता है। वर्गाकार



(७२)

तथा चमसाकार हाथों में निश्चय ही अपनी अद्भुत सफलता देती है परन्तु और प्रकार के हाथों में इसका भी असर कम जाता है। यदि अच्छी ऊर्ध्वरेखा के साथ यह हाथ में पड़ जाती है तो व्यक्ति की प्रसिद्धि कराती है। इस रेखा का निकास ऊर्ध्वरेखा से, भाग्यरेखा से, चन्द्रपर्वत पर से मंगल के मैदान से, मंगलपर्वत पर से, मातृरेखा और भोगरेखा से होता है।

यदि रविरेखा का निकास हृदयरेखा से हो तो व्यक्ति का झुकाव कला या कलात्मक वस्तुओं की ओर अधिक होता है। ऐसा व्यक्ति जीवन के बहुत बाद की अवस्था में संसार में अधिक प्रभाव और क्षमता प्राप्त करता है तथा उसकी ख्याति भी होती है लेकिन जीवन की अन्तिम अवस्था में ही ऐसा होता है।



(७३)



(७४)

सूर्य्यरेखा यदि मस्तकरेखा (मातृरेखा) से निकली हो तो व्यक्ति में इतनी दिमागी शक्ति होती हैं कि उसे किसी दूसरे की राय इत्यादि लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। उसे आधे जीवन के बाद सफलतायें प्राप्त होती हैं।

यदि रविरेखा पितृरेखा से निकली हो तथा हाथ कलाकार किस्म का हो तो व्यक्ति सुन्दरता का पुजारी होता है। भाग्यरेखा सुस्पष्ट और पुष्ट हो तो कला में सफलता मिलती है और उसके द्वारा धन की भी प्राप्ति होती है।



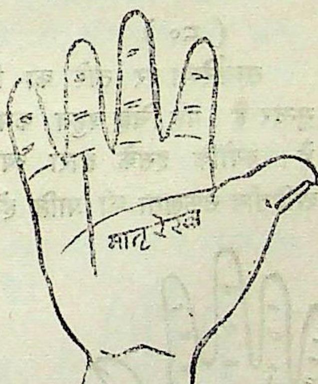
(७५)

चन्द्रस्थान से रविरेखा का निकास हो तो व्यक्ति दूसरों की सहायता से सफलता और उन्नति प्राप्त करता है। इस प्रकार की सफलता निश्चत नहीं कही जा सकती क्योंकि व्यक्ति जिसके ही सम्पर्क में जायगा उसके ही भाग्य से वह प्रभावित होगा।



(७६)

यदि मंगल के मैदान से इस रेखा का निकास हो तो "आसुओं के बाद सुर्य्योदय" इसका लक्षण है। जातक को बहुत कठोर ज़ीवन-युद्ध के पश्चात् सफलतायें मिलती है।



(७७)

रविरेखा त्रिसूल की भाँति हो और यदि उसकी एक शाख शनिपर्वत पर तथा दूसरी बुध की ओर गई हो तो व्यक्ति धन और यश दोनों को प्राप्त करता है तथा उसकी विख्याति भी होती है।



(७८)

रविरेखा जंजीरनुमा हो तो व्यक्ति विद्या और यश से हीन होता है। यदि उसकी कई शाखें अन्त में इधर उधर हैं तो व्यक्ति में कई प्रकार के विचारों का समावेश होता है जिससे वह एक ओर दत्तचित्त न होकर भिन्न भिन्न प्रकार के कामों में हाथ डालता है। फल यह होता है कि सफलताओं में कमी हो जाती है और व्यक्ति प्रसिद्धि से वञ्चित रह जाता है।



(७६)



टूटी हुई छिन्न भिन्न सूर्य्यरेखा व्यक्ति के विचारों में परिवर्तन लाया करती है। जिससे व्यक्ति की उन्नति में बाधायें उपस्थित हुआ करती हैं।

(८०)

सूर्य्यरेखा पर तारे का चिह्न होना बहुत ही सुन्दर है। यह चिह्न बहुत कम देखने को मिलता है। क्योंकि इसके द्वारा व्यक्ति को निश्चय ही अद्वितीय सफलता की प्राप्ति होती है।



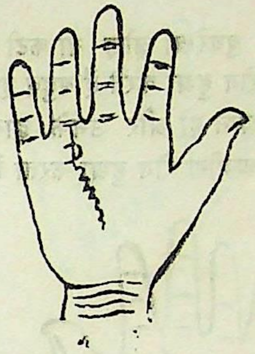
(८१)



यदि रेखा पर द्वीप हो तो उसी वयमान में व्यक्ति के पद और यश को धक्का पहुँचता है और उसी उम्र में व्यक्ति की बदनामी भी होती है। हाथ में गड्ढा हो तो रविरेखा के गुण नष्ट हो जाते हैं।

(८२)

रविरेखा में यदि ऊर्ध्ववृत्ताकार चिन्ह हो तो व्यक्ति के धन लाभ में अड़चन और बाधायें उत्पन्न होती हैं। यदि यह रेखा लहरियादार हो तो व्यक्ति चञ्चल-चित्त निरर्थक चिन्ताशील होता है जिसके कारण उसे कार्य्यों में सफलतायें नहीं मिलती।



(८३)

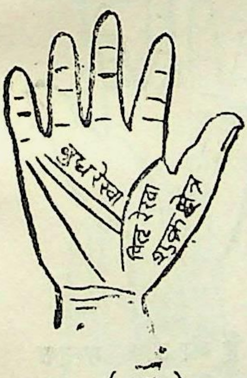


(८४)

यदि शुक्र या राहुक्षेत्र से कोई विरोधी रेखायें सूर्यरेखा को काटती या स्पर्श करती हो तो बहुत से अमंगल हुआ करते हैं। व्यक्ति को अनायास शत्रु प्राप्त होते रहते हैं जिनसे हानि की सम्भावना होती है तथा उसकी उन्नति में रुकावटें पैदा होती हैं।

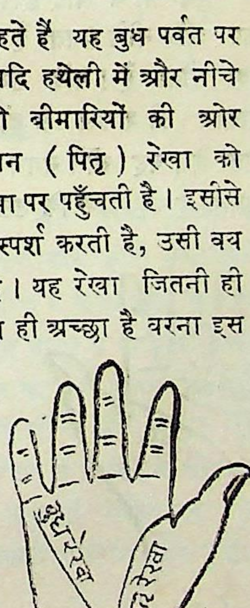
बुधरेखा

इसे व्यापार की रेखा भी कहते हैं यह बुध पर्वत पर हाथ के आधार से निकलती है यदि हथेली में और नीचे से या जीवनरेखा से निकले तो बीमारियों की ओर संकेत करती है। यदि यह जीवन (पितृ) रेखा को छू लेती है तो बीमारी चरम सीमा पर पहुँचती है। इसीसे यह रेखा जहाँ पर पितृरेखा को स्पर्श करती है, उसी वय में व्यक्ति की मृत्यु मानी जाती है। यह रेखा जितनी ही सुन्दर बुधपर्वत तक गई हो उतना ही अच्छा है वरना इस रेखा का न होना ही उत्तम है।



(८५)

यदि एक सरल रेखा लम्बी जीवनरेखा (पितृ) से पलटती हुई मालूम पड़े तो यह कमजोर पितृरेखा को भी बल देती है। अच्छे चिकित्सकों और ज्योतिषियों के हाथ में ऐसी रेखा देखने को मिलती हैं। उनका स्वास्थ्य भी प्रबल और निरोग होता है तथा वे धनी होते हैं।



(८६)

बुधरेखा क्षीण या कटी हुई हो तो व्यक्ति को उदर रोग हुआ करते हैं बहुत ही छोटी छोटी रेखायें असंलग्न हों और उनके द्वारा कटी होने से व्यक्ति को अजीर्ण रोग हुआ करता है ।



(८७)



(८८)

यदि बुधरेखा गहरी और लाल हो तो बुखार का संकेत मिलता है । लच्छेदार या टेढ़ीमेढ़ी हो और काले रंग की रेखा होने से पेट सम्बन्धी बीमारियाँ या आंत का ठीक न रहना ज्ञात होता है ।

बुधरेखा में यदि द्वीप चिह्न हों जो मातृरेखा के ऊपर और नीचे बनता है तो छाती व फेफड़ों से भय पैदा होता है । यदि उंगली के नाखून लम्बे और बादाम की शकल के हों तो यह निश्चय तौर पर होता है । वह सोते समय अनेकों विचित्र सपने भी देखता है यहाँ तक कि उठकर खड़ा हो जाता है ।





(९०)

यदि बुधरेखा में एक द्वीप है जो ठीक मस्तक रेखापर है तो व्यक्ति को नाक और गले की विमारियें होती है । यदि बुधरेखा केवल भोग और मातृरेखा के बीच में हो, जो दोनों रेखाओं को जोड़ती हुई सी है तो व्यक्ति के दिमाग को खतरा पैदा होता है । यदि मस्तक रेखा पर द्वीप का चिह्न हो तो यह बात और पुष्ट हो जाती है । ऐसे लोग प्रायः बुखार से भी पीड़ित रहते हैं ।

बुधरेखा यदि चन्द्रपर्वत तक वक्रभाव में हो तो व्यक्ति आलसी और अव्यवस्थित-चित्त वाला होता है। उसकी दशा में अनेकों परिवर्तन होते हैं तथा संकीर्ण-हृदय होने के कारण वह उन्नति से वञ्चित रह जाता है।



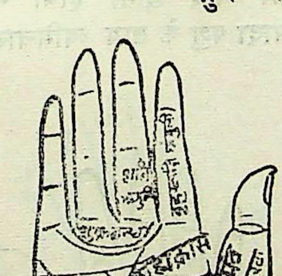
(६१)

यदि बहुत सी रेखायें हाथ के बाहरी ओर से आकर बुधरेखा को काटती हुई सूर्यरेखा की ओर चली जांय तो व्यक्ति हद्द से ज्यादा धूर्त होता है। बलखाई हुई अस्वभाविक रूप से बुध रेखा हो तो व्यक्ति लीवर से पीड़ा पाता है। यदि यह बुधपर्वत से लेकर मातृरेखा को पार करती हुई जान पड़े तो व्यक्ति को हृदय सम्बधी बीमारी होती हैं।



(६२)

शुक्र बन्धनी (Gerdle of Venus)



शुक्रबन्धनीरेखा पहली और दूसरी उँगली के बीच से प्रारम्भ होकर अर्धवृत्ताकार होती हुई तीसरी और चौथी उँगली के बीच में अन्त होती है। यह रेखा कलाकार और विषम हाथों में ही प्रायः देखने को मिलती है। इस रेखा का नहीं होना ठीक होता है। कभी कभी कई रेखाओं के योग से यह रेखा बन ज़ाया करती है। इस रेखा से व्यक्ति में कमजोरी होती है परन्तु उसकी दिमागी शक्ति बढ़ जाया करती है। ऐसे लोग अधिकतर संगीतज्ञ और धार्मिक हुआ करते हैं।

(६३)

यदि रेखा वृहस्पतिपर्वत से प्रारम्भ होकर बुधपर्वत तक प्रतीत हो तथा रेखा सरल हो तो कुछ शुभ फल देती है। व्यक्ति परमार्थी होता है। कविता और साहित्य में रुचि रखने वाला होता है।



(६४)

यदि शुक्रबन्धनी चौथी उँगली के मूल तक है तथा भोगरेखा जो छूती हुई दोनों की एक शाख होकर वृहस्पतिपर्वत तक हो गई हो तो व्यक्ति का चरित्र बहुत अच्छा होता है तथा वह अनेक विद्याओं की प्राप्ति करता है।



(६५)

दोहरी शुक्रबन्धनीरेखा यदि दोनों हाथों में हो तो वह प्राणी किसी मादा पशु के साथ व्यभिचार करने वाला होता है है।



(६६)

यदि शुक्रमुद्रिका बीच में भग्न हो तो व्यक्ति के चरित्र दोष कुछ कम हो जाते हैं। परन्तु व्यक्ति थोड़े ही में विचलित हो जाने वाला होता है।



(६७)



यदि हाथ में शुक्रमुद्रिकाहो तथा उसके ऊपर कोई तारे का चिह्न होतो व्यक्ति वार्य्य सम्बन्ध रोग से पीड़ित रहता है। यदि दोहरी शुक्रमुद्रिकारेखा है और तारे का चिह्न भी हो तो व्यक्ति को वीर्य्य सम्बन्धी रोग कभी ठीक नहीं होता।

(९८)

यदि शुक्रमुद्रिका छोटे छोटे टुकड़ों से बनी हो तो वह प्राणी विना नियम के पापाचारों में लीन रहा करता है।



(९९)

यदि रवि और भाग्यरेखा स्थूल हों और शुक्र बन्धनी को काट देती हों तो व्यक्ति पण्डित, प्रेमी और ग्रन्थकार इत्यादि होता है। यदि बहुत पुष्ट शुक्रबन्धनी रेखा हो, जो रक्त वर्ण हो और ऐसा आभास हो कि ऊर्ध्वरेखा और रविरेखा काट रही है तो व्यक्ति की बुद्धि नष्ट होती है। यह दुर्भाग्य सूचक हो जाता है।



(१००)

शुक्रमुद्रिका यदि तर्जनी के मूल से लेकर कनिष्ठा के मूल तक फैली हुई हो तो व्यक्ति महापापी होता है। उसका ध्यजभंग हो जाय तथा इस प्रकार के और बड़े दोष उस व्यक्ति में पैदा हो जायँ फिर भी उसका लम्पट स्वभाव दूर नहीं होता



(१०१)



(१०२)

शुक्रवन्धनी रेखा यदि स्पष्ट हो और शनिरेखा रविरेखा तथा वृहस्पतिरेखा को काटती हो तो यह व्यक्ति को निर्बल एवं उसकी बुद्धि को भी कुन्ठित करती हुई व्यक्ति के सौभाग्य-लाभ में वाधक होती है।

शुक्रवन्धनी रेखा यदि स्त्रियों के हाथ में पड़ जाय तो उन्हें हिस्टीरिया और मूर्छारोग इत्यादि हुआ करता है। यदि शुक्रवन्धी रेखा बुधपर्वत पर जाकर विवाहरेखा को काट दे तो पति-पत्नि में कलह उत्पन्न होती तथा दामपत्य-जीवन दुःखमय हो जाता है।



(१०३)

शनिमुद्रिका

शुक्रबन्धनी की तरह शनिमुद्रिका पहली और दूसरी उँगली के बीच से उदय होकर दूसरी और तीसरी उँगली के बीच अन्त होती है। यानी यह रेखा शनिपर्वत पर मध्यमा उँगली को घेरती हैं। यह रेखा भी हाथ में सदा अशुभ फल देती है। यह भाग्य-स्थान अर्थात् शनिपर्वत को इस प्रकार काट देती है कि व्यक्ति जिस काम को करने की इच्छा करता है उसे करने में असमर्थ हो जाता है। उसके मस्तिष्क में बड़े बड़े मन्सूबों रहते हुये भी अपने सिद्धान्त का इतना कच्चा होता है कि किसी भी काम को वह आधे ही रास्ते में छोड़ कर निराश हो बैठ जाता है। इस प्रकार शनिमुद्रिका सदैव अभाग्यसूचक ही हुआ करती है

रेखा विशेष

मणिवन्ध के ऊपर और पितृरेखा से कई रेखायें निकलकर चन्द्रपर्वत की ओर जाती हैं। इन्हें यात्रारेखा या छायापथरेखा कहते हैं। रेखा के नाम के आधार पर इनका गुण होता है।



(१०४)

यात्रा या छायापथ रेखायें यदि सम्पूर्ण और अविभक्त हों तथा, समानान्तर चन्द्रपर्वत पर गई हों तों व्यक्ति जलपथ द्वारा यात्रा करने वाला होता है। उसकी यात्रा लाभदायक भी होती है। वह व्यवसाय और सामाजिक कार्यों में लगता है। व्यक्ति विचारशील होता है तथा उसकी स्मरण-शक्ति बड़ी उत्तम होती है।



(१०५)

यदि छायापथ रेखायें शुक्रपर्वत पर गई हों तो व्यक्ति बहुभाषी होता है अपने विलोम नसल में उसका बड़ा आदर होता है। अर्थात् स्त्रियों द्वारा पुरुष का, यदि पुरुष के हाथ में यह रेखा है और पुरुषों द्वारा मान होता है स्त्री का, यदि स्त्री के हाथ में ऐसी रेखा है।



(१०६)

यदि छायापथ रेखायें बुध की ओर संकेत करती हों और उनपर तारे का चिन्ह हों तो व्यक्ति को अचानक सुख, सौभाग्य की प्राप्ति होती है। व्यक्ति की सारी अभिलाषायें पूर्ण होती रहती हैं और वह सन्तुष्ट रहता है।



(१०७)

यदि छायापथ रेखाओं का मार्ग अवरुद्ध सा हो या उसपर क्रास के चिन्ह हों तो व्यक्ति आलसी होता है और उसमें मानसिक दुर्बलता होती है। ऐसे व्यक्ति हताश और उन्मत्त से होते हैं। इन्हें एकान्तवास प्रिय होता है। आखों में तेज होता है। प्रायः सन्यासियों के ऐसी ही छायापथ रेखायें होती ।



(१०८)



(१०९)

यदि छायापथ रेखायें लहरियादार हों तो व्यक्ति चोर होता है। उसकी आदतें धोखा देने की और दूसरों को गुमराह कर देने की पड़ जाती हैं। वह मन्दबुद्धि होता है। उसमें चोरी की भी एक प्रधान आदत होती है।

यकृत या स्वास्थ रेखा

यकृतरेखा—एक छोटी सी रेखा पितृरेखा के अन्तिम शिव से निकलकर हथेली के मध्य में एक त्रिकोण सा बनाती है। यह रेखा सभी हाथों में नहीं होती तथा कुछ लोग बुध रेखा और इसे एक ही मानते हैं।



(११०)



(१११)

यदि किसी को यकृतरेखा सरल हो और दूसरी छोटी-छोटी रेखायें उसे काटती हों तो व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक रहता है। उसकी बुद्धि प्रबल होते हुये भी वह चंचलचित्त वाला होता है। किसी भी कार्य्य को करने में उसे कठिनाइयों का सामना करना ही पड़ता है।

यदि यकृतरेखा और मातृरेखा या भोग रेखा एक साथ मिलकर काँटे का आकार बनावें या एक त्रिकोण या चतुर्भुज बने तो व्यक्ति धन और सम्मान प्राप्त करने के लिये भले बुरे हर प्रकार की चेष्टाओं को उपयोग में लाता हैं। उसका जन्म उच्च-कुल में होता है। महान् योद्धा, उदार, दयालु व्यक्तियों के हाथ में ऐसा त्रिभुज या चतुष्कोण दिखाई देता है।



(११२)



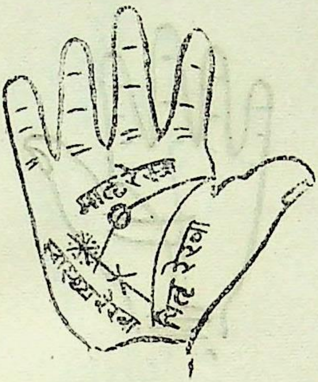
(११३)

उर्ध्वरेखा मातृरेखा और यकृतरेखा मिलकर यदि त्रिभुज का निर्माण करदें तो व्यक्ति सम्मोहन और गुप्तविद्या में निपुणता प्राप्त करता है। यदि इस प्रकार के त्रिभुज के मध्य में तारे का चिह्न हो तो व्यक्ति नेत्रविहीन होता है।

यदि यकृत या स्वास्थ्य रेखा पितृरेखा को स्पर्श करके बुधक्षेत्र में हो तो व्यक्ति दीर्घजीवी और व्यापार में उन्नति करनेवाला होता है।



(११४)



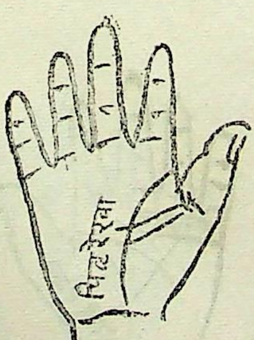
स्वास्थ्यरेखा के ऊपर यदि क्रास या तारे की चिह्न हो और मातृरेखा पर एक बड़ा विन्दु हो तो व्यक्ति अन्धा होता है। यदि स्वास्थ्यरेखा पर तारे का चिह्न हो तो व्यक्ति संतानहीन और पाण्डुरोग ग्रस्त होता है।

(११५)

स्वास्थ्य या यकृतरेखा यदि टुकड़ों से बनी हो तो व्यक्ति निद्रावस्था में रंगविरंगे स्वप्नों को देखता है यदि उसमें बहुत सी शाखें हों तो वह वृद्धावस्था में रोगी होता है।



(११६)



इस हाथ में एक या एक से अधिक रेखायें हो सकती हैं। ऐसी जितनी ही रेखायें पितृरेखा की ओर आती हैं। उतने ही बार और उसी वयमान पर जहाँ पितृरेखा को छूती हैं या काटती हैं, व्यक्ति को स्वजनों से पीड़ा या किसी स्वजन की मृत्यु अथवा मानसिक चिन्ताओं का ज्ञान होता है। यदि शुक्ररेखा गहरी हो और अंगूठे के पोर से चली हो तथा पितृरेखा को काटती हो तो निश्चय ही किसी वन्धु वान्धव अथवा निकटतम सम्बन्धी की मृत्यु होती।

(११७)

यदि शुक्ररेखा, ऊर्ध्व और पितृ दोनों रेखाओं को काटती हो तो सम्पत्ति और व्यापार इत्यादि के विषय में परिवार वालों से कलह और विवाद उत्पन्न होता है।



(११८)



(११९)

यदि छोटी शुक्ररेखायें पितृरेखा को काट रही हों तो यह व्यक्ति को अस्वस्थ करती हैं प्रायः उसी स्थान पर व्यक्ति को आघात पहुँचता है।

यदि बहुत बड़ी और गहरी शुक्ररेखा हो, जो शुक्ररेखा उच्चस्थान से निकलकर पितृरेखा को काटती हुई भोगरेखा तक पहुँचती है तो व्यक्ति को अधिक कामुक बनाती है और वह कई स्त्रियों का भोगी होता है। यदि यह रेखा बक्र हो तो व्यक्ति के विषय में सच्चाईयों को छिपा कर उसकी शादी होती है : उसका प्रेम शान्तिपूर्ण नहीं रहता।



(१२०)



(१२१)

शुक्ररेखा यदि विवाहरेखा को भी काटती हुई विवाहरेखा का स्पर्श करती है तो दाम्पत्य-जीवन सुखकर नहीं होता। यदि यह शुक्ररेखा विवाहरेखा को काटकर एक और शाख पैदा करदे तो सन्तानोत्पत्ति के बाद भी पति-पत्नी एक दूसरे को तलाक दे देते हैं।

राहुरेखा

राहुरेखा—यह रेखा राहुक्षेत्र से पैदा होकर पितृरेखा को काटती हुई मातृरेखा तक फैली हो तो उसे राहुरेखा कहते हैं। सभी अशुभ रेखाओं में से यह रेखा अत्यन्त ही अकल्याणकारी होती है। हथेली में यदि यह न पड़े तो बड़ा उत्तम है।



(१२२)



(१२३)

राहुरेखा जिसके हाथ में होती है भले ही वह व्यक्ति बुद्धिमान विद्वान या अपने हित अनहित को पहचानने वाला ही क्यों न हो वह सदा अपनी इच्छा के विरुद्ध दूसरों के प्रभाव से प्रभावित होकर विघ्न बाधाओं को बुलाता फिरता है। जिसके कारण उसका उद्यम, शान्ति और सुख इत्यादि नष्ट हुआ करता है। यदि अँगूठे में यव का चिह्न हो और शुभकर भाग्य रेखा हो तो राहुरेखा का कुप्रभाव नष्ट हो जाता है।

राहुरेखा यदि किसी दूसरी रेखा द्वारा कटी हो तो राहुरेखा के गुणों में बहुत कमी हो जाती है। उसकी उन्नति तथा उसके कार्य्यों की सिद्धि होती है।



(१२४)



(१२५)

राहुरेखा यदि भग्नीरेखा के साथ हो तो राहुरेखा का प्रभाव बढ़ जाता है और व्यक्ति को अशुभ फलों की प्राप्ति होती है।

प्रवृतिरेखा

प्रवृति रेख—मणिबन्ध के कुछ ऊपर शुक्र पर्वत और चन्द्रपर्व को जोड़ने वाली एक रेखा अर्ध-चन्द्राकार होती है या वही मणिबन्ध से चन्द्र क्षेत्र तक फैली होती है। इन दोनों प्रकार की रेखाओं को प्रवृत्तिरेखा कहते हैं। यदि यह सरल भाव में हों तो व्यक्ति विद्वान और वाग्मी होता है। रवि के उच्च स्थान से कोई रेखा अथवा स्वयं रवि रेखा ही प्रवृत्तिरेखा से मिले तो व्यक्ति के सुख सौभाग्य और ऐश्वर्य्य की वृद्धि होती है।



(१२६)



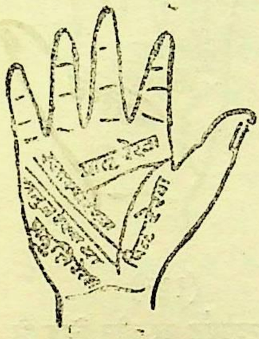
जिस व्यक्ति के हाथ में प्रवृत्ति रेखा और हाथ ही हथेली भी कठोर हो तो व्यक्ति में लम्पटता आती है। उसे शराब पीने की आदत पड़ती है। यदि हथेली बहुत मुलायम और चिकनी हो तो अफीम खाने की आदत पड़ती है।

(१२७)

यदि हथेली में प्रवृत्तिरेखा हो और मातृ रेखा भी चन्द्रक्षेत्र तक आई हो तथा मातृरेखा के अन्त में द्वीप का चिह्न हो तो व्यक्ति पागल होता है अथवा पागल तुल्य उसका आचार विचार एवं व्यवहार होता है ।



(१२८)



(१२९)

पितृरेखा से निकली बुध के उच्च स्थान तक फैली स्वास्थ्यरेखा की भगिनीरेखा को भी कुछ लोग प्रवृत्तिरेखा कहते हैं, मतानुसार ऐसा होने पर से व्यक्ति चतुर तथा राजनीति-विशारद होता है ।

दैवरेखा या प्रत्यक्ष दर्शनरेखा:—

चन्द्रक्षेत्र के निचले भाग से निकलकर धनुषाकार एक रेखा मंगल या बुधक्षेत्र तक फैलती है उसे दैव या प्रत्यक्ष-दर्शनरेखा कहते हैं यह रेखा देवाराधन की ओर ले जाती है तथा व्यक्ति को गुप्त विद्यादान देती है। थोड़ा पढ़ा लिखा भी यदि इस रेखा को पा जाय तो वह भविष्य वक्ता एवं वाक्सिद्ध होता है। इस रेखा को इस लिये प्रत्यक्ष-दर्शनरेखा भी कहते हैं। इस रेखा का सबसे बड़ा प्रभाव यही है कि जिसके हाथ में ऐसी रेखा होगी वह दूसरों के मनोभावों को ताड़ लेने में अद्भुत शक्ति रखेगा। किसी भी ज्योतिषी के हाथ में यह एक प्रकार से आवश्यक होती है ।



(१३०)



दैवरेखा यदि किसी व्यक्ति के दोनों हाथों में हो और पितृरेखा से एक रेखा निकल कर उस रेखा को काट दे तो व्यक्ति को अपने सगे संबन्धियों द्वारा गुप्तविद्या शिक्षा प्राप्त करने में बाधा पहुंचती है।

(१३१)

दैवरेखा यदि लहरियादार हो और मंगल-क्षेत्र तक फैली हो तो व्यक्ति स्नावयिक दुर्बलता के कारण हमेशा अस्थिरचित्त रहेगा।



(१३२)



यदि दैवरेखा के ऊपर चन्द्रपर्वत पर द्वीप चिह्न हो तो व्यक्ति मस्तिष्क का कमजोर होता है। निद्रावस्था में ही संसार का भ्रमण करने वाला होता है।

(१३३)

ज्ञानरेखा:—अँगूठे के मूल में जो पहली रेखा होती है उसका नाम ज्ञानरेखा है। इस रेखा से युक्त व्यक्ति विद्वान्, धार्मिक, उदार और सत्यप्रिय होता है



(१३४)



भोगरेखा और मातृरेखा के बीच के चौकोर स्थान से दूसरी किसी रेखा से अमिलित गुणन के चिह्न को अदृष्य गुणनरेखा कहते हैं। इस प्रकार का चिह्न रहने से व्यक्ति गुप्तविद्या धर्म

(१३५)

तत्व, ज्योतिष, अध्यात्मिकतत्व इत्यादि का प्रेमी होता है। ऐसा गुणन रहने से गुप्तविद्या द्वारा धनोपार्जन भी होता है तथा अभिज्ञता का फल ग्रन्थकार रूप में प्रकाशित करता हैं।



(१३६)

मंगलक्षेत्र के बीच गुप्त गुणन रहने से जातक की प्रवृत्ति परिवर्तनशील होती है परन्तु धनवान होता है। बृहस्पति के पर्वत के निकट रहने से वह अभिमानी और आत्म-प्रशंसक ही होता है लेकिन वह गुप्तविद्या-प्रेमी और दूसरों की भलाई में लगा रहने वाला होता है। यदि चौकोर के अन्दर गुणन भोगरेखा, मातृरेखा और ऊर्ध्वरेखा को स्पर्श न करे तो व्यक्ति की पदोन्नति होती है। धार्मिक व्यक्तियों द्वारा वह सम्मानित होता है। और इस प्रकार के चिन्ह वाले का रविस्थान यदि उच्च हो तो संचयी और अहंकारी होता है। शनिस्थान ऊँचा हो से विद्वेषभाव रखने वाला होता है। बृहस्पतिस्थान ऊँचा हो तो व्यक्ति धार्मिक और तत्वान्वेषी होता है तथा शुक्रस्थान उच्च होने से वह किसी सुन्दरी नारी के प्रेम में सदा उन्मत्त रहनेवाला होता है।

भ्राता भगिनी रेखा



(१३७)

अँगूठे के मुँह के निकट शुक्रक्षेत्र पर जितनी आड़ी रेखायें हैं वह व्यक्तिके भाई बहन की रेखायें होती हैं इनमें जितनी बड़ी और पुष्ट रेखायें हैं वे भाइयों की होती हैं तथा क्षीण रेखायें बहनों की होती हैं। यदि टूटी हुई हों तो भाइयों या बहनों की मृत्यु की ओर संकेत करती हैं। यदि यह रेखायें क्रमानुसार सूक्ष्म हों और कालेरंग की हों तो बहन भाई को कलंक होता है और उनकी मृत्यु होती है।

शुक्रक्षेत्र से कोई रेखा उठकर पितृरेखा को काटकर किसी ग्रहस्थान में जाये या किसी रेखा को स्पर्श करे या उसे खण्डित करे तो उसे भी प्रभावरेखा कहते हैं।



(१३८)

शुक्रस्थान से उठकर यदि पितृरेखा और ऊर्ध्वरेखा को काटकर चन्द्रस्थान पर जाय तो पुरुष किसी स्त्री द्वारा और यदि स्त्री है तो किसी भी पुरुष द्वारा कष्ट पाती है, जिससे भाग्य को क्षति पहुँचती है। यदि शुक्रस्थान से उठकर पितृरेखा को काटती हुई ऊर्ध्वरेखा को काट दे या स्पर्श करे अथवा पितृरेखा से उठकर दैवरेखा को काटे तो व्यक्ति की भावी उन्नति को अपने ही आत्मीय और बन्धुओं द्वारा बाधा प्राप्त होती है।



(१३९)

शुक्रस्थान से उठकर यदि कोई रेखा बृहस्पति क्षेत्र पर गमन करे तो व्यक्ति स्थिर, धीर उदार, उच्चाकांक्षी शान्तिप्रिय और धनवान हुआ करता है यदि वह रेखा शनि के उच्चस्थान तक जाय तो किसी वाहन द्वारा गिरने अथवा चौपाये द्वारा चोट खाने का संकेत मिलता है। शुक्रस्थान से यदि कोई रेखा रविस्थान तक जाती है तो व्यक्ति को आत्मीय और बन्धुबान्धवों की सहायता मिलती है जिससे यश और पर्य्याप्त धन की प्राप्ति होती। यदि ऐसी रेखा बुधस्थान पर जाय तो व्यक्ति विज्ञानशास्त्र में पन्डित और व्यापार में पर्य्याप्त धन प्राप्त करता है। शुक्र से निकली यह रेखा यदि मंगल पर जाती है तो व्यक्ति



(१४०)

का धन नाश और स्त्री हानि होती है। शुक्रस्थान से चन्द्रस्थान तक ऐसी रेखा यदि कटी नहीं हो तो विदेशगमन कराती है।

अंगूठे के मूलसे उठकर यदि कोई सरलरेखा शुक्र-क्षेत्र के ऊपर से जाकर पितृरेखा को स्पर्श करती है तो व्यक्ति का विवाह शुभकर होता है। शुक्रस्थान पर कई खड़ी रेखायें यदि पितृरेखा की ओर आ रही हों और वे टूटी-फूटी या छिन्न-भिन्न हैं तो उसका दाम्पत्य जीवन सुखकर नहीं होता।



(१४१)

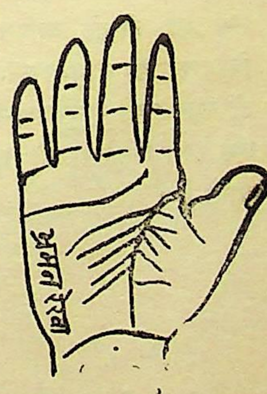
परधन प्राप्तिरेखा



(१४२)

पितृरेखा के समानान्तर इसकी अनुगामीरेखा को परधन प्राप्तिरेखा कहते हैं। इस रेखा के रहने से व्यक्ति धनवान दीर्घायु और उत्तराधिकार के रूप में दूसरे की सम्पत्ति या लाटरी आदि में धन प्राप्त करता है।

पितृरेखा से निकलकर चन्द्रक्षेत्र में जाने वाली छोटी-छोटी रेखायें होती हैं उन्हें भ्रमण रेखा कहते हैं यदि ये रेखायें पितृरेखा के दोनों ओर हों तो व्यक्ति को देश-भ्रमण का सौभाग्य प्राप्त होता है। तथा ऐसा व्यक्ति जीवन भर देश-विदेश में घूमता रहता है और उसके जीवन में अनेकों परिवर्तन होते हैं।



(१४३)



(१४४)

पितृरेखा से निकली हुई भ्रमणरेखा के एक किनारे पर यव या द्वीप का चिह्न हो तो व्यक्ति का भ्रमण निरर्थक् होता है। भ्रमणरेखा पर चौकोर (वर्ग) का चिह्न होने से भ्रमणकाल में व्यक्ति के प्राणनाश से रक्षा होती है। यदि भ्रमणरेखा चन्द्रक्षेत्र को पार कर गई हो या चन्द्रक्षेत्र के एक किनारे पर गोलाकार शाखायुक्त रेखा हो तो भ्रमणकाल में व्यक्ति की मृत्यु कष्टों से होती है।



(१४५)

यदि मणिबन्ध से कोई रेखा शुक्रक्षेत्र को पार करती हुई बृहस्पति के उच्च स्थान पर गई हो तो व्यक्ति को बहुत दिनों तक जल भ्रमण करना पड़ता है, साथ ही यदि राहुक्षेत्र से एक रेखा निकल कर अधिक से अधिक ऊपर शनिपर्वत पर जा रही हो तो व्यक्ति जल-भ्रमण से नहीं लौट पाता। मणिबन्ध से निकली एक रेखा चन्द्र में गमन करे तो भी व्यक्ति समुद्र-यात्रा करता है। मणिबन्ध से निकली एक सरल रेखा बुधक्षेत्र तक गई हो तो व्यक्ति को भ्रमण के समय विपदाओं का सामना करना पड़ता है। मणिबन्ध से निकली हुई एक रेखा से मिले तो व्यक्ति की मृत्यु जल-भ्रमण में होती है साथ ही यदि शनिक्षेत्र से निकलकर एक रेखा पितृरेखा को छूती हो या उसे काटती हो तो व्यक्तिके माथे में चोट आती है।

विवाह रेखा

कनिष्ठा उँगली के आधार और भोगरेखा के बीच में बुधपर्वत के बगल से निकली हुई छोटी रेखा को विवाहरेखा कहते हैं। यह रेखा यदि

एक सीधी और स्वच्छ रेखा है तो विवाह आनन्द-प्रद होता है। यदि विवाहरेखा की भगिनीरेखा भी साथ में हो तो जितनी रेखायें हैं उतने विवाह होते हैं या उतनी स्त्रियों से सम्बन्ध होता है। यदि किसी स्त्री के हाथ में भी ऐसी रेखा हो तो एक से अधिक विवाह नहीं होता।



(१४६)

हथेली के विभिन्न स्थानों में अंकित एक या एक से अधिक रेखा द्वारा विवाह के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है। परन्तु कनिष्ठा के आधार और भोगरेखा के बीच जो बुधपर्वत पर की रेखा है वही प्रधान होती है, इस रेखा के स्पष्ट और गहरी रहने से विवाह अवश्य होता है। अस्पष्ट, छोटी या खण्डित विवाहरेखा से व्यक्ति के प्रणय सम्बन्ध में आशक्ति का कारण मानी जाती है।



(१४७)

विवाहरेखा में यदि द्वीप का चिन्ह हो तो व्यक्ति का दाम्पत्य-जीवन अशान्तिपूर्ण और कलह झगड़ों से भरा हुआ होता है।



(१४८)



(१४९)

विवाहरेखा का अन्तिम भाग यदि कनिष्ठा के मूल की ओर मुड़ा हुआ हो तो व्यक्ति का विवाह नहीं होता और वही रेखा यदि भोगरेखा की ओर मुड़ गई हो तो दम्पति में से एक की मृत्यु होती है। अर्थात् स्त्री के हाथ में इस प्रकार मुड़ी हुई विवाहरेखा है तो पुरुष की और तुरुष के हाथ में है तो स्त्री की।

यदि विवाहरेखा दो शाखों में हो और उसकी एक शाख मुड़ कर भोगरेखा को काट दे या छूले तो ऐसी अवस्था में स्त्री पुरुष में विवाह विच्छेद [तलाक] हो जाता है।



(१५०)



(१५१)

विवाहरेखा भोगरेखा की दूरी और निकटता के अनुसार ही अधिक या कम अवस्था में व्यक्ति का विवाह होगा। यह निर्णय किया जाता है, इसी प्रकार यदि विवाहरेखा भोगरेखा से थोड़ी दूरी पर है तो व्यक्ति की शादी कम उम्र में ही होगी।

यदि किसी की विवाहरेखा उसके सूर्यरेखा को स्पर्श कर लेती है तो व्यक्ति की मान-प्रतिष्ठा और धन में विवाह के कारण वृद्धि होती है। यदि विवाहरेखा सूर्यरेखा को काट दे तो व्यक्ति का वैवाहिक-जीवन अशान्त हो जायगा अथवा विवाहरेखा की कोई शाख ही निकलकर रविरेखा को काटे और उस पर द्वीप का चिह्न हो तो व्यक्ति की मान, प्रतिष्ठा तथा धन का नाश होगा।



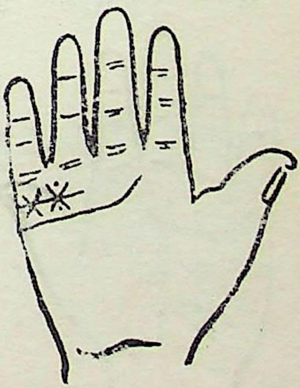
(१५२)



(१५३)

यदि विवाहरेखा में से बहुत सी पतली-पतली रेखायें भोगरेखा की ओर हो तो व्यक्ति का स्वास्थ्य बहुत खराब रहा करता है ऐसी संज्ञा मिलती है।

यदि विवाहरेखा पर क्रास या तारे का चिह्न हो तो पति पत्नी के बीच किसी की भी आकस्मिक अपाघात से मृत्यु होगी। यह चिह्न जिसके हाथ में वर्तमान होगा उसी की मृत्यु होती है।



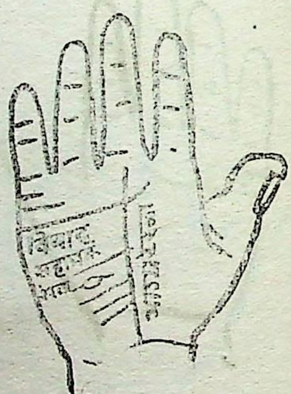
(१५४)



(१५५)

यदि विवाहरेखा बुधपर्वत पर किसी खड़ी-रेखा द्वारा कट गई हो तो व्यक्ति का विवाह उसके अभिभावकों की अनिच्छा से होती है।

यदि कोई रेखा या कई रेखायें चन्द्रपर्वत से निकलकर ऊर्ध्वरेखा या भाग्य रेखा का स्पर्श करे तो व्यक्ति की शादी उस अवस्था में होगी जहाँ पर की किरणरेखा भाग्यरेखा से मिलती है। यह विवाह की सहायक रेखायें बोली जाती है। यदि किरणरेखा के मिलने के बाद भाग्यरेखा अधिक पुष्ट और स्पष्ट होकर गई हो तो विवाह सुखद होता है और ऐसा ज्ञात होता है कि विवाह के कारण व्यक्ति के भाग्य में वृद्धि हुई है तथा किरणरेखा मिलने के बाद ऊर्ध्वरेखा पतली होगई या छिन्न-भिन्न दशा को प्राप्त हो तो समझना चाहिये कि विवाह के कारण भाग्य में कमी हो गई है। किरणरेखा में यव या द्वीप का चिह्न चन्द्रपर्वत रहने से व्यक्ति के विवाह में बाधा पहुंचती है तथा बीते हुये जीवन के कलंक की कहानी प्रकट होने से बदनामी होती है।



(१५६)



(१५७)

चन्द्रक्षेत्र से निकली एक रेखा भाग्यरेखा से छू जाने पर तो अच्छा है परन्तु यदि किरणरेखा भाग्यरेखा को काट देवे तो व्यक्ति का प्रणय सुख टूटता है।



विवाहरेखा के छिन्न-भिन्न होने से दम्पति के बीच कलह, सम्बन्ध-विच्छेद और पति-पत्नी में किसी की हानि होने का लक्षण होता है। छिन्न-भिन्न या विभक्त-रेखायें यदि आपस में एक दूसरे की ओर फैली हों तो कलह या सम्बन्ध विच्छेद नहीं होता।

(१५८)

अंगूठे के दूसरे पोर से निकलकर पितृरेखा और भाग्यरेखा को काटने वाली रेखा यदि हाथ में पड़ी हो तो व्यक्ति का विवाह दुश्चरित्रा नारी के साथ होता है किन्तु उसके साथ ही यदि ऊर्ध्वरेखा या भाग्यरेखा के अन्त में वर्ग का चिह्न हो तो इस प्रकार का विवाह होने से व्यक्ति बच जाता है।



(१५९)



शुक्रपर्वत के उच्च स्थान से निकलकर यदि कोई रेखा बुधपर्वत तक जाय, तो पुरुष के हाथ में इस प्रकार की रेखा होने से पत्नी-वियोग और स्त्री के हाथ में होने से पति-वियोग होता है।

१६०)



(१६१)

यदि किसी का बृहस्पतिस्थान उच्च हो और विवाहरेखा पर त्रिकोण या चतुष्कोण का चिह्न हो तो व्यक्ति को विवाह द्वारा धन की प्राप्ति और स्त्री के भाग्य से व्यक्ति भाग्यवान होता है। साथ ही यदि विवाहरेखा पर गुण का चिह्न हो तो पत्नी विदुषी हुआ करती है।

यदि हाथ में मातृरेखा के साथ दो भग्नीरेखा हों और हथेली के मध्य तक गई हों तो उस व्यक्ति के कई एक विवाह अथवा प्रणय होते हैं।



(१६२)

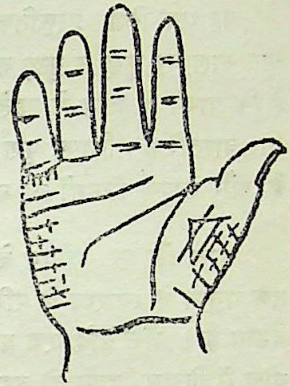
—संतानरेखा—



(१६३)

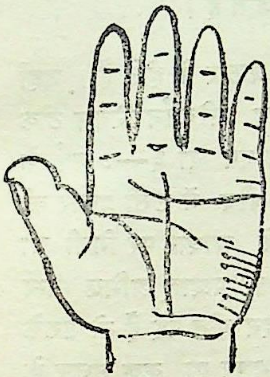
बुधक्षेत्र पर विवाहरेखा से निकलकर पतली-पतली बाल की तरह खड़ी रेखायें होती हैं यही संतान रेखायें बोली जाती हैं परन्तु मतान्तर से भोगरेखा और मणिबन्ध के बीच का भाग जिस पर चन्द्र और मंगलपर्वत स्थित होते हैं उसमें जितनी सरल और दीर्घ रेखायें हैं उतने ही पुत्र माने जाते हैं। अस्पष्ट क्षीण और छोटी रेखाओं को कन्या रेखा कहा जाता है।

क्षीण कटी हुई या भग्न सन्तान रेखा रहने से उतनी सन्तानें व्यक्ति की मर जाती हैं। अतिक्षीण और अस्पष्टरेखा स्त्री के गर्भपात और जनन-शक्ति को कमजोरी बताती है।



(१६४)

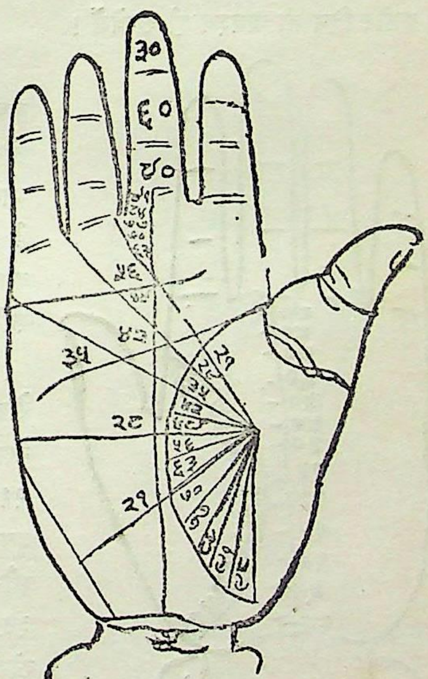
सुस्पष्ट और बहुत सी रेखायें जिस स्त्री के हाथ में होगी वह बहुप्रसवनी होती है तथा प्रसव के समय उन्हें अधिक कष्ट भी नहीं होता। सन्तानरेखा अत्यधिक पतली होती हैं। कभी कभी गिनने में भी नहीं आती। तथा जिसकी शादी नहीं हुई है उनके हाथों में भी दिखाई देती हैं। इस कारण इस रेखा के विषय से पढ़ते समय सावधानी की आवश्यकता होती है।



[१६५]

सप्तवर्षीय नियम

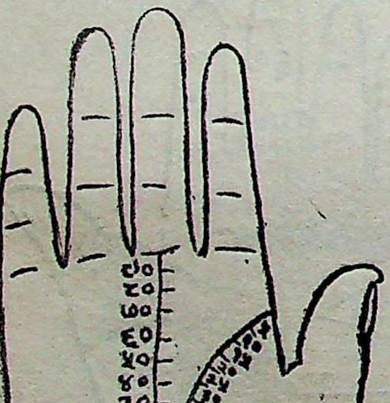
सप्तवर्षीय नियम के द्वारा रेखाओं पर के चिन्हों के अनुसार कौन सी घटना किस समय पर घटेगी निकाला जाता है इसका आधार हमारे पुराने ग्रन्थ हैं। इस नियम के द्वारा खास खास घटनाओं या परिवर्तनों की तिथि चाहे वह बीती हों या आगे आने को हैं निकाली जा सकती हैं।



(१६६)

यह एक सिद्ध प्राकृतिक नियम है कि विश्व के सभी प्राणियों का शरीर हर सात साल पर कुछ न कुछ बदलता रहता है। आयुर्वेदीय विज्ञान द्वारा हम पढ़ते हैं कि प्राणी के जन्म के पहले भी उसकी सात शकलें बनती बदलती है। मनुष्य का वास्तविक मस्तिष्क पूर्ण तथा बढ़ने के पहले क्रमानुसार सात शकल बनाता है और सम्पूर्ण नियमों को बदलने लिये सात साल लग जाते हैं।

खास तौर पर जीवन के अंतर सात वर्ष करीब एक प्रकार के होते हैं। जहाँ तक मनुष्य के स्वास्थ्य के परिवर्तन का सम्बन्ध होता है, यह परिवर्तन नियम ठीक बैठता है। जैसे यदि एज बच्चा प्रथम सप्तवर्ष के अन्तिम वर्ष या ६—७ वर्ष के बीच में विचार हुआ तो वह निश्चय ही २०–२१ वर्ष के बीच में उसी प्रकार की अस्वस्थता प्राप्त करेगा। इसी प्रकार और बातें रेखाओं के आधार पर गिनी जा सकती हैं। ठीक यों ही भाग्य में भी एक सात साल के अन्तर पश्चात् अभिन्न भाग्य का आ जाना पाया जाता है। यदि सात साल बुरे दिन दिन बीत रहे हैं तो उसके बाद सात साल आराम के दिन आते हैं जिसे हम अच्छा भाग्य या कुछ सुधार के दिन कहते हैं परन्तु इसके बीतने के बाद यदि बुरी किस्मत नहीं आई तो कम कठोर दिन तो अवश्य ही आवेगें।



(१६७)

हथेली का केन्द्र मनुष्यके जीवन का मध्यभाग्य यानी ३५ वर्ष का होता है। खास तौर पर यह बिन्दु वहाँ होता है जहाँ भाग्यरेखा [ऊर्धरेखा] मातृरेखा को काटती है। इसीलिये मंगलक्षेत्र को २१ से ३५ वर्ष वाला भाग कहा जाता है। जीवन-युद्ध के कठिन काम इसी भाग के मत्थे पड़ते हैं।

मणिबन्ध से शुक्रकेन्द्र तक यदि एक रेखा खींची जाय तो जहाँ यह भाग्य रेखा को काटेगी वह वर्षमान व्यक्ति का २१ वाँ वर्ष होगा तथा उस केन्द्र से दूसरी रेखा यदि बुधस्थानतक खींची जाय और जहाँ वह भोगरेखा को काटेगी वह ३५ वर्ष का वर्धमान होगा। इस प्रकार के कोण को यदि समद्विभाग किया जाय तो जहाँ तीसरी रेखा भाग्यरेखा को काटेगी वह २२ वर्ष होगा।

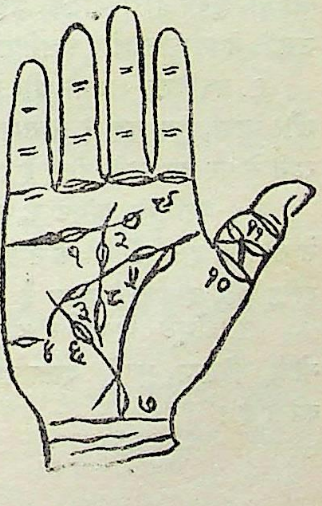
दूसरी प्रणाली यह कि रेखा को उसके निकास स्थान से अन्त तक किसी पतली डोरी से नाप लें और उसे २० भाग कर डालें, उनसे पाँच-पाँच वर्ष का विभाग हो जायगा और इस प्रकार के विभागों पर जो चिन्ह पड़े उस वर्षमान में घटना का फल होगा। हस्तरेखा से बिलकुल ठीक-ठीक तिथि का बोध कर लेना कठिन है साल छः माह का अन्तर पड़ता है।

इसी प्रकार विवाहरेखा से यह निर्णय किया जाता है कि व्यक्ति का विवाह कब होगा इसके लिये भोगरेखा से कनिष्ठा उँगली के मूल तक की लम्बाई नाप कर उसे ७५ वर्ष की संज्ञा देकर पाँच-पाँच साल का विभाग कर ले जिस वयमान पर विवाहरेखा चिन्हित हो वही विवाह समय होगा।

स्वतन्त्र चिन्ह

यव या दीप

हाथ की उँगलियों के अतिरिक्त हथेली में अन्यत्र रहनेवाले यवचिन्ह शुभकर नहीं होते। इसके उत्पत्ति स्थान से अशुभ की सूचना और शेषभाग के निर्दिष्ट वय में अशुभ से मुक्ति हुआ करती है। यवचिन्ह युक्त स्थान के निर्दिष्टकाल तक इसका फलभोग होता है। चिन्ह के किसी रेखा के ऊपर रहने से व्यक्ति की प्रवृत्ति किसी घृणितकार्य में पैदा होती है और वंशगत पीड़ा बढ़ती है।



(१६८)

१. यवचिन्ह भोगरेखा या हृदयरेखा के ऊपर रहने से तथा बृहस्पतिस्थान ऊँचा होने से व्यक्ति व्यभिचारी और उसके हृत्पिन्ड में रोग पैदा होता है।

२. यवचिन्ह शनिरेखा या ऊर्ध्वरेखा के मध्यभाग के ऊपर रहने से व्यक्ति किसी नारी द्वारा प्रलोभित हुआ करता है।

३. यवचिन्ह मंगल के स्थान में मातृरेखा या मस्तकरेखा के ऊपर रहने से व्यक्ति की हत्या की इच्छा प्रबल हुआ करती है।

४. यवचिन्ह मंगल के स्थान के बाहरी भाग में रहने से व्यक्ति दुर्बल और दुरभिसंधिपूर्ण होता है।

५. यदि यवचिन्ह मातृरेखा के ऊपर हो और बृहस्पति—स्थान उच्च हो तो व्यक्ति वंशगत शिरदर्द से पीड़ित और दिवालिया होता है। उसमें पागलपन भी होता है।

६. स्वास्थरेखा के ऊपर यवचिन्ह और उसके साथ चन्द्र, बृहस्पति और शुक्र प्रबल होने से व्यक्ति गुप्तविद्या में पारदर्शिता लाभ करता है और स्वप्नचन्द्र अर्थात् सपने में अनेक अलौकिक वस्तुओं का दर्शन तथा अनेक स्थानों में भ्रमण-कारी होता है। यवचिन्ह स्वास्थ्यरेखा के ऊपर रहने से, साथ ही बृहस्पतिस्थान ऊँचा रहने से व्यक्ति चोर और ठग होता है।

७. यवचिन्ह वृतिरेखा के प्रारम्भ में रहने से व्यक्ति के जन्मकाल में कोई दुर्घटना हुआ करती है।

८ यवचिन्ह भाग्यरेखा के ऊपर और मातृरेखा के नीचे रहने से विजातीय स्त्री या पुरुष द्वारा जातक प्रलुब्ध [दत्तक] और प्रभावित होता है। उसकी उन्नति में व्याघात और फलनेवाले कर्मों का नाश हुआ करता है।

९. यवचिन्ह तर्जनी और मध्यमा के मूलदेश में रहने से व्यक्ति सुखी, धनी और भार्या, पुत्र, गृहादि से सम्पन्न होता है एवं अनामिका में उत्तम रूप से अंकित रहने से पर धन प्राप्ति होती है।

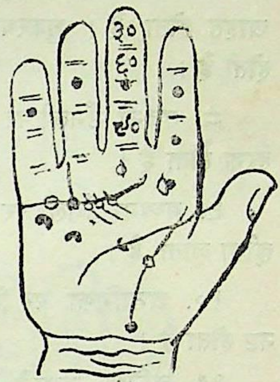
१०. यवचिन्ह अंगूठे के मूल में रहने से अथवा मध्यरेखा के अन्तर्गत होने से साथ ही इस उँगली के ताम्रवर्ण होने से व्यक्ति धनीमानी, ज्ञानी, समाज में वरिष्ठ और दीर्घजीवी होता है।

११. अँगूठे के गर्भ में दो यवचिन्ह रहने से व्यक्ति मातृ, पितृ भक्त, आत्मा-न्वेषी, विद्वान, सुखी, दाता यशस्वी और ज्योतिषादि, सर्पविद्या—विशारद हुआ करता है।

बिन्दु (Dots)

हथेली में काला या सादा दाग या बिन्दुचिन्ह रहने से व्यक्ति कष्ट भोग करता है। यह चाहे किसी भी रेखा पर हो, उससे शरीर के उसी भाग का कष्ट समझा जाता है।

१—सफेद रंग का बिन्दुचिह्न गड्ढे की तरह होता है। यह शुभ फल दिया करता है। सफेद रंग का चिह्न मातृरेखा पर होने से व्यक्ति के मस्तक में चोट लगती है। काला या नीलाचिह्न मातृरेखा पर होने से जातक को स्नावयिक दुर्बलता पैदा करती है।



(१६६)

२. पितृरेखा पर नीलाचिह्न रहने से शत्रु द्वारा व्यक्ति के प्रति विष-प्रयोग होना समझा जाता है। ऐसा चिह्न दोनों हाथों में होने से विष-प्रयोग से ही मृत्यु होती है लेकिन एक हाथ में होने से विष स्वयं पीने पर भी जीवनरक्षा होती है।

३. भोगरेखा के ऊपर एक सफेद चिह्न रहने से व्यक्ति चाहे स्त्री हो या पुरुष प्रेमी, पात्र-पात्री पाने में सफल होता है किन्तु भोगरेखा एक से अधिक विन्दुयुक्त और छोटी छोटी रेखाओं द्वारा खण्डित होने से जातक प्रेम प्राप्त करने में हताश और दुःख प्राप्त करता है तथा स्नेह-भाजन और अपने प्रेमियों पर अधिक विश्वास करने के कारण धोखा खाता है।

४. विन्दुचिह्न पितृरेखा के सूक्ष्म अंश के किनारे पर रहने से एकाएक मृत्यु होना बताती है।

५. विन्दुचिह्न रवि और भोगरेखा के संयोग-स्थल में रहने से जातक को नेत्ररोग होता है यहाँ तक कि अन्धा भी हो सकता है।

६. विन्दुचिह्न बुधस्थान के नीचे मंगल के स्थान में एक हाथ में रहने से जमीन सम्बन्धी मुकदमेबाजी में धन नाश होता है। ऐसा चिह्न दोनों हाथों में रहने से सारी भूसम्पत्ति नष्ट हुआ करती है।

७. बिन्दुचिह्न वृहस्पतिस्थान पर रहने से सम्मान और धर्महानि तथा दुर्भाग्य पैदा होता है। रविस्थान में रहने से सम्मान और धनहानि, समाज से बहिष्कृत, शिरदर्द इत्यादि होकर रहता है। शनिस्थान में रहने से जातक सहसा विपद् में पड़ता है और अभागा होकर दरिद्रता से बहुत कष्ट भोगता है। चन्द्र स्थान में रहने से दरिद्रता, दुःखपीडित और स्नावयिक-दुर्बलता प्राप्त करता है।

मंगलस्थान में रहने से मुकदमें में धननाश और लड़ाई झगड़े में शत्रु द्वारा आहत होता है। शुक्रस्थान में रहने से शुक्र या वीर्य्य-सम्बन्धी बिमारियाँ होती है।

८. तर्जनी उँगली पर विन्दुचिह्न रहने से किसी भी ब्राह्मण चोर द्वारा धन हरण होता है।

९. मध्यमा उँगली पर होने से किसी विदेशी या अन्य धर्मावलम्बी द्वारा धन छीना जाता है।

१०. अनामिका पर बिन्दुचिह्न रहने से किसी यवन द्वारा जातक का धन नष्ट होता है।

११. कनिष्ठा उंगली पर विन्दुचिन्ह रहने से जातक के शरीर पर धन अर्थात् मनीबेग, घड़ी छाता अंगूठी, अलंकार इत्यादि चोरी चला जाता है।

इस प्रकार के बिन्दुचिन्ह या काले दाग का संस्थान देखकर निम्नलिखित रूप में उसका वयमान् निर्धारित करना चाहिये।

उंगली के अग्रभाग से आरम्भ करके प्रथम गाँठ तक ३० वर्ष, दूसरी गाँठ तक ६० वर्ष और तीसरी गाँठ या उंगली के जड़तक ९० वर्ष मानना चाहिये।

वृत्त चिन्ह (Circle)



(१७०)

रविक्षेत्र के अलावे अन्य ग्रह के क्षेत्र या रेखादि के ऊपर वृत्त का चिन्ह अशुभकर है।

१. वृत्तचिन्ह रवि के स्थान में रहने से जातक की देश विदेश से सुख्याति, सम्मान और धनोन्नति होती है।

२. चन्द्रस्थल में एक वृत्तचिन्ह रहने से जातक के डूब मरने की संभावना रहती है। दो रहने से अन्धा होने का भय होता है।

३. वृत्तचिन्ह जिस जिस ग्रहस्थान में रहें, जातक की उसी ग्रह-सम्बन्धी उन्नति में बाधा उपस्थित होती है।

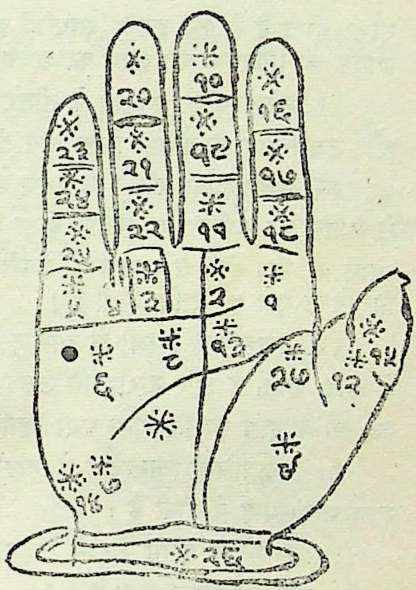
४. वृत्तचिन्ह के हृदयरेखा या भोगरेखा पर रहने से जातक का हृदय दुर्बल होता है।

५. वृत्तचिन्ह मातृरेखा पर रहने से जातक नेत्रविहीन होता है।

६. वृत्तचिन्ह अन्यान्य रेखाओं पर रहने से रेखाओं के उस गुणों की अवनति हुआ करती है।

१. तारा या नक्षत्रचिन्ह बृहस्पति के उच्च स्थान में रहने से जातक की उच्च अभिलाषाओं की पूर्ति होती हैं और क्षमता, सम्मान, स्नेह, प्रेम और सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

२. ताराचिन्ह शनिस्थान में रहने से व्यक्ति भयानक प्रकृतिवाला और हत्यारा होता है। यदि यही चिन्ह दोनों हाथों के शनिस्थान में रहे और इसके साथ ही बृहस्पति का स्थान नीचा और मंगल का स्थान ऊँचा रहे तो व्यक्ति को हत्या के अपराध में मृत्युदण्ड प्राप्त होगा। शनिक्षेत्र के कोन के भीतर यह चिन्ह रहने से हत्या के अपराध में व्यक्ति किसी भी प्रकार के दण्ड से मुक्ति पाता है।



[१७१]

३. नक्षत्रचिन्ह रविस्थान से पड़ने से साथही रविस्थान के नीचा होने से जातक अनेक उद्यम और परिश्रम से ख्याति प्राप्त करता है, एवं धनी होता है लेकिन सुख और स्वच्छन्दता-विहीन होता है।

४. तारा का चिन्ह रविस्थान में विना कटा रहने से और उस स्थान में रविरेखा तथा अन्य दो तीन रेखायें रहने से जातक बुद्धि और परिश्रम के बल से सुयश और सौभाग्य लाभ करता है।

५. नक्षत्रचिन्ह बुधस्थान में रहने से जातक लोभी, नीचाशय मिथ्यावादी, विश्वासघातक और चोर होता है।

६. नक्षत्रचिन्ह मंगल या राहुस्थान में दोनों हाथों में हो तो व्यक्ति आत्महत्या करता है।

७. नक्षत्रचिन्ह चन्द्रस्थान में रहने से जातक भलाई बुराई दोनों स्वभाव का होता है तथा वह सर्वदा चिन्तित रहनेवाला होता है।

८. यदि नक्षत्रचिन्ह चौकोन आकार का हो और चन्द्रस्थान उच्च हो तथा मातृरेखा चन्द्रक्षेत्रतक फैली हो तो जातक जल में डूबकर आत्महत्या करता है।

९. नक्षत्र चिन्ह शुक्रस्थान में रहने से किसी सुन्दरी नारी द्वारा जातक का दुर्भाग्यसाधन होता है।

१०. नक्षत्रचिन्ह मध्यम उँगली के प्रथम पोर में रहने से जातक का धन नाश होता है लेकिन इसके साथ ही बृहस्पति और रविस्थान के उच्च होने से जातक को एकाएक धन लाभ का अवसर प्राप्त होता है।

११. नक्षत्रचिन्ह मध्यमा के तीसरे पोर में होने से जातक हत्याकारी होता है और उससे यदि ऊर्ध्वरेखा मिल जाय तो जातक की लज्जाजनक मृत्यु होती है।

१२. नक्षत्रचिन्ह अँगूठे के प्रथम और द्वितीय पर्व में सम्भोग स्थल में होने से जातक का अप्रीतिकर विवाह होता है। किन्तु उक्त चिन्ह के साथ बृहस्पति स्थान का उच्च होने से जातक का उपरोक्त दोष दूर होता है और भविष्य में उसे विवाह से सुख की प्राप्ति होती है।

१३. नक्षत्रचिन्ह हथेली के चौकोर स्थान में रहने से जातक की साहित्यसेवा में क्षति होती है और नारीजाति उसपर खिलौने जैसा अधिकार रखती है यानी वह स्त्री के हाथ का खिलौना बना रहता है लेकिन उसे धन का लाभ होता है।

१४. नक्षत्रचिन्ह चन्द्रक्षेत्र में जल भ्रमण रेखा के ऊपर रहने से जातक की मृत्यु जलभ्रमण में होती है।

१५. अँगूठे के प्रथम पोर में नक्षत्रचिन्ह रहने से जातक सौभाग्यशाली दाता, सच्चरित्र और न्यायप्रिय होता है।

१६. तर्जनी के प्रथम पोर में नक्षत्रचिन्ह रहने से जातक सौभाग्यशाली, दाता, सच्चरित्र और न्यायप्रिय होता है।

१७. तर्जनी के दूसरे पोर में नक्षत्रचिन्ह रहने से जातक सच्चरित्रवान होता है तथा यदि हाथ में अशुभ चिन्ह हों तो वह चरित्रहीन भी होता है।

१८. तर्जनी के दूसरे पोर में नक्षत्रचिन्ह रहने से जातक सच्चरित्रवान होता है। तथा यदि हाथ में अशुभ चिन्ह हों तो वह चरित्रहीन भी होता है।

१८. तर्जनी के तृतीय पोर में नक्षत्रचिन्ह रहने से यदि और लक्षण अच्छे हैं तो व्यक्ति चरित्रवान् अन्यथा चरित्रीन होगा।

१९. मध्यमा के द्वितीय पोर में नक्षत्रचिन्ह रहने से जातक दैवी दुर्घटना से मृत्यु प्राप्त करता है।

२०. अनामिका के पहले पोर में नक्षत्रचिन्ह रहने से जातक प्रबल शक्ति वाला ज्ञानी और प्रतिभाशाली होता है।

२१. अनामिका के दूसरे पोर में नक्षत्रचिन्ह रहने से जातक यशस्वी, मधुर-भाषी, दयालु, सुशील और चतुर होता है।

२२. अनामिका के तीसरे पोर में नक्षत्रचिन्ह रहने से जातक धी शक्ति सम्पन्न कौतुक प्रिय संगीतज्ञ, अभिनेता सुकवि और प्रेमिक सम्पन्न होता है।

२३. कनिष्ठा पहले पोर में नक्षत्र चिन्ह हो तो व्यक्ति वैज्ञानिक देशसेवक जनप्रिय तथा वाग्मी होता है।

२४. कनिष्ठा के दूसरे पोर में नक्षत्रचिन्ह रहने से व्यक्ति अविवेचक, असंयमी कुत्सितभाषी और दुष्टबुद्धि होता हैं।

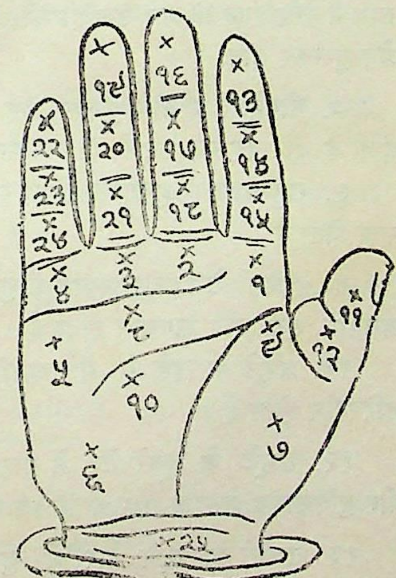
२५. कनिष्ठा के तीसरे पोर में नक्षत्र हो तो जातक साहित्य, कला विद्या का अनुरागी और सुवक्ता होता है।

२६. मणिवन्ध की तीनों रेखाओं के बीच नक्षत्रचिन्ह होने से जातक दूसरे का धन प्राप्त करता है चिन्ह स्पष्ट न होने से वह लम्पट होता है।

२७. अँगूठे के मूल और पितृरेखा के योग स्थान में नक्षत्रचिन्ह रहने से जातक शिरोवेदना से पीड़ित कार्य में असफलता, विघ्नवाधाओं की अधिकता में जीवन यापन करता है।

गुणन चिह्न Cross.

वृहस्पति स्थान के अतिरिक्त अन्य अन्य स्थान में गुणन चिन्ह रहने से अशुभ फलदायक होता है।



१. वृहस्पतिस्थान में गुणन चिन्ह होने से व्यक्ति का विवाह अत्यन्त सुखकर होता है। इसके साथ यदि रविरेखा और ऊर्ध्वरेखा चन्द्रक्षेत्र से गुजरे तो यह विवाह और सुख तथा समृद्धि बढ़ानेवाला होता है।

२. गुणन चिन्ह शनि के स्थान में रहने से जातक गुप्त विद्या का प्रेमी तथा धर्म के विषय में पागल सा होता है। वह व्यक्ति क्रमशः गम्भीर होता जाता है।

३. रवि के स्थान पर गुणन चिन्ह रहने से विचारों और शिल्पविद्या में जातक को भ्रम पैदा होता है और साथ ही रवि का स्थान उच्च होने से उसके विद्या, यश और धनलाभ का योग होता है।

४. बुधस्थान पर गुणनचिन्ह होने जातक शठ, मिथ्यावादी अविश्वासी और चोर होता है। बुधस्थान उच्च होने से, शुभदायी रेखाओं के रहने से व्यक्ति चतुर राजनीतिज्ञ और व्यवसायी होता है।

५. गुणन चिन्ह मंगल के स्थान में रहने से व्यक्ति झगड़ालू, स्वार्थी और जिद्दी स्वभाव का होता है।

६. गुणनचिन्ह चन्द्रस्थान पर होने से व्यक्ति झूठा होता है। गुणन के अपेक्षा कृत बड़े आकार में होने से वह आत्मप्रतारक होता है लेकिन गुणन अत्यन्त छोटा होने से व्यक्ति कल्पनाशील और गुप्तविद्या की शिक्षा में रत रहता है। चन्द्र के निचले भाग में होने से जल में डूब कर मृत्यु होती है।

७. शुक्रस्थान पर गुणनचिन्ह होने से व्यक्ति की एक अप्रिय शादी होती है परन्तु साथ ही यदि बृहस्पतिस्थान उच्च हो तो व्यक्ति का वैवाहिक जीवन सुखकर होता है। यही चिन्ह जातक को गुप्त विपदपूर्ण प्रेम में आशक्त कराता है। साथ में यदि बृहस्पतिपर्वत उच्च हो और उस पर भी गुणन-चिन्ह हो तो दोनों का प्रेम सुखकर होता है।

८. भोगरेखा के नीचे गुणन-चिन्ह रहने से जातक की अवस्था अत्यन्त हीन होती है और वह बड़े कष्ट से जीवनयापन करता है।

९. राहुस्थान पर गुणा का चिन्ह रहने से लड़ाई झगड़े के कारण जातक की मृत्यु होती है।

१०. हथेली के त्रिकोण स्थान में गुणा का चिन्ह रहने से व्यक्ति अविवेचन असंयमी, हठी और झगड़ालू होता है।

११. अँगूठे के पहले पोर में गुणनचिन्ह होने से व्यक्ति निर्बोध; वाचाल और चरित्रहीन होता है।

१२. अँगूठे के दूसरे पोर में गुणा का निशान होने से व्यक्ति विद्वान और सुविचारक होता है तथा आधिपत्य करने की शक्ति प्राप्त करता है।

१३. तर्जनी के पहले पोर में गुणनचिन्ह हो तो व्यक्ति को निराश-प्रेम व्यापार में बुद्धि विकृत होने के कारण मृत्यु होती है।

१४. तर्जनी के दूसरे पोर में गुणाचिन्ह हो तो व्यक्ति मिथ्यावादी, नीचाशय, रूखा स्वभाव और हिंस्र प्रकृति का होता है।

१५. गुणा का चिन्ह तर्जनी के तीसरे पोर में होने से व्यक्ति चरित्रहीन और पैतृक-सम्पत्ति का नाश करने वाला होता है।

१६. गुणन का चिन्ह मध्यमा के पहले पोर में हो तो व्यक्ति खाम-खयाली शक्की और आत्महत्या करने वाला होता है।

१७. गुणन का चिन्ह मध्यमा के दूसरे पर्व में रहने से व्यक्ति का धन चेचक इत्यादि विपदाओं के आने के जारण कम होता है।

१८. मध्यमा के तीसरे पर्व में गुणन होने से जातक असंयत, इन्द्रिय-परायणता के कारण वीर्यजनित व्याधियों से नपुंसक होता है !

१९. अनामिका के पहले पोर में गुणा का चिन्ह रहने से व्यक्ति, विद्वान् सुवक्ता, शिल्पी, साहित्यकलाकार और अनुरागी होता है।

२०. अनामिका के दूसरे पोर में गुणा का चिन्ह रहने व्यक्ति अभिमानी निष्ठुर, लोभी, शठ, डरपोक और हिंस्र होता है।

२१. अनामिका के तीसरे पोर में गुणाचिन्ह रहने से से व्यक्ति को अनेक फलदायक कार्यों में बाधा पहुँचती है।

२२. कनिष्ठा के पहले पोर में गुणाचिन्ह रहने से व्यक्ति हठी, स्वार्थी और झूठा होता है।

२३. कनिष्ठा के द्वितीय पोर में गुणा का निशान रहने पर व्यक्ति बाधा विघ्नजनित कार्य से निराश और दुःखी होता है।

२४. कनिष्ठा के तीसरे पोर में गुणा का निशान रहने पर व्यक्ति अत्याचारी सामाजिक शासन में भयहीन और चोर होता है।

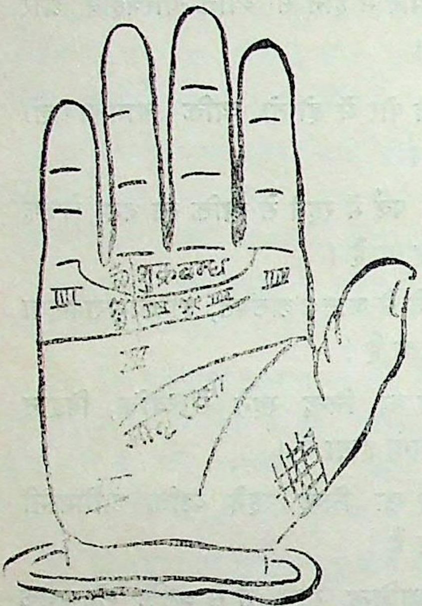
२५. मणिबन्ध की तीन रेखाओं के बीच गुणनचिन्ह रहने से व्यक्ति अच्छे स्वास्थ्य वाला होता है।

जाल चिन्ह (Grills)

१. जालचिन्ह बृहस्पतिस्थान में रहने से व्यक्ति अभिमानी अविश्वासी और सबके ऊपर प्रभुत्व प्रकाश की इच्छा रखने वाला होता है।

२. जालचिन्ह शनिस्थान में रहने से व्यक्ति भाग्यहीन होता है।

३. रवि के स्थान में जाल का चिन्ह रहने से व्यक्ति मूर्ख, गर्वित, गौरव का आकांक्षी, शक्तिहीन और भ्रमपूर्ण राह का पथिक होता है।



(१७३)

४. जाल का चिन्ह जिस करतल में बुधस्थान पर होगा वह शठ अविश्वासी और चोर होता है। इसमें थोड़ा भी संशय नहीं होता।

५. मंगलस्थान पर जालचिन्ह रहने से व्यक्ति सर्वदा दुःखी, अस्थिरचित्त और असंतुष्ट रहता है। हमेशा अपनी मौत मनाता रहता है तथा एकाएक उसकी मृत्यु भी होती है।

६. चन्द्रस्थान पर जालचिन्ह रहने से व्यक्ति को मसाने इत्यादि की बिमारी होंती है साथ ही में यदि शनिस्थान पर नक्षत्र हो तो व्यक्ति उच्चपद का अभिलाषी, अस्थिरचित्त होता है। एवं उसकी सारी मांसपेशियां हमेशा संकुचित होने के कारण कष्टभोग किया करता है।

७. चन्द्रस्थान पर जालका चिन्ह हो और रविरेखा प्रबल हो तों व्यक्ति पद्य और गीत काव्य इत्यादि तथा साहित्यरचना में पारदर्शिता प्राप्त करता है।

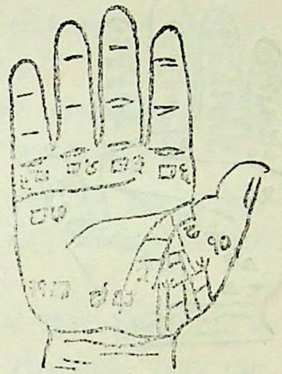
८. शुक्रस्थान पर जालका चिन्ह हो और शुक्रबन्धनीरेखा हाथ में हो तो व्यक्ति निष्ठुर, दुष्टप्रकृति का लम्पट और निराश-प्रेम के कारण आत्महत्या की इच्छा रखता है। यदि अंगूठे का पहला पोर बड़ा हो, प्रबल मातृ और पितृरेखा हो तो शुक्रबन्धनी का अशुभ फल नष्ट होता है।

चतुष्कोण चिन्ह (Square)

शुक्रक्षेत्र पर चतुष्कोण चिन्ह रहने से व्यक्ति धर्मोन्नति के लिये घरबार त्याग कर सन्यासी का वेश बना शिक्षा के लिये गुरु आश्रम को जाता है।

२. यदि जीवनरेखा पर तोड़ या द्वीप है और वह शुक्रपर्वत के चतुष्कोण से सम्बन्धित हों तो ऐसे व्यक्ति को जेल भुगतनी पड़ती है किन्तु शुक्रक्षेत्र के मध्य में चतुष्कोण संलग्न एक त्रिकोण रहने से और चतुष्कोण उक्त त्रिकोण के बीच अवस्थित हो तो उक्त दोष में परिवर्तन हो जाता है।

३. शनिक्षेत्र चतुष्कोण हो तों वह चिन्ह अनेक दुर्घटनाओं और आपत्तियों से बचाका है यदि चतुष्कोण के बीच लालरंग का बिन्दुचिन्ह हों तो व्यक्ति अग्नि में जलने से बचता है।



(१७४)

४. रविक्षेत्र पर चतुष्कोण चिन्ह यशप्राप्ति और धनोपार्जक, सभी विघ्नबाधाओं को दूर करता है।

५. बुधस्थान पर चतुष्कोण चिन्ह हो तों विद्या, शिक्षा, व्यवसाय अथवा दूसरे आर्थिकक्षेत्र की विघ्नबाधाओं को दूर करता है।

६. बृहस्पतिक्षेत्र पर वर्ग हो तो व्यक्ति की उच्चाकांक्षाओं की पूर्ति में जितनी विघ्नबाधायें हैं उन्हें दूर करता है।

७. मंगलपर्वत पर चतुष्कोण हो तो वह विशाल भूमि और सम्पत्ति का अधिकारी होता है तथा उत्तेजनाओं और कामप्रवृत्ति का दमन होता है।

८. राहुपर्वत पर यदि चतुष्कोण चिन्ह है तो व्यक्ति कर्तव्यपालन में तत्पर न्यायपरायण, यशस्वी, स्वार्थत्यागी, सम्मानित और परोपकारी होता है परन्तु अनेक स्थलों में मित्रों द्वारा धोखा खाता है।

६. पितृरेखा पर चतुष्कोण चिन्ह हो तो उस युक्त स्थान के निर्दिष्ट वयमान पर मृत्युयोग खण्डित होता है। हत्या के अपराध में फाँसी की आज्ञा होने पर भी दंडाज्ञा कम होकर कई वर्ष की जेल ही हो जाती है।

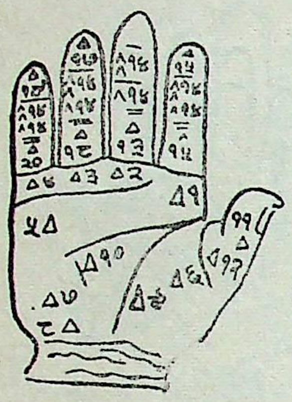
१०. शुक्रस्थान के चतुष्कोण के चिन्ह में शाखायें हों और वे अँगूठे के मूल स्थान से सम्बन्धित हों तो विवाह का ज्ञापक होती हैं।

११. चन्द्रक्षेत्र का चतुष्कोण, चन्द्रस्थान के सभी अशुभ फलों को बदल देता है।

त्रिकोण या त्रिभुज चिह्न (Triangles)

१. बृहस्पति पर त्रिभुज का चिन्ह होने से व्यक्ति वैदेशिकदूत कार्य में नियुक्त होता है।

२. शनिस्थान पर त्रिभुज होने से जातक गुप्तविद्या, अथवा ऐन्द्रजालिक विद्या में पारदर्शिता लाभ करता है।



(१७५)

३. रविक्षेत्र में त्रिभुज हो तो व्यक्ति विज्ञान-शास्त्र और शिल्पविद्या विशारद होता है तथा सुयश और धन लाभ करता है ।

४. त्रिकोण चिन्ह बुधस्थान पर हो तों व्यक्ति विद्वान् और राजनीतिक होता है लेकिन उनका जीवन कर्मक्षेत्र अनेक विघ्नवाधाओं से भरा रहता है ।

५. मंगलस्थान पर त्रिकोणचिन्ह हो तो व्यक्ति रणनीति में विशारद और अस्त्रविद्या में निपुणता लाभ करके प्रभुत्व का इच्छुक होता है ।

६. त्रिकोण चिन्ह शुक्रस्थान में रहने से व्यक्ति विशेष रूप से प्रेमपरीक्षा करके तब उसमें लिप्त होना चाहता है ।

७. चन्द्रक्षेत्र में त्रिकोणचिन्ह हो तो व्यक्ति धर्मपरायण, कवि और जादू विद्या में निपुण होता है तथा हर विषय में कृतित्व का परिचय प्रदान करता है तथा उसे स्त्रीधन की प्राप्ति होती है ।

८. चन्द्रक्षेत्र के निम्नभाग में त्रिभुज चिन्ह हो तो इसी वयस के समानुपातिक वयस के प्राप्ति के वाद जातक पैतृक वैभव का अधिकारी होता है ।

९. करतल में शुक्रक्षेत्र के बीच पितृरेखा के बगल में त्रिभुज चिन्ह हो तो व्यक्ति के सम्मान और उच्चपद को क्षति पहुंचती है ।

११. रविरेखा के प्रभाव के अन्दर अवस्थित त्रिभुज चिन्ह का बायाँ कोण दूसरीरेखा द्वारा कट जाने पर वह सम्भ्रान्त व्यक्ति का ज्ञापक होता है ।

११. अँगूठे के पहले पोर में त्रिभुजचिन्ह हो तो व्यक्ति इच्छाशक्ति को वैज्ञानिक क्षमता द्वारा परिचालित किया करता है ।

१२. अँगूठे के दूसरे पोर में त्रिभुजचिन्ह हो तो व्यक्ति दार्शनिक या वैज्ञानिक होता है ।

१३. मध्यमा उँगली के तीसरे पोर में त्रिभुज चिन्ह हो तो व्यक्ति के सारे कार्य में दुर्भाग्य की प्राप्ति होती है ।

१४. तर्जनी आदि चारों उँगलियों के तीसरे पोर में कोणयुक्त रेखायें अधिक पीड़ा और दुर्वलता का निर्देशन करती हैं ।

१५. चारो उँगलियों के द्वितीय पोर के बीच १५ अंक के निकट इस प्रकार की त्रिकोण युक्त रेखायें जिसके हाथ में हो वह जुआ खेलने वाला होता है ।

१६. तर्जनी के तृतीय और प्रथम पोर में १५ और १६ अंक के ऊपर त्रिकोण चिन्ह हो तो जातक धार्मिक प्रत्यक्ष देखकर या अपनी अनभिज्ञता से सीखने की इच्छा रखने वाला और जादूविद्या में पारदर्शी होता है।

१७. अनामिका के प्रथम पोर में अंक १७ के ऊपर त्रिकोणचिन्ह रहने से जातक प्रसाधन या सौन्दर्यवर्धनकारी विद्या में निपुणता लाभ करता है।

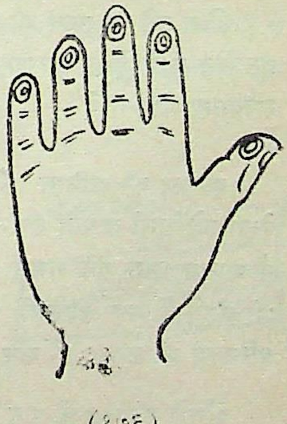
१८. अनामिका के तृतीय पोर में १८ के निकट त्रिभुज चिन्ह रहने से जातक किसी विषय में या वाक्य अतिरंजित करके प्रकट करने में निपुणता लाभ करता है।

१६. कनिष्ठा उँगली के प्रथम पोर में १६ अंक के ऊपर त्रिभुज रहने से जातक अदम्य उत्साही, धीर, प्रखर, स्मृतियुक्त और प्रतिभाशाली लेखक हुआ करता है।

२०. कनिष्ठा उँगली के तीसरे पोर में अंक २० के ऊपर त्रिकोणचिन्ह रहने से जातक कल्पनाप्रवण, प्राकृतिक सौन्दर्यप्रेमी और प्रेमिक होता है।

मुद्रा

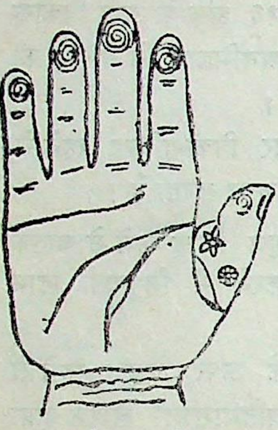
मुद्रा—हाथ की उँगलियों के प्रथम पोर में चक्र जैसे चिन्ह को मुद्रा कहते हैं। करतल में एक मुद्रा रहने में मनुष्य राजा, दो मुद्रा रहने से प्रचुर धनवान् और तीन मुद्रा रहने से या विलकुल न रहने से दुःखी होता है।



(१७६)

अंगूठे में मुद्रा रहने से मनुष्य राजा या राज्य-तुल्य ऐश्वर्य और प्रभावशाली, यशस्वी, सुबुद्धिमान और सारे कार्य में निपुण हुआ करता है जिसके अंगूठे में चक्रपूर्णयव या पद्मचिन्ह दिखाई दे वह व्यक्ति बाप, दादा का उपार्जित धन प्राप्त करता है।

जिसकी तर्जनी में चक्रचिन्ह रहेगा वह व्यक्ति किसी भाई के द्वारा या पिता के कारण धन प्राप्त करेगा। जिसकी तर्जनी में चिन्ह न रहकर विपरीत कोई चिन्ह रहे, उसे आयकी अपेक्षा व्यय अधिक होगा।



(१७७)

मध्यमांगुलि में चक्रचिन्ह रहने से जातक देवता द्वारा धन प्राप्त करेगा। जिसके मध्यमा में चक्रचिन्ह न रहकर विपरीत कोई चिन्ह रहेगा, दैवप्रतिबन्ध से उसका धन क्षय होगा।

अनामिका में चक्रचिन्ह रहने से जातक अनेक उपायों से या मित्र द्वारा धन प्राप्त करता है। जिसकी अनामिका में विपरीत कोई चिन्ह रहेगा उसका धनक्षय अनेक विषयों में होगा।

कनिष्ठा में चक्र रहने से जातक वाणिज्य द्वारा धन उपार्जन करता है। जिसकी कनिष्ठा में चक्रचिन्ह न रहकर विपरीत कोई चिन्ह रहेगा उसे व्यवसाय में लाभ न होकर मूलधन तक चला जाता है।

जिसकी सारी उँगलियों में चक्राकृति रेखायें रहती हैं वह व्यक्ति महाबलवान् सर्व-सुलक्षण सम्पन्न होता है।

जिस स्त्री के अंगूठे की जड़से मध्य भाग तक स्थूल और चक्रकाररेखा रहती है, वह नारी कुलटा नष्टप्रकृति दयाहीन, हर पुरुष आसक्ता, रतिकर्म में प्रचण्डा और स्वाधीन होती है।

जिस स्त्री या पुरुष की कलाई में उठी हुई रेखा क्रमशः मध्य अँगुली तक प्रसारित होती है या चरणतल में ऊर्ध्वरेखा पड़ी रहती है तो वह पुरुष या स्त्री राज्यसुख भोगता है।

करतल की कनिष्ठा उँगली से उठकर जो रेखा प्रवेशिनी अर्थात् तर्जनी और मध्यमा उँगली के मध्यम भाग तक गमन करे तो उसे आयुरेखा भी कहते हैं यह जितनी कम होगी आयु का परिणाम भी उतना ही कम समझना चाहिये।

अँगूठे की जड़ के पास जितनी रेखायें रहती हैं उतनी सन्तानें कुछ लोग मानते हैं।



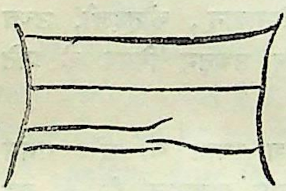
(१७८)

मणिबन्ध रेखा



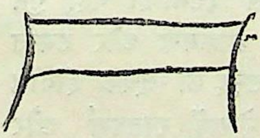
(१७९)

जिसकी कलाई निगूढ़ सुगठित और सुगन्ध युक्त हो तो वह व्यक्ति राजा या राजतुल्य ऐश्वर्य शाली होता है। जिसकी कलाई शब्द युक्त हो और हाथ में छेद हो, वह अधम और धनहीन होता है। यदि किसी स्त्री का मणिबन्ध निगूढ़ और पंजा पदम के भीतरी भाग की तरह दर्शनीय और हथेली समभाव वाली अर्थात् ऊँची नीची न हो तो वह प्रचुर ऐश्वर्यशालिनी हुआ करती है, जिसकी कलाई ऊर्ध्वनाड़ी वाली हो वह स्त्री दुःखिनी, पापकार्य में आशक्ता और कठोर स्वभाव की होती है।

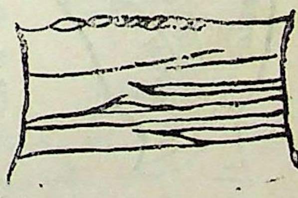


(१८०)

कलाई के एक किनारे से दूसरे तक विस्तृत रेखाओं को वलय या जीवन वलय कहते हैं। हथेली के नीचे किनारे पर पहले से स्वास्थ्य, दूसरे से धन और तीसरे और चौथे वलय से पुत्र तथा सुस्वभाव का विचार होता है। वलयों के साफ और सरल होने से सुख, शान्ति और सौभाग्य प्राप्ति होती है।



(१८१)



(१८२)

तीन या चार वलयों के आपस में खिड़की के आकार में होने से अतिरिक्त परिश्रम से अर्थ का उपार्जन और टूटी हुई या कटी हुई होने से जातक अल्पव्ययी या कृपण हुआ करता है।

यदि किसी की कलाई में समानरूप से और उत्तम वर्णवाली चार रेखायें हों तो वे उस व्यक्ति की ८० या १०० वर्ष का आयु बताती है। किन्तु उन

रेखाओं के ऊपर दो छोटी शाखा बन गई हों और कोण बनाती हों तो वह व्यक्ति किसी सम्बन्धी की मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी होता है। वृद्धावस्था में वह अपनी योग्यतानुसार सम्मान लाभ करता है तथा वह व्यक्ति सत्-स्वभाव युक्त और स्वस्थ हुआ करता है।

किसी के मणिबन्ध में तीन रेखायें रहने से और यदि वे गहरी न होकर विस्तृत हों तो उस व्यक्ति की आयु ६० वर्ष होगी। साथ ही वह व्यक्ति खूब धनवान् होगा किन्तु यौवनकाल में दरिद्रदशा पाकर कष्ट पाता है।

यदि मणिबन्ध की प्रथमरेखा स्थूल, दूसरी कृश और तीसरी क्षुद्र हो तो प्रथम उम्र में ऐश्वर्य, द्वितीय में अवनति या ह्रास और तीसरी में ऐश्वर्य की वृद्धि होगी।

यदि किसी की कलाई में दो ही रेखायें हों तो उसको परमायु बहुत अधिक हो तो ६० वर्ष और वह बीमार रहा करेगा एवं केवल एक रेखा रहने से व्यक्ति अल्पायु का होता है। यदि किसी की कलाई रेखायें इधर उधर विक्षिप्त और बाहर की ओर इस प्रकार विस्तृत हो कि उनमें कोई किसी को स्पर्श न करके वक्ररूप में अनेक दिशाओं में जायें तो वह श्रेष्ठ प्रतिभावान्, कौतूहली, उच्च विचारों में लीन रहने वाला, साहसी, उन्नतिशील और उच्चतम विषय के प्रति लक्ष्य रखनेवाला होता है।

यदि कलाई की रेखायें जोड़ा होकर चन्द्र के उच्च स्थान की ओर गमन करें और यदि एक रेखा यकृत के ऊपर चढ़ जावे तथा असमान हो तो वह अत्यन्त तकलीफ, दुःख मनोकष्ट, दुर्दशा या दुर्भाग्य की भावी सूचक होगी। केवल इतना ही नहीं गुप्त हत्या, प्रतारण, शत्रु का आक्रमण और समस्त सांघातिक व अपकार कार्य समूह की सूचक होगी। यदि किसी की कलाई की रेखायें रक्तवर्ण और असिश्रित हो तो वह व्यक्ति सामरिक या योद्धा होता है और युद्ध के द्वारा ही उसके सौभाग्य का उदय होता है। रणदेवता की कृपा से उसे रण में सम्मान ही मिलता है।



(१८३)

कलाई की रेखाओं के प्रथमरेखा पर यव और सीकड़ीय बेड़ी जैसा चिन्ह रहने पर वह कृतकार्यता की निर्देशक होती है। वह व्यक्ति अपने परिश्रम के फलसे एक

साथ समुद्र और स्थल व्यापार में प्रचुर-ऐश्वर्य लाभ करता है और वह रेखायें रक्तवर्ण और हलकी सफेदी लिये होने से विशेष रूप से समुद्र व्यवसाय से प्रचुर धन लाभ कराती हैं।

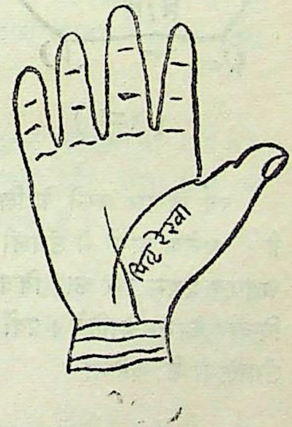


(१८४)

कलाई से कितनी ही रेखायें अधिक परिमाण में फैलकर यदि चन्द्रके समतल दिशा की ओर जाकर समाप्त हों तो जातक काफी दूर समुद्र और स्थल की राह से काफी दिनों तक विश्वभ्रमण करता है।

यदि कलाई से उठकर कोई रेखा पितृरेखा को भेदकर हथेली और हाथ के अवनत स्थान में जाय और यदि वह रक्तवर्ण हो तो बुद्धिहीनता और शारीरिक दुर्बलता का ज्ञापन करती है और कमजोरी के कारण उसकी स्त्री व्यभिचारिणी भी होती है।

मणिवन्ध की रेखाओं ने पंजे को हाथ से पृथक किता है। कलाई से जितनी भी रेखायें दिखाई देंगी, वह सब ३० वर्ष की परमायु होंगी। यहाँ समझना होगा कि हथेली में निश्चित ग्रह ही आयु के प्रदाता होते हैं। कौन-कौन ग्रह कितने वर्ष की आयु प्रदान करते हैं नीचे दिया ज़ाता है।



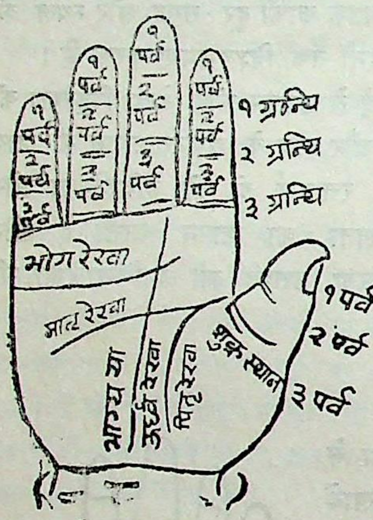
(१८५)

२—शुक्र—८३ वर्ष, २—बृहस्पति—४७ वर्ष ३—शनि—५८ वर्ष
४—रवि—८२ वर्ष ५—बुध—८० वर्ष ६—चन्द्र—१०० वर्ष
७—मंगल—४९ वर्ष ८—राहु—५० वर्ष

मणिबन्ध से उटी रेखा प्रदेशिनी अर्थात् तर्जनी के मूल में संलग्न होने पर मनुष्य शतायु होता है। उससे कम होनेपर अनुपात के अनुसार आयु की कल्पना करनी चाहिये। इस रेखा के छिन्न-भिन्न होने से वृक्ष-से पतन होता है। इस रेखा

का छिन्न स्थान अनुपात के अनुसार जितने वर्ष के अंश में मिलित होगा उसी व· में वह वृक्ष से गिरकर मृत्यु को प्राप्त करेगा ।

पर्व ग्रन्थि रेखा



(१८६)

हाथ की उँगलियों को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है। इसके हर एक भाग को एक एक पोर (पर्व) कहते हैं। उँगली के अंतिम भोग से प्रथम ग्रंथि तक के स्थान को पहिलापोर पहली गाँठ से दूसरी गाँठ तक के स्थान को दूसरा पोर, दूसरी गाँठ से उँगली के जड़ तक से स्थान को तीसरी गाँठ कहते हैं।

पर्व विचार करने के लिए हस्तपृष्ठ की गाँठ देखकर विचार करना आवश्यक है। अनेक हाथों में उँगली के प्रांतभाग की अपेक्षा नाखून बड़े दिखाई देते हैं अतएव प्रथम पोर का विचार करमे के लिये नाखून का अधिक अंश बाद देकर विचार करना चाहिये। पर्वों को विचार का यह नियम अँगूठे के अलावे अन्य सब उँगलियों से चलेगा।

१. जिस व्यक्ति की उँगलियों के सारे पर्व दीर्घ होते हैं वह अनेक पुत्र संतान लाभ करता है। सौभाग्यशाली और चिरायु होता हैं।

२. जिसकी उँगलियाँ घनी होती हैं और उनमें तीन तीन रेखायें हों तो वह व्यक्ति जनहीन होता है।

३. जिसकी कनिष्ठा उँगली के मूल में तीन रेखायें होती हैं वह व्यक्ति भोगी और सुखी होता है और इस स्थान में संयुक्त या पृथक रूप में एक दो तीन चार पाँच रेखायें रहने पर विपुल भोगदायक हुआ करती हैं।

४. कनिष्ठा, अनामिका मध्यमा, तर्जनी इन चारों में हर एक को पर्वरेखा तीन तीन करके गिनने पर १२ अलग अलग रेखायें हो तो वह व्यक्ति धनधान्य सम्पन्न और बहुत सुखी होता है।

५. किसी की कनिष्ठादि चार उँगलियों की पर्वरेखा पृथक गणना में तेरह होने पर व्यक्ति को महादुःख व क्लेश होता है।

६. जिस व्यक्ति की उँगलियों की पर्वरेखा की गिनती १५ हों वह चोर होता है इसी प्रकार गणना में १६ होने से जुआड़ी होता है। सत्रह होने से पापी और १८ होने से धार्मिक होता है।

७. कनिष्ठा आदि चार उँगलियों के पर्वरेखा की अलग गणना में जिसके १९ हों वह व्यक्ति सम्मानास्पद, गुणवान् और साधारण लोगों के बीच में आदरणीय होता है। इस प्रकार २० होने पर तपस्वी २१ होने पर महात्मा होता है।

८. जिसकी सारी उँगलियों में प्रकोष्ठरेखा जैसे निशान हो उसे निश्चय दिव्य सोने की अँगूठी प्राप्त होती है।

९. अनामिका उँगली सारी रेखाओं के छिन्न होने पर, वह यदि स्त्री है तो वह कलह प्रिया, मध्यमा उँगली की रेखाओं के छिन्न होने पर वह विधवा तथा कनिष्ठा की रेखाओं के छिन्न होने पर दुःखिनी होती है।

१०. अँगूठे के पहले पोर के बड़े होने से व्यक्ति सूक्ष्म बुद्धिवाला नये नये तत्वों को खोज सकने वाला अपनी बुद्धि पर दृढ़विश्वासी और जिन कर्मों में नियुक्त रहता है उनमें उत्कर्षता प्राप्त करने का प्रयास करता है।

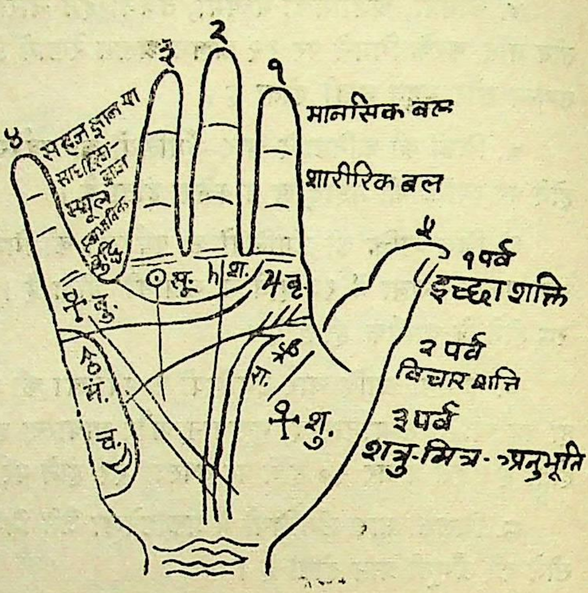
११. अँगूठे का द्वितीयपर्व क्षुद्र व तीक्ष्ण तथा प्रथमपर्व दीर्घ होने से व्यक्ति की इच्छाशक्ति प्रबल होती है दूसरे की युक्ति, तर्क उसे वशीभूत नहीं कर सकते।

१२. अँगूठे का द्वितीयपर्व दीर्घ और स्थूल होने पर व्यक्ति ज्ञानवान् और न्यायप्रिय होता है।

१३. अँगूठे का प्रथमपर्व क्षुद्र होने से व्यक्ति किसी के साथ मित्रता स्थिर रख सकने में सक्षम नहीं होता।

१४. जातक के अँगूठे का प्रथमपर्व क्षुद्र और चौकोर, अर्थात् चौड़ाई में अधिक होने पर वह अपनी बुद्धि की प्रशंसा खुद करनेवाला यथेच्छाचारी और हठीले स्वभाव का होता है तथा न्याय अन्याय के विचार में अक्षम होता है।

१५. व्यक्ति का अँगूठा सुन्दर, उसका प्रथमपर्व मध्यम आकृति का होने से वह कर्म शक्ति सम्पन्न होता है। विनम्रता और सुबुद्धि होती है।



(१८७)

१६. अँगूठे को फैलाने पर यदि प्रथम पर्व पीछे की ओर टेढ़ा हो जाये तो व्यक्ति का अन्तःकरण महान होता है लेकिन पीछे की ओर अतिमात्रा में टेढ़ा हो जाने पर वह अपरिमित् व्ययी होता है।

१७. स्त्रियों के अँगूठे के द्वितीयपर्व में तारे का चिन्ह रहने पर वह प्रचुर धन शालिनी होती हैं।

१८. तर्जनी का प्रथम पर्व स्वाभाविक होनेपर व्यक्ति मानसिक, बलशाली स्वधर्म-विश्वासी और प्रतिभावान होता है दीर्घ होनेपर रूखे स्वभाव वाला और कपटी होता है।

१९. तर्जनी का द्वितीय पर्व स्वाभाविक होने पर व्यक्ति स्वास्थ्यवान वलशाली उच्चआकांक्षा वाला व गर्वित होता है दीर्घ होने पर सौम्य—प्रकृति उच्च अभिलाषी और थोड़ा अहंकारी होता है।

२०. तृतीयपर्व स्वाभाविक हो तो व्यक्ति दूसरे पर आधिपत्य विस्तार में उत्साही होता है बड़ा होने से वह आधिपत्य विस्तार में सक्षम और गर्वित रहता है।

२१. मध्यमा का प्रथमपर्व स्वाभाविक होने पर जातक गंभीर प्रकृति, स्थिर लक्ष्य और ज्ञानी तथा चिन्ताशील होता हैं। यदि दीर्घ हो तो निराश, प्रेम व्यापार में सदा दुखी और कभी कभी आत्महत्या की इच्छा करने वाला होता है।

२२. मध्यमा का द्वितीयपर्व स्वाभाविक हो तो जातक कृषि और शिल्पकार्य में आस्था रखता है तथा बड़ा हो तो शारीरिक व मानसिक-कार्य में पटु, व्यवहार विशेषज्ञ और विलासी होता है।

२३. मध्यमा का तृतीयपर्व स्वाभाविक होनेपर व्यक्ति अध्यवसायी, स्वाबलम्बी परिश्रमी और मितव्ययी भी होता है। बड़ा होने पर व्यक्ति आलसी अस्थिरचित्त क्रोधी, परद्रव्यलोभी होता है।

२४. अनामिका का प्रथमपर्व स्वभाविक हो तो व्यक्ति सहज या प्रमाण निरपेक्ष, ज्ञानवाला, शिल्प-साहित्यकला अनुरागी और जनप्रिय होता है, दीर्घ होने से वह अत्यधिक शिल्पी और व्यवहारिक जीवन में सदा समुन्नतावस्था में रहता है।

२५. अनामिका का द्वितीयपर्व स्वभाविक हो तो व्यक्ति साधारण बुद्धि-सम्पन्न प्रतिभावान् और गुप्तविद्या की खोज करने वाला होता है। बड़ा हो जाने से बुद्धि द्वारा व्यवसायी होता है और ऐश्वर्य पाने पर मानसिक-शक्ति से हीन होता है।

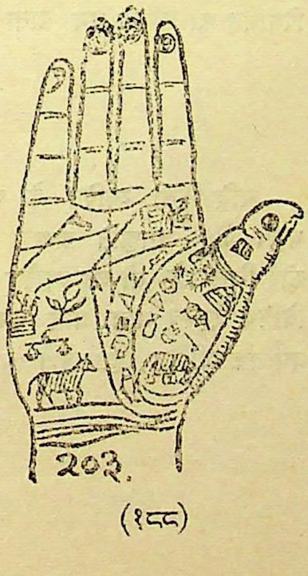
२६. अनामिका का तृतीयपर्व स्वाभाविक होने पर जातक स्थूल बुद्धिवल से दूसरों को अपने ऐश्वर्य प्रदर्शन की इच्छा करता रहता है। बड़ा होने से वह विशेष सौभाग्यशाली होता है परन्तु मूर्खता पूर्ण अभिमान प्रकाश किया करता है।

२७. कनिष्ठा का प्रथमपर्व स्वभाविक हो तो व्यक्ति तीक्ष्णबुद्धि वाला वाग्मी और वैज्ञानिक होता है, बड़ा हो जाने से वह विश्वासघातक निर्बोध, वाचाल, मिथ्यावादी और व्यवसायी होता है।

२८. द्वितीयपर्व स्वाभाविक हो तो वह मानसिक शक्ति-सम्पन्न सुवक्ता और विज्ञानशास्त्र में निपुण होता है। दीर्घ होने पर वह अत्यन्त परिश्रमी लोक-हितार्थ कार्य न करके नृशंस और ध्वंस कार्य के लिये विज्ञानप्रिय होता है।

पौर्वात्य मतीय विविध कर चिन्ह

जिस पुरुष के करतल में, प्रथम में, मध्य में मीन या मछली के आकार का चिन्ह रहे वह जातक इस जगत में जिस कार्य में भी प्रवृत्त होगा उसमें उसे सफलता मिलेगी। वह धनवान् तथा पुत्रवान् होकर सुख स्वच्छन्दता से समय व्यतीत करने में समर्थ होगा। मत्स्यचिन्ह हाथ में होने से जातक नित्य यज्ञ, अनुष्ठान करने वाला होता है।



(१८८)

जिसके करतल में तुल्य और गाँव के जैसा चौकोण चिन्ह अथवा वज्र गुणन चिन्ह रहे वह चाहे जैसा व्यवसाय पकड़े उसे उसमें सफलता प्राप्ति होगी।

जिसके करतल में चक्र, शंख, ध्वज और मकड़े के आकार का चिन्ह हो वह व्यक्ति हर शास्त्र में पारदर्शिता लाभ करेगा और ज्ञानी के रूप में मान्य होगा।

यदि किसी व्यक्ति के करतल में शक्ति-चिन्ह अथवा तोमर-चिन्ह या बाण का निशान रहे, वह राज्यलाभ करता है। रथ, चक्र तथा ध्वजा का चिन्ह रहने से भी उसे राज्य या राज्य समान ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

जिसके हाथ में पद्म या धनुषाकार चिन्ह अथवा खड्ग या अन्य कोई अष्टकोण चिन्ह रहे तो वह निश्चय धनवान् और सुखी होगा। स्त्रियों के हाथ में यह सब चिन्ह रहने से वह धनवती और सुखशालिनी होती है। विशेषतः पद्म का चिन्ह रहने से महारानी व साम्राज्ञी होती है।

यदि किसी के हाथ में अंकुश या कुण्डल का चिन्ह अथवा छत्र का चिन्ह रहे तो वह व्यक्ति चक्रवर्ती सम्राट होकर भोग करेगा। उक्त तीनों प्रकार के चिन्ह एकत्र रहने से जातक पूर्वोक्त रूप फल भोग करेगा, यह न रहने से सम्पूर्ण फल लाभ न होगा। उक्त दोनों प्रकार के चिन्ह एक साथ रहने से राजा जैसा ऐश्वर्य भोग करेगा लेकिन केवल एक चिन्ह रहने से दासत्व भोग करेगा।

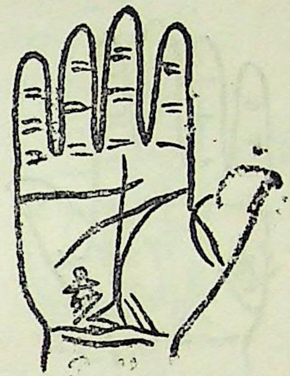
हथेली में मत्स्यपुच्छ रहने से व्यक्ति शतपति, वज्रचिन्ह रहने से सहस्रपति पद्मचिन्ह होने से लक्षपति, संखचिन्ह रहने से कोटिपति, मत्स्यचिन्ह भी रहने से सहस्रपति और मकरचिन्ह होने से सहस्रपति होता है, अन्य मत से करतल में मत्स्य पुच्छ रहने से व्यक्ति विद्वान् और धनवान् होता है तथा वह पैतृक और केवल पितामह का संचित धन पाता है।

यदि किसी व्यक्ति के करतल की रेखाओं में धनुष जैसी आकृति अथवा पद्म या तोरण जैसा कोई चिन्ह रहे तो वह व्यक्ति को राज्यलाभ और विविध ऐश्वर्य भोग प्राप्त कराता है तथा वह ८० वर्ष तक जीवित रहता है।

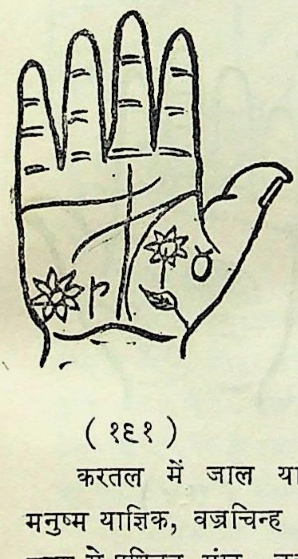


(१८६)

करतल में यवचिन्ह रहने से विद्या और धन, मत्स्य चिन्ह रहने से धन, मत्स्यपुंच्छ रहने से विद्या और ऊर्ध्व रेखा रहने से राज्य और यशो लाभ होता है।



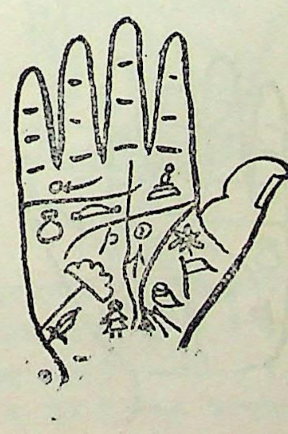
(१६०)



जिसके करतल में अंकुश, कुंडल, चक्र या चामर और पद्मचिन्ह रहे, उसे राज्यलाभ होता है।

(१६१)

करतल में जाल या मत्स्यचिन्ह रहने से मनुष्म याज्ञिक, वज्रचिन्ह रहने से धनी, मत्स्य पुच्छ से पण्डित, संख, छत्र सिविका, हस्ती या पद्मचिन्ह रहने से राज्य, कलसी, अंकुश, पताका या मृणालचिन्ह होने से निधिपति, सूत्रचिन्ह से बहु गौ सम्पन्न, स्वस्तिक चिन्ह से सम्राट, चक्र तलवार तोमर धनुष या दन्तचिन्ह से भूपति, ऊखल चिन्ह यज्ञकारी, वेदी चिन्ह से अग्नि होत्री और तड़ाग, देव, नदी या त्रिकोणाकार रेखा रहने से धार्मिक होता है।

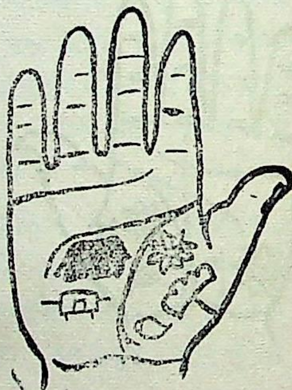


(१६२)



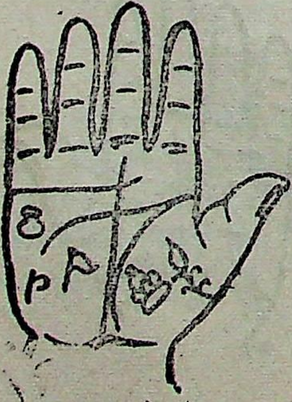
करतल में केवल एक मत्स्य चिन्ह रहने से व्यक्ति ऐश्वर्यशाली और चक्र, तालपत्र, शंख या पद्मचिन्ह रहने से वह विपुल सम्पत्ति का मालिक होता है।

(१९३)



(१९४)

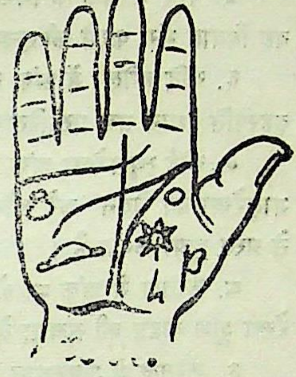
करतल में छत्र या पद्मचिन्ह रहने से मनुष्य करोणपति, शंखचिन्ह से शत कोटीश्वर तालपत्र रहने से लक्षपति और चक्र चिन्ह से राजा होगा। करतल में शंखछत्र शिविका हस्ती, अश्व और पद्मचिन्ह रहे तो नरपति होता है।



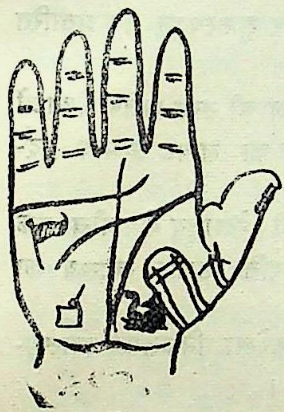
(१९५)

कलश मृणाल पताका और अंकुश जैसे चिन्ह रहने से व्यक्ति निधिपति और कुम्भ चिन्ह रहने से ऐश्वर्ययुक्त होता है।

करतल में चक्र, असि, तोमर, शक्ति धनु या कुम्भाकार चिह्न रहने से व्यक्ति सेनापति होता है।

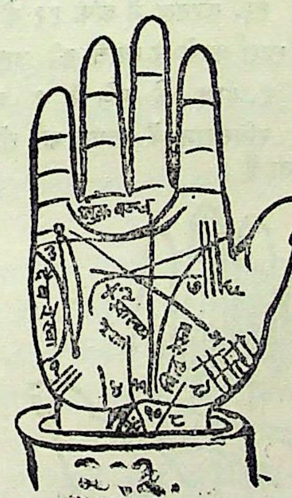


(१९६)



(१९७)

हथेली में ओखली जैसा निशान रहने से जातक याज्ञिक होता है और मकर, ध्वज, प्रकोष्ठ और आगार जैसे चिह्न रहने से अत्यन्त धनशाली होता है।



(१९८)

१. चन्द्र का स्थान ऊँचा फैला हुआ सा होने से व्यक्ति चिंता और कल्पनाओं में सदा डूबा रहता है। चंद्रस्थान में अनेक रेखायें जैसा कि अंक १ के स्थान में है रहने से देवता का प्रत्यादेश प्राप्त होता है।

२. चन्द्रस्थान उच्च या स्फीत २ अंक के पास चौकोण अंश के नीचे गुणनचिह्न रहने से और उसके साथ ही अंगुली समूह का गठन सूचित होने से जातक की अतीन्द्रिय विषय में दर्शनशक्ति प्रबल होती है।

३. यदि एक धनुषाकाररेखा बुधस्थान से चन्द्रस्थान के ३ अंक के निकट हो, तो जातक देव-देवी का प्रत्यादेश पाता है और भविष्य का विषय स्वप्न में देखता है। विषय को प्रकाश करने की क्षमता भी वह प्राप्त करता है।

४. यदि एक सरलरेखा मणिबंध से उठकर ४ अंक के निकट चंद्रस्थान में गमन करे तो जातक क्रोधी स्वभाव का होता है।

५. यदि ५ अंक के निकट शुक्रस्थान से बुधस्थान तक एक रेखा गई हो तो यह विवाह भंग करमे की सूचना देती है।

६. यदि हथेली में अंक ६ के निकट से शुक्रक्षेत्र से ३ सरल रेखायें निकलकर वृहस्पति स्थान तक प्रसारित हों तो व्यक्ति दानशील और सुखी होता है।

७. कोई स्थूलरेखा अंक सात के निकट शुक्रस्थान से उत्थित होकर पितृ और मातृरेखा का भेदन करे और मंगलस्थान तक प्रवेश करे तो व्यक्ति दमे के रोग से ग्रस्त हुआ करता है।

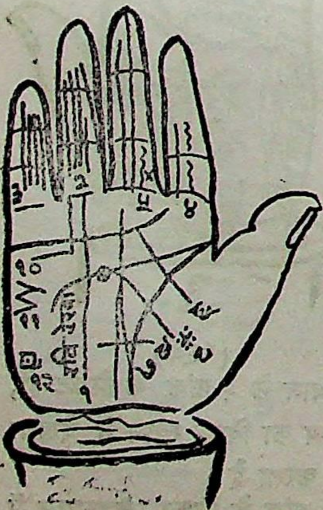
८. करतल में अंक ८. के निकट मणिबंध से उठकर शुक्रस्थान तक प्रसारित रेखा शुभ अदृष्ट की सूचना देती है।

९. करतल में शुक्रस्थान प्रशस्त और ९ अंक के बगल की तरह अनेक रेखाओं वाला होमे से और साथ में शुक्रबंधनी होमे से जातक का लम्पट स्वभाव दुर्दमनीय होता है।

१०. हथेली में अंक १० के निकट मणिबंध की रेखात्रय के बीच एक नक्षत्रचिन्ह के साथ एक गुणा का चिन्ह रहमे से व्यक्ति उत्तम स्वास्थ्य का होंता है।

११. करतल में अंक ११ के निकट मणिबंध से एकरेखा निकलकर स्वास्थ्य-को स्पर्श करने से व्यक्ति की जलभ्रमण में मृत्यु होती है।

१. हाथ के पंजे में १ अंक के निकट रविरेखा चंद्रस्थान से निकल कर रविस्थान में गमन करे तो जातक नाटकादि रचना में पारदर्शिता लाभ करता है।



(१९९)

२. हस्तरेखा में २ अंक के निकट एक सरल रेखा अनामिका के तृतीयपर्व से प्रथम पर्व तक विस्तृत रहमे से जातक सौभाग्यशाली होता है। अनेक रेखा इस उँगली के तृतीय पर्व से प्रथमपर्व तक जाने से जातक को अर्थ नाश होता है।। विशेषतः किसी सुन्दरी नारी द्वारा ही अधिकतर ऐसा फल मिलता है अनेक सरल रेखाओं के बीच एक तृतीयपर्व के पार्श्व स्थान में गमन करने से जातक को गौरव प्राप्ति होती है और एक रेखा तृतीय पर्व तक प्रसारित रहने से जातक सच्चरित्रता, उद्यमशीलता और कर्मनिपुणता द्वारा सौभाग्य प्राप्त करता है।

३. पंजे में अंक के निकट एक रेखा कनिष्ठा उँगली के तृतीयपर्व से प्रथमपर्व तक गई हो तो जातक स्थिर, धीर, अध्यवसायी, उन्नतमना और विज्ञानशास्त्र के अनुशीलन में तत्पर होता है और तीन सरल रेखायें तृतीयपर्व से प्रथमपर्व तक गई हों तो जातक काल्पनिक अवान्तर या आकाशकुसुम विषय के अनुसंधान में रत रहता है।

४. पंजे में अंक के निकट से कोइ रेखा यानी तृतीयपर्व से प्रथमपर्व तक गई हो व्यक्ति गहरी चिन्ता में डूबा हुआ रहता है। वह विवेचक होता है लेकिन कुछ प्रगल्भता दोषयुक्त होता है। इस उँगली के पर्व में वक्र रेखा रहने से जातक पराया धन प्राप्त करता है। द्वितीय पर्व में वक्ररेखा रहने से व्यक्ति हिसंक और मिथ्यावादी होता है।

५. पंजे में अंक ५ के निकट एक रेखा मध्यमा के निम्नदेश या शनिस्थल से उठ कर तीसरेपर्व तक विस्तृत हो तो जातक युद्ध में विजय प्राप्त करता है तथा समृद्धिशाली होता है। कई रेखा इस प्रकार शनि के तृतीयपर्व से प्रथमपर्व तक गई हों तो व्यक्ति निष्ठुर होता है और मनःकष्ट से समय विताता है। तृतीयपर्व में वक्ररेखा रहने से व्यक्ति अति अभागा होता है। तृतीय पर्व में यदि किसी स्त्री के हाथ में क्रासचिह्न हो तो वह बंध्या होती है

६. पंजे में अंक ६ के पास कोई रेखा शुक्रस्थान से उठकर पितृरेखा और मातृरेखा को काट कर भोगरेखा को स्पर्प करे तो जातक को मातृ, पितृवियोग होता है।

७ पंजे के अंक ७ से पितृरेखा निकल कर भाग्यरेखा से मिली हुई रेखा अपने गुण से पार्थिव-उन्नति की सूचना देती है।

८. पंजे में ८ स्थान के निकट एक रेखा मातृरेखा से तिकल कर शुक्रस्थान पर के नक्षत्रचिन्ह से साथ मिले तो चिरस्मरणोंय-प्रेमी निराशा भोग करता है।

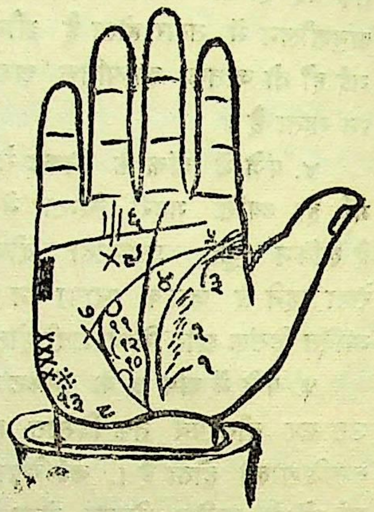
९. पंजे ९ स्थान के निकट एक रेखा शुक्रस्थान से उठकर भाग्यरेखा को काट देने से वह जातक के प्रथम घटित दुःख अथवा नारी से दुःख पाने का ज्ञापन करती है।

१०. पंजे में अंक १० के निकट मंगलक्षेत्र से किसी रेखा के भोगरेखा को काटने से और रविस्थान में गमन करने से व्यक्ति प्रशंसा और सम्मान लाभ के लिये दृढ़प्रतिज्ञ होता है।

११. पंजे में अंक ११ के निकट जैसा चिह्न अंकित हो तो जातक के प्राण नाशक शत्रु के निर्देशक होगे। किन्तु उनमें यदि एक दूसरे से बड़ा हो तो ज्ञातक उस शत्रु के पराजित कर सकेगा।

१२. जातक के करतल में १२ अंक के निकट १ चौकोणचिह्न अंकित हो तो

वह व्यक्ति यशस्वी होता है और उसके धन की वृद्धि होती है तथा विश्वासपात्र होता है।



(२००)

१. करतल में जहाँ अंक। १—३ हैं जैसी रेखायें होने से विच्छिन्न आयु या पितृ रेखा पीड़ा और मृत्यु की सूचना देती है।

२ पितृ रेखा की समानान्तरालरेखा पितृरेखा के अशुभ की संशोधक और स्त्रियों के उत्तराधिकारत्व का निर्देश करती है।

३. पितृरेखा के उत्पत्ति स्थान में शाखायें होने से व्यक्ति की आत्माभिमान कल्पना, प्रवणता और चित्त-चचंलता की ज्ञापक होती है। शाखायें स्वच्छ साफ हों तों सतर्कता और विचारक्षमता समझी जाती है।

४ करतल में अंक ६ के निकट रविरेखा के दोनों ओर दो समान क्षुद्र रेखायें रहने से जातक की शिल्पकला में और साहित्य में समपरिमाण में क्षमता होती है लेकिन वह क्षमता कार्यकारी नहीं होती।

५ करतल में ७ अंक के पास स्वास्थरेखा से एक रेखा मातृरेखा से मिलें जाये और एक त्रिकोण का निर्माण हो जाय तो जातक को उपाधि लाभ का आग्रह होता है और गुप्त विद्या (Occult Science) में पारदर्शिता लाभ होती है।

६. करतल में अंक ८ के निकट पितृरेखा या आयुरेखा के साथ अयुक्त मणिबन्ध से उत्थित स्वास्थरेखा जातक के दीर्घजीवन की ज्ञापक होती है।

७. करतल में ७ अंक के निकट चौकोणक्षेत्र के बीच गुणा का चिह्न होने। गुप्त गुणनविद्या और आध्यात्मिक विषयों में ज्ञान प्राप्त करता है। सदा गुप्त-विद्या की खोज में लगा रहता था। साथ ही वृहस्पतिस्थान उच्च हो तो जातक धार्मिक प्रवृत्ति का होता है।

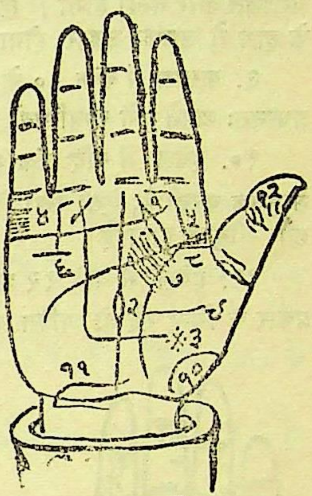
८ करतल में अंक १० के निकट स्वास्थ्यरेखा के बगल में अर्धवृत्ताकार चिह्न रहने से व्यक्ति स्वस्थ्यवान कृतकर्मा और क्षमताशाली होता है।

९. करतल में अंक ११ के निकट मातृरेखा से संलग्न वृत्तचिह्न रहने से जातक की बेवकूफी से पैदा आत्महत्या का ज्ञापक होती है।

१०. करतल में अंक १२ के बगल वाले चन्द्राकार रहने से जातक कलहप्रिय अव्यवस्थित-चित्त और अश्लील-भाषी होता है।

११. करतल में अंक १३ के निकट समानुपातिक उम्र होने के बाद पैतृक सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होने की सूचना करता है।

१२. करतल में १४ अंक के निकट कायतीर्थ जैसी कई रेखायें निकलकर चन्द्र स्थान में जाकर कटी हैं तो व्यक्ति को जल में डूबने का भय होता है।



(२०१)

१. यदि हथेली में शुक्रस्थान से उठकर शनिस्थान तक बड़ा यवचिन्ह दिखाई दे और वयमान पर भाग्यरेखा में भी यवचिन्ह है, जैसा कि अंक १ और २ के निकट है तो व्यक्ति किसी स्त्री द्वारा प्रलुब्ध होता है। जिससे आर्थिक हानि होती है।

२. शुक्रपर्वत पर नक्षत्र का चिन्ह हो अंक ३ के पास से एक टेढ़ी रेखा निकल कर मंगलपर्वत से होते हुये सूर्यपर्वत तक गई हो और रविस्थान पर किसी रेखा द्वारा कटकर क्रासचिन्ह का निर्माण हो गया हो तो यह प्रकट करता है कि व्यक्ति किसी सम्बन्धी की मृत्यु के पश्चात् उतराधिकार प्राप्त करेगा।

३. बुधक्षेत्र के बगल में हाथ के सीमान्त में कई छोटी छोटी रेखायें रहने से व्यक्ति को चित्त चंचलता रहती है। वृहस्पतिस्थान उच्च होने से या चन्द्रस्थान भी उभड़ा हुआ हो तो ऐसा फल निश्चित रूप से होता है।

४. करतल में अंक ५ के निकट एक रेखा पितृरेखा के प्रारम्भ स्थान से उदय होकर वृहस्पतिक्षेत्र के उपर से शनि के स्थान में समाप्त होने से व्यक्ति धर्मोन्मत्त होता है और स्वयं प्रशंसित होने के लिये धर्मचर्चा किया करता है।

५. करतल में अंक ६ निकट मंगलक्षेत्र से कोई एक रेखा भोगरेखा को काटकर रविस्थान में जाने से जातक सम्मान और प्रशंसा लाभ के लिये दृढ़ प्रतिज्ञ होता है।

६. हथेली में अंक ७ के निकट जितनी सरल रेखा पितृरेखा को काटकर चौकोण स्थान में जाती है। उसके फल से जातक को उतना ही मामूली कष्ट हुआ करता है।

७. करतल में अंक ८ के निकट पितृरेखा के प्रारम्भ में शाखारेखा है वैसी ही रेखायें रहने से जातक धनवान् और मर्य्यादा सम्पन्न होता है।

८. हथेली में अंक ६ के निकट शुक्रस्थान से उदय हुई रेखा प्रधान शत्रुओं की ज्ञापक होती है यदि पितृरेखा को स्पर्श करे तो जातक अपने शत्रुओं द्वारा पराजित और बन्दी होगा। लेकिन वह रेखा खण्डित या कटी हुई हो तो शत्रुओं के हाथ से उसका उद्धार होगा।

९. करतल में अंक १० के निकट धनुषाकार रेखा ज्ञापित करती है कि जातक प्रधानतः अपने सगे सम्बन्धियों द्वारा बञ्चित और प्रतारित होता है।

१०. हथेली में यदि अंक ११ के निकट एक रेखा, जो करतल को मणिवन्ध से पृथक करती है, ऐसी रेखा जिसके हाथ में रहे वह सदा प्रफुल्ल, सौभाग्यशाली और श्रीयुक्त होता है।

११. हथेली में यदि १२ अंक के निकट अँगूठे के नाखून के बगल में इस प्रकार के चिन्ह रहे तो व्यक्ति चोर या डाकू होता है।



(२०२)

१. हाथ के पंजे में १ अंक के निकट शुक्रस्थान में इस प्रकार का चौकोर चिन्ह रहने से व्यक्ति व्यभिचारी और अगम्यगामी होता है।

२. यदि हाथ के पंजे में अंक २ के निकट मुण्डनचिन्ह हो और नक्षत्रचिन्ह मुक्त हो तो जातक का जन्म संदिग्ध समझना चाहिये।

३. करतल में ३ अंक के निकट जैसा चिन्ह रहने से व्यक्ति प्रसिद्ध धोखेबाज होता है।

४. अँगूठे के प्रथम पर्व में अंक ४ के निकट जैसा चिन्ह रहने से जातक के सतीत्व या पवित्रता की हानि होती है।

५. शुक्रस्थान में अंक ५ के निकट जैसा चिन्ह होने से जातक क्रीड़ा या युद्ध के प्रधान आक्रमण स्थल से प्रतिद्वन्दी या शत्रु का मन आकर्षण करने में सक्षम होता है।

६. अंक ६ के निकट भाग्यरेखा से संलग्न एक गुणन या त्रिकोण चिह्न रहने से व्यक्ति गुप्तहत्याकारी द्वारा मारा जाता है।

७. अंक ७ के ऊपर की ऊर्ध्वरेखा से स्वास्थ्य या रक्त प्रवाहिका रेखा तक विस्तृत रेखा विजय और सम्मान की ज्ञापक होती है।

८. कर चतुष्कोण के बीच अंक ८ के निकट का चिन्ह जातक के लिये मानसिक कष्टकारक होता है।

९. तर्जनी के द्वितीय पर्व स्थित ९ अंक के निकट की रेखा जातक को महत्व और उच्चपद दिलाती है।

१०. मध्यमा के द्वितीयपर्व स्थित १० अंक के निकट ऐसी रेखाओं से जातक लज्जाजनक मृत्यु होती है।

११. मध्यमा उँगली के तृतीयपर्व स्थित ११ अंक के निकट का चिन्ह जातक की मृत्यु कारागार में होना बताता है।

१२. अनामिका के तृतीयपर्व स्थित १२ अंक के निकट का चिन्ह जातक के ऐश्वर्य लाभ का परिचायक होता है।

१३. कनिष्ठा उँगली के तृतीयपर्व में १३ अंक के निकट जैसा चिन्ह रहने से जातक के लिये दुखदायी होता है।

१४. कनिष्ठा उँगली के नीचे बुधक्षेत्र में अंक ४ के निकट जैसा चिन्ह रहने से व्यक्ति प्रचलित धर्म का विरोधी होता है।

१५. तर्जनी के तृतीयपर्व के नीचे वृहस्पति स्थान में अंक १५ के निकट ऐसे दो चिह्न रहने से जातक उनमें प्रथम से सम्मान और दूसरे से असम्मान पाता है।

१. करतल में चन्द्रक्षेत्र के निम्न स्थान में १ अंक के समीप जैसा चिह्न स्त्रियों के हाथ में रहने से वह नारी बन्ध्या होती है।

२. अं २ के निकट एक रेखा शुक्रस्थान से उठकर पितृरेखा और भाग्यरेखा को काटकर मंगलक्षेत्र स्थित किसी चौकोण के बीच समाप्त होने से उस नारी का किसी दुष्ट व्यक्ति से विवाह होना और उससे मुक्ति की सूचना मिलती है।



(१०३)

३. करतल में अंक ३ के निकट मातृरेखा के ऊपर १ गुणनचिह्न रहने से वह जातक की प्रवृत्ति परिवर्तन और अर्थोपार्जन का निर्देश करती है।

४. पंजे में ४ अंक के निकट एक रेखा कलाई से उठकर अंगूठे के मूलस्थान की ओर होने से जातक महानुभाव होता है।

५ हथेली में अंक ५ के निकट एक रेखा शुक्रस्थान से उठकर वृहस्पति स्थान में गमन करने से व्यक्ति उच्चाकांक्षी और कृतकार्य हुआ करता है।

६. यदि हथेली में अंक ६ के निकट दो ओर अन्य रेखायुक्त त्रिशूल के आकार जैसी रविरेखा हो तो विद्या, यश, जनलाभ और सम्मान की द्योतक होती है।

७. करतल में अंक ७ के निकट पितृरेखा से उठकर चारों ओर रेखायें गई हों तो यथा क्रम व्यक्ति विद्या और धन प्राप्त करता है तथा उसकी ख्याति होती है, परन्तु बाद में धन व स्वास्थ पर बुरा प्रभाव पड़ता है तथा बाल्यावस्था में दुर्घटना, मध्य उम्र में जीवन संशयकारी पीड़ा और जीवन के शेष भाग में अर्थ नाश एवं आत्माभिमान सूचक होती है।

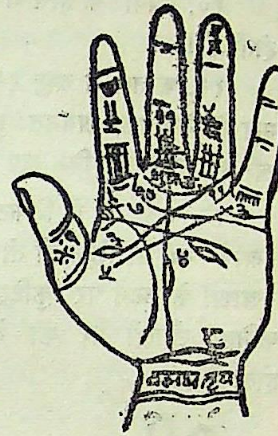
८, हथेली में बुधस्थान अंक ८ के निकट अर्ध वृत्ताकाररेखा आकस्मिक मृत्यु की निर्देशक होती है।

९. अंक ९ के पास हथेली में यदि एक वृत्तार्धरेखा से अंगूठे की ओर बढ़ी हुई हो तो जातक की दोनो आँखों में लोहे से चोट पहुँचकर कष्ट या आग से जलने की ओर निर्देश करती है।

१० करतल में अंक १० के निकट एक रेखा जो हथेली को कलाई से अलग करती है जिसके हाथ में हो वह सदा प्रफुल्ल, सौभाग्यशाली और श्रीमान् हुआ करता है।

११. करतल में अंक ११ के निकट मणिबन्ध से उठकर जैसी अयुक्त रेखायें हाथ में विस्तृत हो तो व्यक्ति अशिष्ट और असभ्य होगा।

१२. करतल में अंक १२ के निकट पितृरेखा के अन्तिम भाग के पास दोनों ओर वृत्तार्ध चिह्न रहने से जातक की दोनों आँखों में आघात लगने की द्योतक होती है।



(२०४)

१. यदि किसी स्त्री के अँगूठे के द्वितीय पर्व में अंक एक के पास नक्षत्र चिन्ह हो तो वह स्त्री अत्यन्त धनी होती है।

२. अंक २ के निकट अनेक रेखायें होने पर बुधस्थान उच्च होने से स्त्री का विवाह किसी शास्त्रज्ञ व्यक्ति या डाक्टर अथवा चिकित्सक के साथ होगा।

३. अंक ३ के निकट क्षुद्रस्थान में या विवाह रेखा के ऊपर यवचिन्ह रहने से विवाह या प्रेम भंग होता है लेकिन यदि उस यवचिन्ह से एक सरल रेखा उठकर रविस्थान को स्पर्श करे तो विवाह सम्पन्न होता है तथा प्रेम दृढ़ होता है।

४. अंक ४ के निकट भाग्यरेखा के मध्यभाग में और मातृरेखा के नीचे यवचिन्ह रहने से जातक स्त्री स्वजातीय अथवा विजातीय पुरुष द्वारा अलोभित होती है।

५. नारी करतल में अंक ५ के निकट कोई सरल रेखा शुक्र के उच्च स्थान के ऊपरी भाग से निकलकर बुधपर्वत के ऊपर गई हो तो उसे पतिवियोग होता है।

६. अंक ६ के निकट अनामिका के प्रथम पर्व में गुणन चिन्ह हो तो स्त्री सती होती है और द्वितीय पर्व में रहने से विवाह में दहेज से धनी और सम्मानित हुआ करती है।

७. करतल में अंक ७ के निकट वृहस्पतिस्थान की अनेक रेखाओं को काट देने से नारी असती होती है।

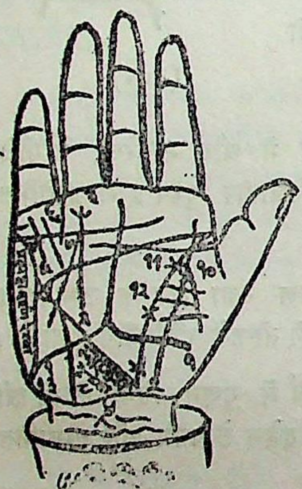
८. नारी मणिबन्ध के ८ अंक के निकट वलय का मध्यभाग वक्र होकर हथेली में घुस पड़ा हो तो गर्भाशय की अपरिपुष्टता के कारण सन्तान नहीं पैदा होती या प्रसव के समय अतिकष्ट होता है। टूटी फूटी रेखा होने से वह सन्तानहीना होती हैं। पहले समय में हस्तरेखाविज्ञ इस प्रकार का चिन्ह यदि किसी कुमारी लड़की के हाथ में देखते थे तो उसे अविवाहित ही रहने का उपदेश देते थे।

९. अङ्क ९ के निकट तर्जनी के द्वितीय पर्व में यदि दो रेखायें हो तो स्त्री अनेक सन्तानों की जननी पोती है। पदतल में ऊर्ध्वरेखा चिर सधवा के लक्षणों में से एक है।

१०. स्त्रियों के हाथ में शुक्रबन्धनी हो तो प्रायः वह मूर्छारोग से ग्रसित होती है।

११. करतल में अङ्क ११ के निकट यदि एक स्थूल और दीर्घरेखा कनिष्ठा के मूल से निकलकर अवनत हुई हो तो, ऐसी रेखा जिस स्त्री के हाथ में रहेगी, वह स्त्री सन्तान प्रसवजनित कष्ट और परिश्रम के कारण मृत्युको प्राप्त होगी।

१२. अङ्क ११ के निकट यदि किसी स्त्री की अनामिका उँगली पर स्थित सारी रेखायें भग्न या छिन्न हों तो वह स्त्री अत्यन्त कलहप्रिया होती है। मध्यमा स्थित रेखाओं के कटने पर कुटिला, तर्जनी स्थित रेखाओं के कटने पर विधवा और कनिष्ठा उँगली पर की रेखाओं के छिन्नभिन्न होने से वह स्त्री चिरदुःखनी होती है।



(२०५)

१. ऊर्ध्वरेखा यदि प्रारम्भ स्थान में दो साखों वालों हो, जिसकी एक साख मुक्तपर्वत पर तथा दूसरी साख चन्द्रपर्वत पर हो तो व्यक्ति काल्पनिक-शक्ति द्वारा और प्रणय प्रणोदित होकर सफलता चाहता है यदि रेखा में जहां-तहां तोड़ या अवरोध इत्यादि नहीं हैं, तो सफलता भी मिलती है।

२ अङ्क दो के निकट रविरेखा यदि भोगरेखा के नीचे दो भागों में विभक्त होकर चन्द्रस्थान तक जाये तो व्यक्ति निपुण, साहित्यिक, नाटक लेखक और शिल्पी होता है और दूसरों की सहायता से सम्मानित और यशस्वी होता है। वह प्रबल उद्यम और शारीरिक परिश्रम के बल से जीवन में उन्नति लाभ करता है।

३. अङ्क ३ के पास रविरेखा में अर्द्धचन्द्राकृति चिन्ह रहने से वह जातक की असीम धन लाभ की अपरितृप्त आकांक्षा का ज्ञापन करती है।

४. अङ्क ४ के निकट मणिबन्ध की तीनों वलय रेखाओं के बीच कोणाकृति चिन्ह रहने से जातक वृद्ध वयस में पराया धन प्राप्त करता है और सम्मानित होता है।

५. स्वास्थरेखा पितृरेखा या आयुरेखा यदि अंक ५ के निकट युक्त हो तो व्यक्ति दीर्घायु होता है। यदि इस स्वास्थ्यरेखा का केवल ऊपरी भाग शाखादार हो और वह शाखा मातृरेखा के साथ मिलित होकर त्रिकोण की आकृति में हो तो, जातक सम्मानित और सुख्याति युक्त होकर, धर्म की उन्नति के विषय में अथवा गुप्तविद्या में पारदर्शी होता है। एवं स्वाभाविक इन्द्रजाल और मोहनी विद्या अर्थात् शारीरिक विद्युतशक्ति या चाक्षुपीविद्या द्वारा हाथ चलाकर दूसरे को बेहोश करके उसके शरीर पर आधिपत्य करने के बारे में निपुणता प्राप्त करता है और ईश्वरीय कार्य, कारण समझने की शक्ति प्राप्ति होती है। वह अपने स्वभावसिद्ध ज्ञान द्वारा भविष्यत् विषय जानने की क्षमता लाभ करता है।

६. अंक ६ के निकट से मातृरेखा की शाखा बुधस्थान में और एक शाखा मंगल के स्थान से उठकर बुधस्थान में जाने से व्यक्ति नाटक अभिनेता हुआ करता है।

७. रविरेखा अंक ७ के निकट मंगल के स्थान से उठकर रविस्थान में जाने से व्यक्ति अत्यन्त शारीरिक परिश्रम से उन्नति करता है।

८. यदि हथेली में अंक ८ के निकट मणिवंध से कोई रेखा उठकर चन्द्र स्थान पार करके स्वास्थरेखा को स्पर्श करे तो जातक का जीवनकाल शोक और दुर्भाग्य में अतिवाहित होता हैं।

९. अंक ९ के निकट चंद्रस्थान से बुधस्थान तक विस्तृत धनुषाकार रेखा हो तो वह प्रत्यक्ष दर्शन या दैवरेखा बोली जाती है। इससे व्यक्ति भविष्यत् ज्ञान या देवता के प्रत्यादेश प्राप्त करता है। उसमें हर विषय को प्रकट करने की क्षमता होती है तथा भावी विषय स्वप्न में देखता है।

१०. अंक १० के निकट अंगूठे के मूल स्थान के बगल में राहुस्थान से एक रेखा उठकर पितृ, मातृ या ऊर्ध्वरेखा को काट देती है तो पिता या माता की मृत्यु के बाद जातक बुरी अवस्था को प्राप्त होता है।

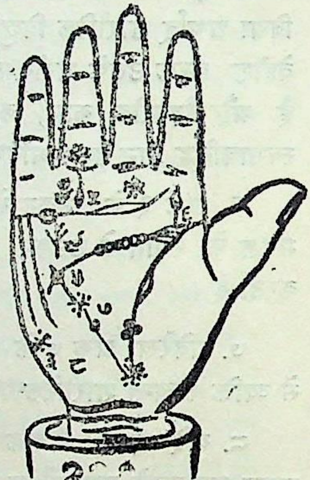
११. अंक ११ के निकट पितृरेखा के प्रथम भाग में गुणन चिह्न रहने से बाल्यावस्था में दुर्घटना उपस्थित होती है। मध्य स्थल में रहने से सांघातिक पीड़ा और यही चिह्न दोनों स्थानों में रहने से मृत्यु होती है। शेष स्थान में रहने से जातक की दुरवस्था और अपमृत्यु होती है।

१२. अंक १२ के निकट पितृरेखा के ऊपर चतुष्कोण चिह्न रहने से जातक अनेक विपद् और शारीरिक कष्ट, आर्थिक कष्ट से मुक्ति पाता है।

१३. अंक १३ के निकट कोई रेखा मणिबंध से उठकर चंद्रस्थान में जाने से जातक को समुद्र यात्रा करनी पड़ती है। और कोई एक रेखा मणिबंध से बाहर होकर शुक्रस्थान भेदकर वृहस्पतिस्थान तक जाती हो तो व्यक्ति को अधिक समय तक जलयात्रा करनी पड़ती है।

१. सूर्य्यस्थान में नीला चिन्ह रहने से अथवा अनामिका के तीसरे पर्व में नक्षत्रचिन्ह रहने से जातक को चक्षुरोग होता है।

२. मातृरेखा से कई रेखायें निकल कर पितृ रेखा को काटने और मातृरेखा श्रृंखलाकार होने से जातक को शिरदर्द जैसी विमारियाँ होती हैं।



(२०६)

३. चंद्रक्षेत्र में नक्षत्र चिन्ह रहने से व्यक्ति को उदर रोग होता है।

४. स्वास्थ्यरेखा अनेक रंगों की हो और मातृरेखा के साथ मिलन स्थान में यदि एक रक्तवर्ण विन्दु चिन्ह हो तो जातक पक्षाघातरोग से आक्रान्त होता है। और पक्षाघात के इस साधारण चिन्ह के साथ दो सरल रेखायें भोगरेखा से बाहर होकर चंद्रस्थान में गमन करने तथा शनिस्थान में नक्षत्र चिन्ह रहने से और शनिक्षेत्र के नीचे पितृरेखा के अंतिम भाग में नक्षत्र चिन्ह होने पर भी वह पक्षाघात रोग से मृत्यु की ज्ञापक होती है।

५. मध्यमा उँगली के निम्नभाग में भोगरेखा प्रशस्त, रविरेखा और पितृ रेखा के ऊपर यव चिन्ह, स्वास्थ्यरेखा, पितृरेखा के साथ मिली हुई हो और पितृ रेखा के ऊपर नील या रक्तवर्ण दाग अथवा भोगरेखा के ऊपर यव या वृत्त चिन्ह आदि इनमें कोई भी एक रहने से, जातक को हृदय रोग उपस्थित हुआ करता है।

६. एक यवचिन्ह युक्त ऊर्ध्वगामी रेखा पितृरेखा से बाहर होकर वृहस्पति स्थान में जाने से जातक को प्ल्युरिसी और पार्श्वशूल रोग हुआ करता है।

७. स्वास्थरेखा के ऊपर नक्षत्रचिन्ह रहने से इस रोग के आरम्भ का विषय जाना जाता है किन्तु इस स्थान में कालादाग रहने से कमला रोग का प्रबल आक्रमण होता है।

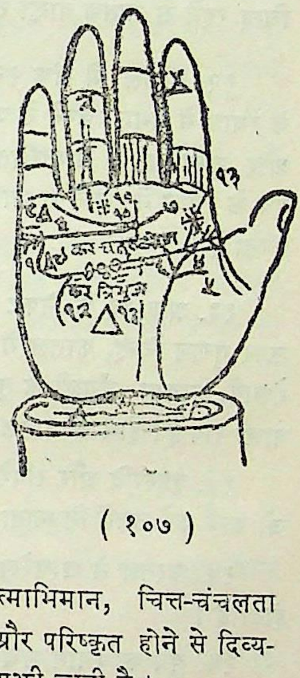
८. चंद्रस्थान अधिक पुष्ट रहने से अम्लरोग का आक्रमण समझा जाता है।

९. मंगल का स्थान उच्च और दूसरी एक ऊर्ध्वगामीरेखा शाखा विशिष्ट होकर इस स्थान में होने से और इसी स्थान में अन्त होने से जातक, टान्सिल रोग से आक्रान्त होता है।

१. भोगरेखा अभग्न और वृहस्पति तथा शुक्र स्थान उच्च होने से जातक दयालु होता है।

२. अनामिका के तृतीयपर्व तक दो रेखायें और कर-चतुष्कोण तथा कर-त्रिभुज परिष्कृत रूप में रहने से जातक सत् और सौभाग्यशाली होता है।

३. भोगरेखा से अंक ३ के निकट बुधस्थान में कोई शाखारेखा न निकलने से जातक निःसन्तान होता है।



(१०७)

४. उत्पत्ति-स्थान में शाखायुक्त पितृरेखा आत्माभिमान, चित्त-चंचलता आवेगमय और कल्पना सूचक है किंतु शाखा स्पष्ट और परिष्कृत होने से दिव्य-ज्ञान सम्पन्न, धीर, स्थिर, सत्यता और विचारक्षमता समझी जाती है।

५. अंक ५ के निकट १ रेखा पितृरेखा से शुक्रस्थान के अभिमुख जाने से जातक का स्वभाव परिवर्तनशील होता है।

६. अंक ६ के निकट पितृरेखा की कोई शाख मातृरेखा को कर्तन करने से जातक अहिंस्र, अक्रोधी और विश्वासी होता है।

७. अंक ७ के निकट वृहस्पतिक्षेत्र से मातृरेखा तक विस्तृत सरलरेखा के ऊपर तारा चिह्न रहने से देव अनुकूलता से जातक को अर्थलाभ होता है।

८. अंक ८ के निकट बुधक्षेत्र में त्रिभुज या त्रिकोणचिन्ह रहने से जातक की वाग्मिता से अर्थ का उपार्जन होता है और वह निपुण राजनीतिज्ञ होता है।

६. अंक ६ के निकट बुधक्षेत्र के नीचे मंगलस्थान में एक त्रिकोणरेखा या गुणन चिन्ह रहने से जातक को युद्ध में अर्थलाभ होता है।

१०. अंक १० के निकट भाग्यरेखा से उत्थित् एक शाखारेखा बुधक्षेत्र तक विस्तृत रहने से अभिनेता रूप में जातक को काफी धन लाभ होता है।

११. करतल में अंक ११ के निकट रविक्षेत्र तारे के चिन्ह से चिन्हित हो, रविस्थान उच्च और दोनों हाथों की रविरेखा सुस्पष्ट, रविक्षेत्र के ठीक नीचे भाग में मातृरेखा के ऊपर एकाधिक श्वेतवर्ण विन्दुचिन्ह, तर्जनी के पर्व के निकट क्रास चिन्ह रहने से जातक वाणी सेवा में पुरष्कृत होता है।

१२. करतल में अंक १२ के निकट मातृरेखा का शेषांश वक्र भाव से चन्द्र के स्थान में गमन करने से जातक की कल्पना शक्ति, कवित्वशक्ति, कार्यक्षमता और गुप्तविद्या में पारदर्शिता प्राप्त होती है। इसी प्रकार मातृरेखा का शेषांश बुध के स्थान में जाने से जातक वाणिज्य और विज्ञानशास्त्र में पारदर्शिता लाभ करता है।

१३. अंक १३ के निकट मणिवन्ध का बलय त्रय सुस्पष्ट और प्रथम बलय के ऊपर गुणन चिन्ह, करतल में त्रिकोण चिन्ह, तर्जनी के तृतीयपर्व में तीन स्पष्ट सरल रेखायें, मध्यमा उँगली के तृतीयपर्व में कई ऊर्ध्व सरलरेखा और साफ रेखाओं वाला रविक्षेत्र होने से जातक दूसरे का धन प्राप्त करता है।

१४. वृहस्पति और रविरेखा प्रबल और उँगली समूह बराबर होने से जातक जो कार्य करे उसमें निपुणता प्राप्त करता है।

१५. करतल में अल्परेखा रहने से और दृढ़ तथा स्थूल होने से जातक भाष्कर होता है।

१६. बुध का स्थान उच्च और इसी स्थान में ३ रेखा रहने से, और रविरेखा प्रबल होने से, जातक विलक्षण चिकित्सक होता है।

१७. चिकित्सक के साधारण चिन्ह के साथ करतल में दृढ़ अँगुलि का अग्रभाग स्थूल होने से जातक पशुचिकित्सा में पारदर्शिता प्राप्त करता है।

१८. छोटी छोटी ऊर्ध्वगामी सरल रेखासमूह बुधक्षेत्र के पार्श्व में रहने से जातक रसायनविद्या में पारदर्शिता लाभ करता है।

१९. बुध, चन्द्र, वृहस्पतिस्थान और शनिपर्वत उच्च और सारी उँगलियाँ विचार सूचक होने से जातक गणितशास्त्र और नाक्षत्रिक या ज्योतिष विद्या में पारदर्शी होता है।

कलाई में मणिवन्ध और हाथ पैर की बनावट

मणिबन्ध और किहुनी (भुजा और वाजूका जोड़) की मोटाई का परिमाण १२ अंगुल होता है। कन्धा और किहुनी का अन्तर १६ अंगुल होता है। हाथ की लम्बाई २४ अंगुल होती है। प्रत्येक भुजा ३२ अंगुल की होती है। मणिबन्ध या कलाई से किहुनी तक १६ अंगुल का परिमाण होता है। हथेली की लम्बाई ६ अंगुल और चौड़ाई चार अंगुल होती है। अंगूठे की जड़ से तर्जनी का अन्तर प्रायः दो या तीन मध्यमा उँगली के बराबर होता है। तर्जनी और अनामिका का अन्तर ढाई अंगुली है कनिष्ठा और अंगूठे का अन्तर पाँच उँगली के बराबर है। पैर की वृद्धांगुलि और तर्जनी, हरेक अपनी उँगली से दो अंगुल परिमाण की होती है। मध्यमा उँगली का परिमाण तर्जनी उँगली के पाँच भाग का ४ भाग होता है, अनामिका का आयतन मध्यमा के पाँच भाग का ४ भाग होता है और कनिष्ठा की दीर्घता (परिमाण) अनामिका के पाँच भाग का चार भाग है।

पदतल और पदतल के उपरी भाग से उँगली के मूल तक दोनों स्थान प्रत्येक ४ अंगुल और ५ अंगुल विस्तृत हैं। पंजा पाँच अंगुल चौड़ा और ४ अंगुल लम्बा होता है, तलवा १४ अंगुल लम्बा होता है। पुरुष का समूचा शरीर का १२० अंगुल का होता है।

नर बाहु

१. कृश, हल्का, टेढ़ा, श्लिष्ट और विपुल वाहुद्वय शुभ है।

२. आजानु लम्बित (जंघे तक लटकने वाले) सुडौल और मोटे वाहु विश्व विख्यात व्यक्ति के चिन्ह हैं।

३. अमांसल रोमयुक्त, वक्रता विशिष्ट, हाथी के सूंड़ जैसे वाहु भी श्रेष्ठ व्यक्तियों के होते हैं।

४. खर्व या छोटे, रोमहीन वाहु होने से क्रमशः मनुष्य दरिद्र और सुखी होता है।

नारी बाहु

जिस रमणी के दोनों वाहु दोषशून्य, सरल, निगूढ़, अस्थियुक्त, गोमल, गाँठ वाले तथा जिस वाहु में रोयें और नसें न दिखाई पड़ें, वह स्त्री शुभ लक्षणों वाली होती है।

२. दोनों बाहु रोयेंदार हों और छोटे ही तो, नारी विधवा, दुर्भागिनी होती है और बाहु में यदि नसें दिखायी पड़ती हों तो चिरकाल तक दुःख भोगती रहती है।

नरहस्त—बन्दरों जैसे हाथ होने पर मनुष्य निर्धन और जिसके हाथ शेर जैसे हों बलवान् होता है। राक्षस और काक जैसे हाथ हों तो उन्हें अशुभ मानना चाहिये।

नारी हस्त

नारी हस्त—थिस नारी के हाथ का मांस कृष्णवर्ण हो, वह स्त्री चोर होती है।

१. जिसके दोनों हाथ बड़े हों वह नारी विधवा होती है।

३. जिस नारी के हाथों में शिरायें दिखाई दें, हाथ विषम (असमान) हों और सूखे हुये प्रतीत हों, वह नारी दरिद्रा होती है।

नर-कर—पुरुष का पंजा (हथेली का ऊपरी भाग) रोम और शिरा विहीन होने से शुभ माना जाता है। छोटा, शिरा और रोमयुक्त करपृष्ठ अशुभकर है।

नारी का पृष्ठः—नारियों का पंजा रोमहीन, शिरारहित तथा समुन्नत रहने पर शुभ होता है। जिस नारी के पंजे पर रोम हों वह विधवा होती है। जिसके पंजे छोटे और शिरायुक्त हों वह रमणी त्याग देने योग्य होती है।

नर करतल लक्षण—मानव करतल नीचा होने से वह पितृधन से वञ्चित होता है।

२. जिसके करतल नत और उन्नत दोनों हों वह व्यक्ति अति भयंकर और अर्थशून्य होता है।

३. करतल की सारी रेखायें स्निग्ध और निम्न होने पर मानव धनवान होता इसके विपरीत होने से दरिद्र होता है।

४. जिसकी हथेली संवृत साथ ही निम्न हो, वह मनुष्य धनशाली, उत्तम कर वाला व्यक्ति वंदित होता है।

६. असमान करतल होने से अशुभ समझना चाहिये।

७. जिसके करतल, कर और स्तन लाख जैसे रंग वाले हों, वह व्यक्ति राजा जैसा धनवान होता है।

८. हथेली पीली हो तो अगम्यगामी और परस्त्री रत होगा। रूक्ष हों तो मानव निर्धन होता है।

९. करतल बन्दरों जैसा हों तो धनवान्, बाघ के आकार जैसे हों तो पापी होता है।

नारी करतल लक्षण

१. जिस नारी का करतल मृदु, रक्तवर्ण, छिद्ररहित, अल्परेखा युक्त प्रशस्त रेखा युक्त मध्यम भाग उन्नत हो, वह रमणीं सौभाग्यशाली होती है।

२. भ्रमर, आसन, हस्ती, रथ, विंल्ववृक्ष, खूँटा, वाण, माला, कुण्डल, चँवर अंकुश, यव, शैल, ध्वजा, तोरण, मत्स्य, स्वस्तिक वेदी, ताल वृक्ष, संख, छत्र और पद्म, ये चिन्ह हों तो वह रमणी राजरानी होती है।

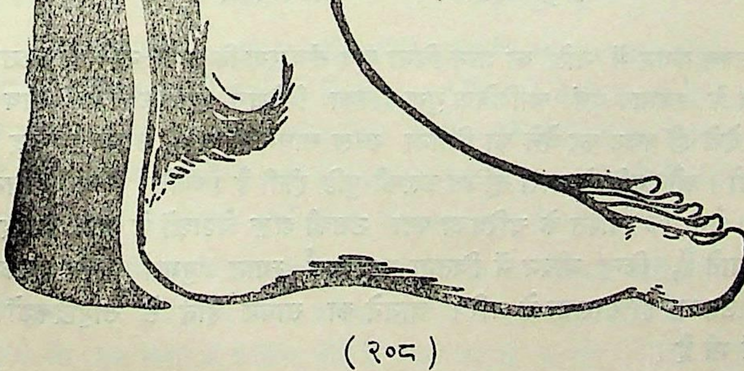
४. जिसके करतल न नीचे हों, न ऊँचे, साथ ही उत्कृष्ट रेखा युक्त हों, वह कामिनी विधवा नहीं होती, तथा चिरकाल तक पुत्र एवं अर्थसुख से सुखी, संभोगशालिनी होती है।

हाथ का सौन्दर्यः—पाँचों उँगलियाँ, उनकी मध्य की बन्धनी या अस्थि संयोजक झिल्ली, समान, या उचित अंश में हों और जिसके नाखून समान अल्परूप में हों वह हाथ सुन्दर माना ज़ाता है।

पादाकृति विज्ञान (Physiognomy)

अंग विज्ञान

चन्द्रार्धं कलसं त्रिकोणधनुषी खं गोष्पदं पौष्टिकम्।
शङ्खं सव्यपदेऽथ दक्षिणपदे कोणाष्ठकं स्वस्तिकम्॥
चक्रं छत्रवाङ्कुशं ध्वजकुलीराम्बूर्द्ध्वरेखाम्बुजम्।
बिभ्राणो हरिरूनविंशति महालक्ष्म्यार्चिताङ्ध्रि भवेत्॥



आपके चरणका रहस्य

श्री चरणोंका जितना महत्त्व मानव-जीवन में है, सामुद्रिकशास्त्र उससे कहीं अधिक महत्त्व चरणोंको देता है। श्रद्धाके केन्द्र चरण ही होते हैं इसीसे भगवच्चरणारविन्द चञ्चरीक श्री तुलसी ने 'श्री गुरू चरण सरोज रज' का ही ध्यान किया और आप भी किसी सभ्य सज्जनको 'कुटिया' में प्रवेश होते देख, कह उठते हैं:— 'आइये, श्रीमान् ! पदार्पण कीजिये।' चरणोंकी इसी महत्तासे प्रगाढ़ प्रेमाभिव्यक्ति अवसर पर श्रीमतीगण श्रद्धास्पद श्री चरणोंकी अपने आपको 'दासी' बतानेमें गौरवान्वित मानती हैं। घरकी वृद्धागण नई रसवन्त लजवन्तीके 'चरणों'कों ही अपने उपमानोंका उपमेय बनाती हैं।

हर प्राणीके शरीरके आधार पैर ही हैं। यदि पैर कमजोर हैं तो ऊपरका धड़ कितना ही पुष्ट क्यों न हो कभी भी नहीं ठहर सकता। पाश्चात्य या पौर्वात्य किसी भी पद्धतिको अङ्गीकार करके चलनेवाले प्रत्येक सामुद्रिक शास्त्रज्ञके लिए जितनी आवश्यकता 'हस्ताकृति विज्ञान' के समुचित ज्ञानकी है यदि उसी परिमाणमें शरीरके अन्य अङ्गों के शुभाशुभत्वका परिज्ञान हो तो फिर 'सोनेमें सुगन्ध' है। भारतीय सामुद्रिक शास्त्रज्ञ सम्प्रदायके अनुसार एक सामुद्रिक शास्त्रज्ञको सम्पूर्ण शरीर के नखसे शिख पर्यन्त अङ्गोंका ज्ञान होना फल विचारके लिए आवश्यक है क्योंकि 'सामुद्र' शब्द की परिभाषा 'सा सामुद्र मङ्गलदायिनीति'के अनुसार अङ्गाकृति लक्षणसे ही सम्बधित है। जैसा कहा भी है कि:—

उन्माद मान गति सारमनूक्त मादौ
स्नेह स्वर प्रकृति वर्ण ससन्धिसत्वम्।
क्षेत्रमृजां च विधिवत्कुलोऽवलोक्य-
सामुद्रविदद्वति यातमागतञ्च ॥

उक्त कथन में 'गति' का ज्ञान बिना पाद संचारण-क्रिया के नहीं हो सकता। व्यक्ति के स्वभाव एवं चारित्रिक गुण-दोषका विवेचन मुखाकृति एवं हाथ के बिना देखे ही प्रकट कर देने का जितना सरल साधन 'गति' है उतना शायद ही कोई हो। और गति के द्वारा सूचित फलकी पुष्टि होती है। व्यक्ति के चरण चिन्हों द्वारा। जैसा कि व्यक्ति के चरित्रका पता उसकी अङ्ग चेष्टाओं से वापी आदि से भी लगाते हैं, किन्तु जीवन में जितना महत्वपूर्ण स्थान 'युगल चरण सरकार' का है उतना ही सरलता से चरित्र जानने का साधन होने से सामुद्रिकज्ञों की दृष्टि में भी है।

मान लीजिए आप कहीं खड़े अपने मित्रों से बात कर रहे हैं। इतने में आपके बगल से कोई सन्देहास्पद व्यक्ति गुजरा और आपको सन्देहास्पद व्यक्तियों की गतिविधि का ज्ञान है तो आप स्पष्ट कह उठेंगे कि यह व्यक्ति कोई अपराध करके आ रहा है। यह ज्ञान आपको प्रथम उसकी गति से हुआ। उसके बाद आप अपने कथन की पुष्टि के लिए उसके चरण चिन्हों के पास जायँगे। और यदि वह व्यक्ति नंगे पैर हुआ तो आप उसके पैर की रेखाओं से और यदि वह जूते की छाप हुई तो उसके पैर रखने के ढंग से तुरन्त कह देंगे कि यह व्यक्ति अवश्य ही सन्देह के अनुसार सच्चा है। पादाकृति-विज्ञान के ज्ञाता होने के कारण आप अपराध-निरोधक कार्य में देश की वहुत बड़ी सहायता कर सकते हैं।

संस्कृत वाङ्मय के प्राचीन ग्रन्थों में अन्य अङ्ग लक्षणों का वर्णन जहाँ किया गया है वहाँ पैरकी रेखाओं, चिन्हों और बनावट का वर्णन भी उचित मात्रा में हुआ है। संस्कृत साहित्य के आदि कवि वाल्मीकि सीता के मुख से :—

समग्रयवमच्छिद्रं च पाणिपादं च पर्णवत्।
मन्दस्मितेत्येव मां कन्यां लाक्षणिकाः विदुः॥

[हाथ-पैर दोनों में सौभाग्यसूचक सम्पूर्ण यवाकृति चिन्ह और मन्दस्मिता कन्या मुझे लाक्षणिकों (सामुद्रिक शास्त्रज्ञों) ने बतलाया था।] कहलाना नहीं भूलते हैं, वहीं इनके बाद होनेवाले लेखनी के धनी, पुण्य साहित्य के स्रष्टा व्यास जी ने भी अपने पुराणों में कृष्ण और 'गोपी' के चरणों एवं चरण चिन्हों का वर्णन :—

ध्वजवज्राङ्कुशाजाङ्करेखावन्त्यालि पश्यतः।
पदान्येतानि कृष्णस्य लीलाललितगामिनः॥
कापि तेन समायाता कृतपुण्यामदालसा।
पदानि तत्याश्चैतानि घनान्यत्यतनूनि च॥

[अर्थात् हे सखि ! लीला ललितगामी कृष्ण के ध्वजा, वज्र, अंकुश, यव आदि शुभ चिह्न एवं रेखाओं से विभूषित पद-चिह्न तो देखो। यह देख, इनके साथ कोई मदमस्त नव-यौवना भी गयी है ये छोटे-छोटे पतले चरण उसी के दीख पड़ते हैं।] आदि वाक्यों में करते हैं। उक्त प्रसंगों से ज्ञात होता है कि पादाकृति विज्ञान भारतवर्ष में अत्यन्त प्राचीनकाल से चला आता है।

हमारे देश के प्रत्येक भाग में पैर एवं गतिविद्या के जानकर व्यक्ति तो मिलते ही हैं किन्तु, यहाँ देश के प्रायः प्रत्येक भाग में एक जाति विशेष के लोग पाये जाते हैं जो इस विद्या में अतिपटु होते हैं उन्हें 'खोजी' अर्थात् गवेषक कहते हैं।

राजस्थान की 'मीणा' जाति के लोग जो कि विशेषतः चौकादारी का काम करते हैं अब भी इसके जीवित उदाहरण हैं। इस जाति के कई व्यक्ति तो जल एवं स्थल दोनों में संदिग्ध व्यक्तियों का पीछा करनेवाले होते हैं। इस विज्ञान की पूर्णता केवल गति सम्बन्धी जानकारी से पूर्ण नहीं होती इसके लिए सम्पूर्ण पैरों की बनावट, नाखून, नसें, स्पर्श, रेखा और चिन्हों का भी ज्ञान होना आवश्यक है।

यों तो पैर के बीस भेद होते हैं पर उनमें से मुख्य पाँच प्रकार के पैर हैं—(१) सर्वोत्तम; (२) उत्तम, (३) मध्यम, (४) अधम, (५) निकृष्ट। सर्वोत्तम श्रेणी का पैर वह है जो पसीने से रहित, लाल कमल की आभावाला, जिसका तलवा कोमल हो, सटी हुई उँगलियाँ एवं ताँबे के समान रङ्ग के नाखून हों, एड़ियाँ सुन्दर हों, ऊपर का भाग उष्ण, नसें न दीख पड़ें, गुल्फ छिपे हों और ऊपरी भाग कछुवे की पीठ की तरह उठा हुआ हो। इस प्रकार के पैरवाले व्यक्ति देश एवं विदेशों में ख्याति प्राप्त तथा हर क्षेत्र में सम्मानित और राजकीय सदुपमान करनेंवाले होते हैं। इस प्रकार के पैर से सम्मिश्रित चरण नेपाल के स्वर्गीय राजगुरू श्री हेमराज पण्डित के पैरों में मिलते थे।

उत्तम पैर पसीने से रहित, गुलाबी रंग का तलुवा, लम्बी एवं सटी उँगली, लालिमा लिए हुए साधारण लम्बे नाखून, गुल्फ छिपा हों, नसें अदृश्य हो, ऊपरी भाग में उभरापन लिए हुए होता है, स्पर्श में मुलायम होता है। इस प्रकार के पैरवाले व्यक्ति कानून के जानकार, तीक्ष्णबुद्धि तथा उत्तम सलाह देनेवाले और थोड़े ही परिश्रम से प्रसिद्धि प्राप्त, रसिक, साहित्यिक एवं समाज में वैशिष्ट्य रखनेवाले होते हैं। ऐसे व्यक्तियों को सम्मानजनक यात्रा करने का मौका जीवन में प्रायः मिलता रहता है।

मध्यम पैर का तलुवा कोमल होने के साथ-साथ गेरुए गङ्ग का, नाखून सर्पाकार हल्का गुलाबी या पीलापन अथवा गेरुआ रङ्ग लिए हुए और मामूली नसें दीख पड़ें तथा उँगलियों पर साधारण बाल हों। इस प्रकार के पैरवाले व्यक्ति शीघ्र व्यवहार में अति प्रवीण तथा वार्तालाप में निर्भीकता लिए हुए परिश्रमी और दूर की ही सोचनेवाले, पारिवारिक चिन्ता से ग्रस्त तथा सीमितक्षेत्र तक सम्मानित और गणित तथा विज्ञान-विद्या के विषय में दिलचस्पी लेनेवाले होंते हैं।

उत्ताम पैर का पद-तल कुछ-कुछ भूरापन तथा सफेदी लिए हुए आकृति में चौड़ा, स्पर्श में रूखा और कठोर, ठण्डा, ऊपरी हिस्से पर पसीनेवाली उँगलियों पर बाल जमे हुए तथा चौड़ी, नाखून चिपटे, पीले या सफेद अधिक लम्बे या अधिक चौड़े हों और गुल्फ निकला हुआ हो ऐसे पैरवाले व्यक्ति कामदेव के वश में

तथा दरिद्रता के चक्कर में फँसे रहते हैं। इन्हें अपने ही शरीर से भाग्योंदय करने की इच्छा रहती है विद्याओंके विशेष प्रेमी और परम्परागत वंशाभिमानमें डूबे हुए थोड़ा पारिश्रमिक पानेवाले होते हैं। इनमें कामुकताकी प्रवृत्ति विशेष होती है।

निकृष्ट पैर का तलुवा मिट्टीके रङ्ग का होता है। एड़ी मोटी और जगह-जगह कटी-फटी, पैर स्पर्श में कठोर, ऊपरी भागपर नसें उभरी हुईं, पैर टेढ़ा-मेढ़ा और पीठ तथा अङ्गुलियोंपर बाल जमें होते हैं। नाखून छोटे-छोटे चिपटे, काला या हरापन लिए हुए रहते हैं। गुल्फ निकला हुआ होगा। ऐसे पैरवाले व्यक्ति दरिद्री और लम्बी-लम्बी बीमारियों से ग्रस्त, दूसरों की हाँ में हाँ मिलाने वाले, 'अनुयायी' मिथ्याभिमानी, अपने घर से दीर्घकाल तक दूर रहनेवाले, वेफिक्र और कुसङ्ग में रत रहते हैं।

पादाकृति विज्ञान में अङ्गुलियों का ज्ञान होना आवश्यक है। पैर की बनावट उत्तम होते हुए भी अङ्गुलियों की वक्रता, मोटापन, पतलापन, फल में न्यूनाधिक्य कर देती है। पैर की उँगलियों के नाम अँगूठे से प्रारम्भ होकर निम्न है—(१) अँगूठा (२) तर्जनी (३) मध्यमा (४) अनामिका (५) कनिष्ठका। प्रायः परिमाण भेदसे ये पाँच प्रकार की होती हैं—(१) लम्बी (२) मोटी (३) सम-एवं सुडौल (४) छोटी (५) पतली। हाथ एवं पैर दोनों जगह अँगूठे का महत्वपूर्ण स्थान है। पैर सम्बन्धी विविध रोगोंके अनेक प्रकारोंका इलाज पैरका अँगूठा बाँधकर निश्चित अवधि तक रखनेसे हो जाता है। इसका एक मात्र कारण पेट एवं पैरके अँगूठेका नसों द्वारा सम्बन्धित होना है। विशेषतः पैरका अँगूठा ६ प्रकारका होता है। (१) गोल (२) टेढ़ा (३) छोटा (४) चिपटा (५) चौड़ा (६) लम्बा।

यदि पैरका अँगूठा मांसल, उन्नत तथा गोलाकार हो तो व्यक्ति उत्तम सवारी से युक्त, पराक्रमी, विद्वान्, सुन्दर स्त्री एवं पुत्रवाला होता है। निर्मांस और अवनत गोल अँगूठेवाले व्यक्तिके पैरमें शस्त्राघात या आपरेशन अथवा व्रण विकार होता है। प्रथम प्रकारका अँगूठा स्त्रीका हो तो भाग्यशालिनी, सम्पत्ति युक्ता, बहुपुत्रा होती है। यदि दूसरे प्रकार अँगूठा हो तो धनिक एवं कुलवती होकर भी धनहीना लम्बे समयतक पतिसे दूर रहनेवाली होती है। टेढ़े एवं मांसल अँगूठे-वाले व्यक्ति जुआरी, धोखेबाज और परस्त्रीगामी होते हैं। साथ ही साथ संगीत प्रेमी और अपने परिवारसे दूर रहते हैं, किन्तु इनके कार्य उच्च श्रेणीके होते हैं।

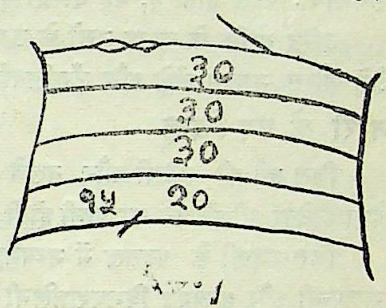
पैरका अँगूठा निर्मांसल और चपटा होकर टेढ़ा हो तो ये गुण निकृष्ट मात्रा के होंगे। यदि स्त्रीका ऐसा अँगूठा है तो यह परिवारकी मर्यादाका नाश करनेवाली तथा निर्लज्ज एवं असम्मानित जीवन व्यतीत करनेवाली है। छोटे अँगूठेवाले

व्यक्ति साहसी, निडर, युद्धप्रिय तथा दूसरोंपर अपनी छाप रखनेवाले होते हैं। निमांस और अवनत छोटे अँगूठेवाले व्यक्ति, अपराधी प्रवृत्तिके एवं चञ्चल तथा डरपोक होते हैं। छोटे अँगूठेवाली स्त्री कुलटा एवं निर्मांस छोटे अँगूठेवाली स्त्रियाँ प्रायः बन्ध्या होती हैं। चिपटे अँगूठेवाले व्यक्ति परमुखापेक्षी तथा नौकरी करके उदर पूर्ति करनेवाले होते हैं। प्रायः ऐसे व्यक्ति ससुराल पक्षसे सम्पन्न होते हैं और अल्प सन्तोषी होते हैं। चिपटे अँगूठेवाली स्त्रियाँ दासी और अकारण ही दूसरोंसे स्नेह रखनेवाली होती हैं। धर्म एवं तीर्थमें श्रद्धावान भी होंगी। चौड़े अँगूठेवाले व्यक्ति हृदयके विशाल आपत्तियों का हँसकर स्वागत करनेवाले तथा सादा जीवन व्यतीत करनेवाले होते हैं। मांस रहित अँगूठे में ये गुण अल्प हो जाते हैं। चौड़े अँगूठेवाली स्त्री वैधव्य संतप्त अथवा एकान्तसेवी और सम्पत्ति-शालिनी होती हैं। लम्बे व मांसल सुन्दर अँगूठेवाला व्यक्ति सहसा धन प्राप्त करता व व्यवहार पटु होता है। कर्तव्य पालनका सदैव ध्यान रहता है। यदि अँगूठा मांसल कम हैं तो ये गुण भी कम होंगे। यदि स्त्रीके पैरका अँगूठा लम्बा एवं मांसल है तो वह पतिव्रता, बहुपुत्रा, सौभाग्यशालिनी होती है।

इसी प्रकार पैरकी अन्य अँगूलियाँ यदि मृदु, समुन्नत और मांसल हुई तो फलकी उत्तमतामें वृद्धि ही करेंगी। यदि पैरकी अँगुलियाँ गोलाकार 'भरी हुई' और लम्बी (दीर्घ) हों तो व्यक्तिका परिवार काफी भरापूरा होता है। साहित्यका प्रेमी और दृढ़ विचारका होता है, यदि स्त्री की अँगुली ऐसी हो तो कुटिला और जिद्दी स्वभाववाली तथा सम्मानित होती है। मोटी (पुष्ट) अँगुलीवाले व्यक्ति विद्वान् और वेफिक्र होते हैं, केवल सम्मानकी प्राप्तिसे संतुष्ट रहते हैं। यदि स्त्रीके पैरकी अँगुलियाँ ऐसी हैं तो वे भुलक्कड़ स्वभावकी और शीघ्र ही सबका विश्वास करनेवाली होती हैं। इनका धन प्रायः दूसरे ही हड़पा करते हैं। सम अर्थात् न अधिक लम्बी और न ज्यादा चौड़ी उँगलियों जो देखनेमें सुडौल हों जिन व्यक्तियों की होती हैं वे व्यक्ति हँसमुख स्वभाववाले, कर्तव्याकर्तव्यका विचार रखनेवाले और बुढ़ापे में धनी होते हैं। इस प्रकारके पैरकी उँगलियोंवाली स्त्रियाँ हमेशा कार्यमग्न रहा करती हैं और स्वभाव कुछ ईर्ष्यालु होता है। छोटी उँगलियोंवाले व्यक्तिके कन्या संतति अधिक और कुछ संकोची स्वभावके होते हैं। एक न एक कामकी धुन इन्हें सदा लगी रहती है। छोटी उँगलीवाली स्त्रियाँ अपने पड़ोसियोंसे बहुत कम हिलमिलकर रहनेवाली, एवं कुरूपा होती हैं। पतली और मांसल उँगलियोंवाले व्यक्ति ईमानदार, अपने पदपर धीरे-धीरे सम्मानित होनेवाले विवेकशील होते हैं किन्तु, आर्थिक स्थिति मध्यम श्रेणीकी होती है। पतली उँगली वाली स्त्रियाँ दरिद्रा होती हैं।

विशेष बातें

यदि पैर की उँगलियाँ रूखी हों तो दरिद्रता की सूचक हैं। यदि पैर की चारों उँगलियाँ क्रमशः मोटी और पतली हैं तो व्यक्ति अपनी पत्नी का त्याग कर दे या उससे अलग रहेगा। यदि स्त्री के पैर की उँगली है तो वह धोखे से पति की हत्या की अपराधिनी होती है। उसे दासी का जीवन बिताना पड़ता है। पुरुष की मध्यमा उँगली तर्जनीसे बड़ी हो तो सम्मानदायक होती हैं। स्त्री की मध्यमा उँगली यदि तर्जनी से बड़ी हो तो पर पुरुष से गुप्त प्रेम करनेवाली होती है। अँगूठे के साथवाली तर्जनी यदि अँगूठे से थोड़ी बड़ी हो तो व्यक्ति अपने पूर्व वंशजों से अधिक धनवान और प्रसिद्ध होता है। यदि स्त्री की तर्जनों अँगूठे से बड़ी हो तो सम्मानित और पति को अपने प्रभाव में रखनेवाली होतीहै।



(२०६)

जिसके वामपद में अर्द्धचन्द्र, कलस, त्रिकोण, अनुः, शून्य, गोष्पद, प्रोष्ठी, मत्स्य और शंख ये आठ प्रकार के चिह्न और दक्षिण पाद में अष्टकोण, स्वस्तिक, चक्र, छत्र, यव, अङ्कुश, ध्वज, बज्र, जम्बू, उर्द्धवरेखा और पद्म ये ग्यारह प्रकार एवं कुल मिलाकर उन्नीस चिह्न जिसके पदतल अर्थात् तलवे में दिखायी दें तो महालक्ष्मी उसकी पद सेवा करती हैं।

राजचरण के लक्षण

राजा के तलवे पसीने से रहित, कोमल और कमल उदर की तरह देखने में सुन्दर मिली हुई उँगलियाँ, नाखून ताम्रवर्ण, गरम चरण और नसों के उभार से रहित, पदपृष्ट कछुए की पीठ की तरह उन्नत और गुल्फदेश रमणीय और अप्रकट होंगे।

जिनके चरणतल में पद्म, चक्र, तड़ाग, तोरण, अङ्कुश या वज्र चिह्न रहेंगे, वह निश्चय ही राजा होगा।

जिस व्यक्ति के दोनों पैरों के गुल्फ उन्नत और प्रकाशित तथा पदतल कमल जैसे सुकोमल और सुन्दर, सदा पसीने से युक्त, मृदु तथा मत्स्य, कमल चिह्न से युक्त होंगे, उस मनुष्यका सदा मंगल हुआ करता है।

यदि किसी के चरण की पर्व रेखा के भीतर अन्य रेखा दिखायी पड़े तो उसे शल्य लाभ होता है।

जिसके पैर के अँगूठे की जड़ से पूरे तलवेतक विस्तृत रेखा दिखाई दे, वही व्यक्ति राजा होता है और निष्कंटक राज्य भोग करता है।

जिसके पदमूल में वज्रचिह्न रहता है और वह रेखा यदि छिन्न न हो, तो उसका जन्म श्रेष्ठवंश में होता है।

जिसके दोनों चरण बृहद् होते हैं, कुरूप, टेढ़े और देखने में कठोर तथा सारी उँगलियाँ विरल होती हैं, वह दरिद्री हुआ करता है।

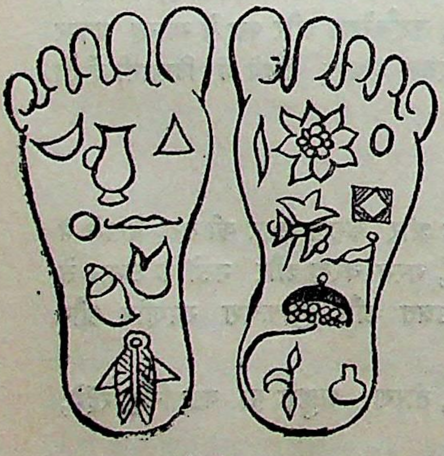
दरिद्र व्यक्ति के चरण नसों के उभारदार, टेढ़े, रूक्ष और शुष्क, पदपृष्ठ मैदान जैसे चौरस, नाखून पीले और उँगलियाँ फैली हुई रहती हैं।

नारी के पद चिन्ह

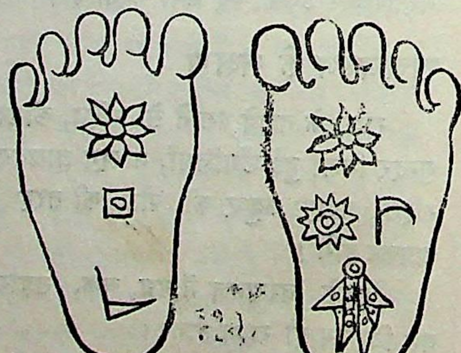
जिस स्त्री की हथेली और तलवे में ऊर्द्ध रेखा रहे, वह रमणी निम्नकुल में पैदा होनेपर भी निश्चय राजपत्नी होती है।

जिस रमणी के पदतल में मध्यमा उँगलीतक विस्तृत उर्द्ध रेखा रहे, वह स्त्री राजपत्नी और अखण्ड विभवशालिनी दोती है।

जिस रमणी के चरण में वज्र, पद्म और हलके चिह्न रहते हैं, वह नारी दासी होने पर भी रानी जैसी अवस्था प्राप्त करती है और नित्य राजभोग में जीवन व्यतीत करती रहती है।



(२१०)



(२११)

जिस रमणी के दोनों चरण स्नेह विशिष्ट यानी चिकने, मन्दर, उन्नत और ताम्र-

वर्ण नखवाले होते हैं और मत्स्य, अङ्कुश, पद्म, चक्र, हल इत्यादि चिह्नों से युक्त होते हैं, वह रमणी परम शुभदायिका होती है।

राज्ञी पद-लक्षण

राज्ञी या सम्राज्ञी के चरण स्निग्ध और समान, नाखून ताम्रवर्ण, उँगलियाँ प्रायः आपस में मिली हुई, पद का अग्रभाग उन्नत, गुल्फ देश अप्रकाश्य और सुप्रशस्त एवं तलवे देखने में कमल जैसे कमनीय, कोमल और हल चिन्ह से अङ्कित होते हैं।

नारी के पदनख स्निग्ध, उन्नत, ताम्रवर्ण और गोलकार होने से मंगलदायक होते हैं। जिस रमणी के पदपृष्ठ उन्नत, स्वेदहीन, शिराशून्य, चिकने मृदु और मांसल होते हैं, वही नारी रानी हुआ करती है।

जिस रमणी के चरण की उँगलियाँ प्रायः आपस में मिली हुईं, नाखून ताम्र-वर्ण, दोनों पैर ऊँचे, नस से युक्त और कच्छप पृष्ठ जैसे समुन्नत, तथा गुल्फ गूढ़ भावापन्न होते हैं, वह स्त्री राजस्त्री हुआ करती है।

नारी-पद के विविध लक्षण

जिस स्त्री के पदतल स्निग्ध, मांसल, कोमल, समान, स्वेदहीन, उत्तम और आरक्त (लालिमा युक्त) होते हैं, वही नारी भाग्यवती और विपुल विभव की अधिकारिणी होती हैं।

जिस स्त्री के चरणतल सुकोमल और हलके पसीजनेवाले होते हैं, प्रशस्त, जंघे लोमहीन तथा उरुस्थल हस्ति शुन्ड जैसे, स्थूल, शीतल और वर्तुल, क्रम-सूक्ष्म और लावण्ययुक्त होते हैं वह मंगल भाजन होती है।

जिस रमणी के चरण स्निग्ध, समानाकार होते हैं, वही पृथिवी में सत् ख्याति शालिनी होती है।

जिस नारी के चरणतल कर्कश, विवर्ण, कठोर, खण्डित, सपाट और विशाल आकृति के होते हैं वह नारी दुःखिनी और हतभागिनी होती है।

जिस नारी के पैर के अँगूठे टेढ़े, मांसल और अग्रभाग उन्नत होगा, वह रमणी सुख-सौभाग्य सम्भोग करनेवाली होगी।

जिसके पैर के अँघूठे टेढ़े, छोटे और चपटे होंगे, उस स्त्री के भाग्य में सुख संपत्तिका भोग नहीं होगा।

जिस स्त्री के चरण की तर्जनी, मध्यमा, अथवा अनामिका उँगली बूमि का स्पर्श न करे, वह नारी सुख सौभाग्य वर्जिता होती है।

चलने के समय जिस नारी के चरण की कनिष्ठा या अनामिका उँगली मिट्टी से छू न जाय, अथवा तर्जनी वृद्धाङ्गुलि या अँगूठे के ऊपर से जाय, तो निश्चय वह कुलटा हुआ करती है।

जिस नारी के चरण के अँगूठे बड़े होते हैं, वह नारी विधवा और हतभागिनी हुआ करती है।

जिसके चरण की उँगलियाँ दीर्घ होंगी, वही कुलटा होगी; जिसकी उँगलियाँ कृश होंगी, वह अति निर्धना होगी; जिसकी उँगलियाँ टेढ़ी-मेढ़ी होगी, उसकी परमायु अल्प और वह कामनी भग्न अवस्था में रहेगी।

जिस नारी के चलने के समय पृथिवी से धूल उठे, वह कलंकिनी और पितृ-मातृ तथा पति-कुलों की बिनाशकारिणी होगी।

जिसके पैर की उँगलियाँ विखरी हों, वह नारी दुःखनी होगी और जिसकी उँगलियाँ आपस में एकदम संलग्न होंगी, वह कामिनी बहुपति विनाशकारिणी और दूसरे की सेविका, होकर रहेगी।

जिस नारी के गमन के समय भूमि काँपे और जो लोभी तथा खूब आहार करनेवाली हो, उस नारीको विवाह में ग्रहण न करना चाहिये।

स्त्रियों के दोनों गुल्फ अप्रकट, शिराहीन और सुडौल होने से शुभकर और और विष्रम, उन्नत और देखने में रूखे हों तो वह अशुभकारिणी होती है।

गुल्फदेश समान होने से, अर्थात् पिंडलियाँ तारतम्य के अनुसार होने से वह नारी मङ्गलदायिका; बृहद् होने से भाग्यहीना, उन्नत होने से वेश्या और दीर्घ होने से दुःखभागनी हुआ करती है।

जो कामिनी राजहंस या मत्तगजगामिनी और सिंह या शेर की कमर जैसी पतली कमरवाली होंती है वह ललना सुख-सौभाग्यशालिनी होती है।

जिस कन्या के दोनों पैर, सुख और नेत्र स्निग्ध होंगे, वह कन्या यशस्विनी होगी।

जिसके नाखून, अधर और ओष्ठ टेढ़े हों, उस कन्यासे विवाह करनेपर सुख संभोग प्राप्त हुआ करता है।

जिस नारी के करतल में और पदतल में रथ, बज्र, ध्वज और चक्राकार चिह्न दिखायी दें, उसे अतुल ऐश्वर्य लाभ होता है।

जिस रमणीके पदतल में समस्तलक्षण परिपूर्ण रहते हैं, वह स्त्री सुखभागिनी होती है।

जिस कुमारी के दोनों चरणों के नाखून स्निग्ध उन्नताग्र सूक्ष्म, साथ ही रक्तवर्ण होते हैं, तलवे कमल कान्तिवाले और दोनों समान रूप रेखा के होते हैं, गुल्फ सुन्दर और निगूढ़ होते हैं; मत्स्य, अंकुश, शंख, चक्र, वज्र, हल और खड्ग चिन्ह युक्त होते हैं, उसी कुमारी से विवाह करना चाहिये।



(२१२)

रेखा और चिन्हादि देखने से जन्मशकादि का ज्ञान

अब हाथ और मस्तक की रेखादि और शारीरिक चिन्हादि देखकर जिस प्रकार जन्मशक, वयःक्रम, जन्मतिथि या दिनांक, जन्मकाल और जन्मलग्न जाना जाता है, उसका उपाय विभिन्न देशों के ग्रन्थों से कुछ उद्धृत करके नीचे लिखा जाता है। इस विषय के परिज्ञान के लिये इंग्लैण्ड के सुविख्यात सामुद्रिक शास्त्रवेत्ता सैण्डर्स साहबने अपने ग्रन्थ में लिखा है, उसे ही पहले लिखा जाता है।

विद्यार्थियों अभ्यास करने से पहले जिस व्यक्ति की हथेली की रेखायें साफ दिखायी दें, उनका जन्ममास, जन्मवार, जन्मदिनांक इत्यादिको सीखो। इस तरह अभ्यास होने के बाद अन्यान्य हथेलियों, हथेली की हर तरह की रेखाओं को देखकर अनायास ही जन्ममास, जन्मदिनांक आदि ठीक करके बताया जा सकेगा।

जन्ममास, जन्मवार और जन्मदिनांक किस प्रकार जाना जा सकता है, वह बताया जाता है।

तर्जनी के नीचे जिस स्थान में पितृरेखा समाप्त हुई है, इस स्थान से भोगरेखा के नीचे जो रेखा हथेली के बीच से कनिष्ठा उँगली की ओर गयी है, उसका नाम मातृरेखा है। यह रेखा पंजे के किस स्थान तक जाकर समाप्त हुई है और इस रेखा के बीच कई गुणन अर्थात् बज्र चिन्ह हैं अथवा वह अन्य कई रेखाओं द्वारा विद्ध अथवा खण्डित हुई है, इन्हें सूक्ष्मरूप से निरूपण करके बाद में उसे देखकर निम्नलिखित उपदेश के अनुसार जन्ममास, जन्मवार और जन्मतारीख निर्धारित करना होगा।

१. यदि यह मातृरेखा से पैदा होकर हथेली में निर्दिष्ट चन्द्रस्थान में गमन करके समाप्त हुई हो और वहाँ एक गुणन या बड़ी रेखा दिखायी दे तो निस्सन्देह जूनमास के दसवें दिन सोमवार को अर्थात् प्रायः ज्येष्ठमास के अन्तिम अर्द्धांश में प्रश्नकर्ता का जन्म हुआ है, इसे निरूपित करना चाहिये।

२. यदि इस मातृरेखा में दो गुणन या बज्ररेखा रहे तो वह जून मास की २० दिनांक को सोमवार का जन्म जाना जायगा। इस रेखा के बीच ३ से अधिक बज्ररेखायें नहीं होती। इसके द्वारा तीस दिन मात्र जाना जाता है। इसे देखकर महीने के ३० दिनों को यह बज्ररेखा तीनको आपस के अन्तर का परिमाण विभाग करके जन्मदिन की संख्या निरूपण करता होगा।

३. यदि यह मातृरेखा मंगल के निर्दिष्ठ स्थान में समाप्त हो तो प्रश्नकर्ता का जन्ममास मार्च (फाल्गुव का शेषार्द्ध या चैत्र का प्रथमार्द्ध), अथवा अक्टूबर (आश्विन का शेषार्द्ध या कार्त्तिक का प्रथमार्द्ध) और जन्मवार मंगल स्थित करना होगा। किन्तु पूर्व उपदेशानुसार जो कई गुणन यानी बज्ररेखा, विद्धरेखा या भिन्नरेखा हैं, उन्हें देखकर उस मास के किस दिनांक को और किस बार में जन्म हुआ है, यह स्थिर करना होगा।

४. यदि यह मातृरेखा बुध निर्दिष्ट स्थानतक गमन करके समाप्त हो तो मई वैशाख का शेषार्द्ध या ज्येष्ठका प्रथमार्द्ध), अथवा अगस्त (श्रावणका शेषार्द्ध या भाद्रका प्रथमार्द्ध) मास में बुधवार को प्रश्नकारक का जन्म हुआ है, स्थिर करना होगा। किन्तु पूर्व उपदेशानुसार गुणन अर्थात् बज्रविद्ध और भिन्नरेखा संख्या देखकर जन्मवार और जन्मदिनांक का निर्णय करना होगा।

५. यदि यह मातृरेखा वृहस्पतिग्रह के निर्दिष्ट स्थान में गमन करके समाप्त हुई है तो प्रश्नकर्ता नम्बर (कार्तिक के शेषार्द्ध या अगहन का प्रथमार्द्ध) अथवा फरवरी (माघ का शेषार्द्ध या फाल्गुन का प्रथमार्द्ध) मास में वृहस्पतिवार को पैदा हुआ जानना होगा, लेकिन पूर्व प्रणाली के अनुसार बज्र (गुणन`, बिद्ध या भिन्नरेखा देखकर दिनांक और जन्मवार जानना चाहिये।

६. यदि यह मातृरेखा शुक्रग्रह के निर्दिष्ट स्थानतक गमन करके समाप्त हो तो एप्रिल (चैत्रका शेषार्द्ध या वैशाख का प्रथमार्द्ध) या सेप्टेम्बर (भाद्रका शेषार्ध या आश्विन का प्रथमार्द्ध) मास में शुक्रवार को प्रश्नकर्ता का दिन स्थिर करना होगा, किन्तु पूर्व उपदेश के अनुसार जन्मदिनांक और जन्मवार निर्णय करना होगा।

७. यदि यह मात्ररेखा शनि के निर्दिष्ट स्थान की ओर समाप्त हो, प्रश्नकर्ता का जन्म मास दिसम्बर (अगहन का शेषार्ध और पौष का प्रथमार्द्ध) या जनवरी

(पौष का शेषार्द्ध और माघ का प्रथमार्द्ध) और जन्मवार शनि होगा, किन्तु पूर्व उपदेश मत से जन्मदिनांक और जन्मवार निर्णय करना होगा।

८. यदि मातृरेखा रवि के निर्दिष्ट स्थान में जाकर समाप्त हो तो जुलाई मास में (आषाढ़ का शेषार्द्ध या श्रावण का प्रथमार्द्ध) रविवार के दिन प्रश्नकर्ता का जन्म हुआ है जानना होगा, किन्तु पूर्व उपदेश के अनुसार जन्मदिनांक और जन्मवार निरूपण करना होगा।

६. जिस स्थान में दो मास कहे गये हैं, वहाँ उसका किस मास में जन्म हुआ है, इसे निरूपण करने का आदेश यह रेखा परिष्कृत; स्पष्ट और यदि उज्ज्वलवर्ण दिखायी दे तो उल्लिखित दो मासों में से प्रथम मास में कहना होगा। और यदि रेखा साफ नहीं है, अस्पष्ट है, मलिनवर्णा है तो दूसरे मास में जन्म हुआ है, स्थिर करना होगा।

१०. जिनकी मातृरेखा रवि और चन्द्र के निर्दिष्ट स्थान तक गयी है, उनकी यह रेखा सतत परिष्कृत और उत्तमवर्ण दिखायी देती है।

आँख देखकर जन्म समय का निर्णय

सैण्डर्स साहब ने आँखों को देखकर जिस प्रकार जन्म समय निकालने का निर्णय किया है, वह निम्न प्रकार है :—

रात्रि दो प्रहर के समय जन्म होने से उस व्यक्ति की आँखें कृष्णवर्ण या काली होंगी। एक बजे के समय जन्म होने से उसकी अपेक्षा कुछ परिष्कृत होगी। दो या तीन बजे के समय जन्म होने से ओलिव (जैतून) जैसा वर्ण और नेत्र-तारा के चारों ओर काला दिखायी देगा।

यदि रात के चार पाँच बजे के समय जन्म हो तो नेत्र-तारा के चारों ओर श्वेतवर्ण की होगी।

यदि सबेरे छः या सात बजे के समय जन्म हो तो नेत्रतारा अर्द्ध-नीलवर्ण और चारों ओर (कोनमत) श्वेत या (कोंनमत से) पीतवर्ण के होंगे।

दिन में ८ या ६ बजे जन्म होने से नयन-तारा के अन्तर्गत मणि के चारों ओर नीलबर्ण और आँखों का केवल मणिभाग मात्र मिश्रवर्ण का दिखायी देगा।

यदि दिन दस या ग्यारह बजे के समय जन्म हो तो समूची आँख नीली होगी और कुछ छोटे-छोटे चिन्ह रहेंगे।

दिन में १२ बजे के समय जन्म होने से उसकी आँख का सारा अंश हलका हरित् रंग का होंगा।

यदि दिन में एक या दो बजे के समय जन्म हो तो, नयन की पुतली अर्द्ध नील और अर्द्ध हरित रंग की देखी जायगी।

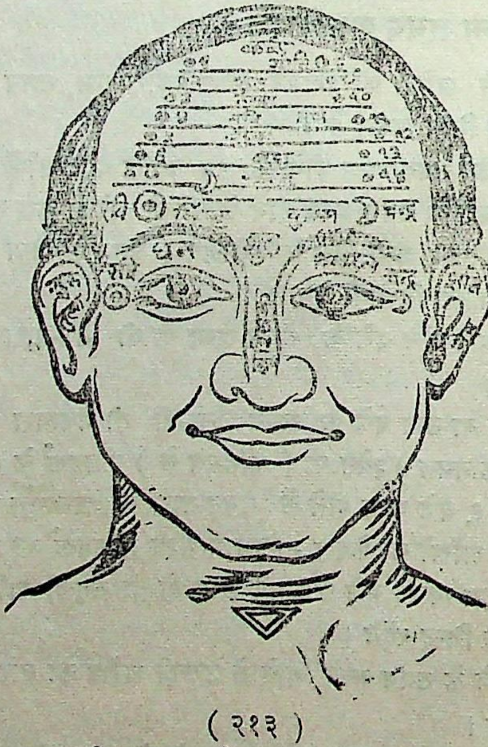
दिन में तीन और चार बजे के समय जन्म होने से चक्षु हल के मलिनवर्ण के जैसे और हरे रंग के दिखायी देंगे।

ललाट रेखा

(Metoposcopy)

ललाट या कपाल की सीमा—नासिका और दोनों भौंहों से ऊपर और केस-सीमा के नीचे तक तथा टेम्पुल, अर्थात् भौंहों के ऊपरी भाग के स्थानों को ललाट या कपाल कहते हैं।

ललाट के बीच की सात रेखाओं द्वारा सात ग्रहों का निर्णय होता है। केश के नीचे की प्रथम रेखा के अधिपति शनिग्रह; उसके नीचे की दूसरी रेखा के अधिपति वृहस्पति; इस प्रकार उसके नीचे तीसरी के अधिपति मंगल और चौथी के अधिपति रवि; पाँचवीं के शुक्र; छठी के बुध और सातवीं के चन्द्र निर्णीत हैं। इन रेखाओं द्वारा आयुःरेखा निर्णीत होती है और आयु प्रदान करनेवाले यही ग्रह हैं।



(२१३)

मयदानव, यवनाचार्य, मणित्थ और पराशर, इन लोगों के मत से जन्मकाल में रवि, चन्द्र आदि ग्रह क्रम से अपने-अपने उच्चस्थान में स्थिति होकर १९, २५,

१५, १२, १५, २१ और २० वर्ष पिण्डायु प्रदान किया करते हैं। अर्थात् जन्म-काल में रवि के परम उच्चस्थान में रहने से १६ वर्ष, चन्द्र के उच्चस्थान में रहने से २५ वर्ष, इस प्रकार मंगल १५ वर्ष, बुध १२ वर्ष, बृहस्पति ३५ वर्ष, शुक्र २१ वर्ष और शनि २० वर्ष प्रदान करते हैं, यही पिण्डायु नाम से विख्यात है।

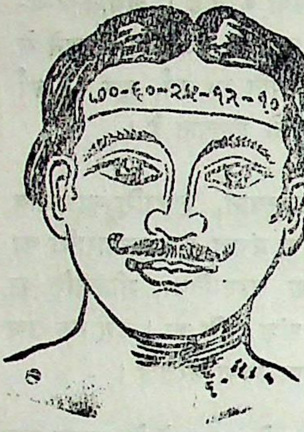
स्पष्टार्थ—मेषराशि का दशम अंश रवि का उच्चस्थान, वृषराशि का तृतीय अंश चन्द्र का उच्चस्थान, मकरराशि का अष्टादश अंश मंगल का, कन्याराशि का पंचदश अंश बुध का, कर्कराशि का पंचम अंश बृहस्पतिका, मीनराशि का सप्तविंश अंश शुक्र का और तुलाराशि का विंशति अंश शनि का। इन सब उच्च स्थानों में रहकर ही ग्रह पूर्वोक्त आयु की संख्या प्रदान किया करते हैं।

परमायु की संख्या जिस रूप में कही गयी है, अनेक कारणों से उसका ह्रास हो सकता है। उसका विवरण निम्न प्रकार से है।

जन्मकाल में ग्रह यदि अपने नीच स्थान में रहें तो उपर्युक्त उच्च स्थान वाले ग्रह जो पिण्डायु संख्या प्रदान करते हैं, उसकी आधी संख्या होगी। यदि कोई ग्रह उच्च या निम्नस्थान में न रहकर यदि उनके किसी मध्य स्थान में रहें तो अनुपात के अनुसार आयु की संख्या निर्णय करनी होगी।

स्पष्टार्थ—जन्मकाल में रवि के अपने नीच स्थान, अर्थात् तुलाराशि के दशम अंश में रहने से, उनका उच्चस्थान मेष के दशम अंश में रहकर जो १६ वर्ष पिण्डायु प्रदान करता है, इस स्थल में उसका आधा अर्थात् ६ वर्ष ६ मास आयु की संख्या प्रदान करेगा।

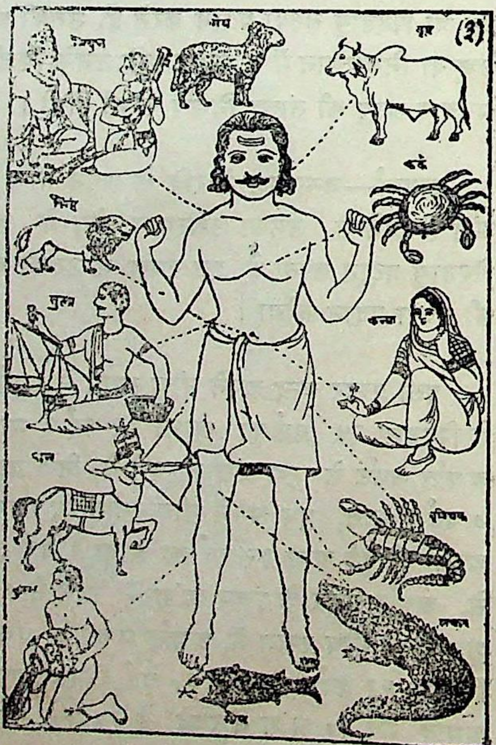
इसी प्रकार चन्द्र अपने नीच स्थान में अर्थात् वृश्चिक के तृतीय अंश में रहने से पिण्डायु २५ वर्ष का आधा १२ वर्ष ६ मास, मंगल अपने नीच स्थान में, अर्थात् कर्कट के २८ अंश में रहने से, निज प्रदत्त पिण्डायु पन्द्रह वर्ष का आधा ७ वर्ष ६ मास, बुध अपने नीच स्थान में, अर्थात् मीन के १५ अंश में रहने से अपनी दी हुई आयु १२ वर्ष का आधा ६ वर्ष बृहस्पति अपने नीच स्थान में रहने से, अर्थात् मकर के पंचम अंश में रहने से १५ वर्ष का आधा ७ वर्ष ६ मास, शुक्र अपने नीच स्थान में, अर्थात् मकर के पंचम अंश में रहने से अपनी प्रदत्त पिण्डायु २१ वर्ष का आधा १० वर्ष ६ मास, शनि अपने नीच स्थान में रहने से, अर्थात् मेष २० अंश में रहने से २० वर्ष का आधा १० वर्ष आयु की संख्या प्रदान किया करते हैं (चित्र नं० १)।



(२१४)

रेखाद्वारा वयःक्रमका वर्ष निरूपण करने का उपाय कहा जाता है। कान से टेम्पुल (Temple) स्थान तक एक क्षुद्ररेखा द्वारा वयःक्रम निरूपित होता है। यह बायें कान से कपाल की बाईं सीमा के आरंभ तक दिखायी देने से १० या १२ वर्ष वयःक्रम स्थिर होगा। यही रेखा ललाट का मध्यभाग भेदकर विस्तृत होने से और उसके हलके रूप में सुस्पष्ट दिखाई देने से २५ वर्ष वयस स्थिर होगा। इसके ह्रस्वत्व या दीर्घत्व के अनुसार यही २५ वर्ष से कुछ नीचे ऊपर निरूपित करना चाहिये।

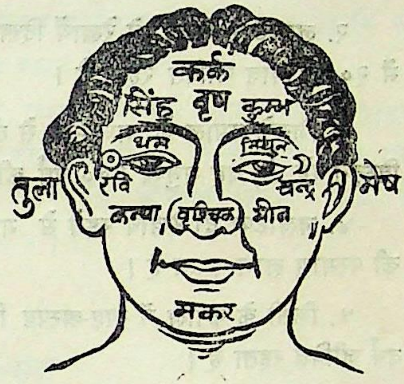
भारतीय ज्योतिर्विदोंने मानव शुभाशुभ ज्ञान करने के लिये जन्मलग्नादि द्वादश राशियों द्वारा मानव शरीर के बारह स्थानों का विभाग किया है। इसे ही कालपुरुष का अङ्ग विभाग कहा जाता है। जैसे, मस्तक मेष राशि का स्थान, मुख वृषराशि का, बाहु मिथुन का, हृदय कर्कट का, उदर सिंह का, कटि कन्या का वस्ति तुला का, गुह्य स्थान वृश्चिक का, उरु धनु का, जानु या घुटना मकर का, जघा कुम्भ का और पदस्थान मीन का निर्दिष्ट है।



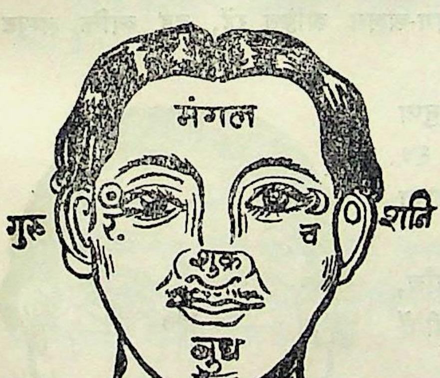
(२१५)

मनुष्य का आपाद मस्तक जिस प्रकार ग्रहों द्वारा विभक्त है, वैसे ही मुख मण्डल भी बारह राशियों में विभक्त है। जैसे—

मनुष्य के कपाल में ऊपरी भाग में कर्कट, मध्यस्थान में वृष, दाहिनी आँख की भौंह के ऊपर सिंह, बाईं आँख की भौंह के ऊपर कुम्भ, दाहिनी आँख पर धनु, आँख पर मिथुन, दाहने कान के ऊपर तुला, बायें कान के ऊपर मेष, नाक के ऊपर वृश्चिक, दाहने गंडपर कन्या, बाएँ गण्ड पर मीन और चिबुक के ऊपर मकर का अवस्थान रहता है।



(२१६)



(२१७)

राशियों का स्थान ऊपर बताया गया है, इसी प्रकार मुखमण्डल पर भी ग्रहों का अधिकार है। जैसे—

कपाल के अधिपति मंगल, दाहिनी आँख के रवि, बाएँ नेत्र के चन्द्र, दाहिने कान के वृहस्पति, बाएँ कान के शनि, नासिका के शुक्र और मुख के बुध हैं।

फिर विशेष रूप से बाईं आँख के ऊपरी भाग में चिन्ह है वह चन्द्र का, दाहिनी आँख के ऊपर रवि का और नाक के मूल पर शुक्र का चिन्ह अवस्थित है। जन्मकाल में जिस ग्रह का आधिपत्य होगा, उसी ग्रह के चिन्ह निर्दिष्ट स्थान में स्पष्टरूप में दिखायी देंगे। सामुद्रिकवेत्ता इन ग्रह-चिन्हों को देखकर शुभाशुभ फल कहा करते है।

नर ललाटरेखा फल

१. ललाट में एक भी रेखा न रहने से मनुष्य चालीस वर्षतक जीवित रहता है। जिसके ललाटपर छिन्न-भिन्न कितनी ही रेखायें रहें, उसकी अपमृत्यु होती है।

२. ललाटपर केवल दो रेखायें दिखायी दें तो मनुष्य ४० वर्ष और एक रेखा में २० वर्ष मात्र जीवित रहता है।

३. जिसके कपाल के मध्यभाग से दोनों किनारों पर कानतक एकमात्र रेखा विस्तृत रहे तो, वह मनुष्य १०० वर्ष की परमायु लाभ करता है।

४. ललाटपर दो रेखायें रहने से मनुष्य ७० और ३ रेखायें रहने से ६० वर्ष की परमायु लाभ करता है।

५. किसी के कपाल में स्पष्ट-अस्पष्ट कितनी ही रेखायें रहनेपर वह मनुष्य २० वर्ष जीवित रहता है।

६. जिसके ललाटकी रेखा केश के अन्तिम भागतक विस्तृत रहे, उसकी परमायु ८० वर्ष की होती है।

७. जिसका कपाल रेखाशून्य हो, वह व्यक्ति ६० वर्ष तक जीवित रहता है।

८. जिसके कपाल में रेखायें अलग-अलग अङ्कित रहें, वह व्यक्ति लम्पट होता है।

९. ललाट पर तीन रेखायें रहने से मनुष्य १०० वर्ष तक और चार रेखा रहने से ९५ वर्ष परमायु लाभ करता है और राजा होता है।

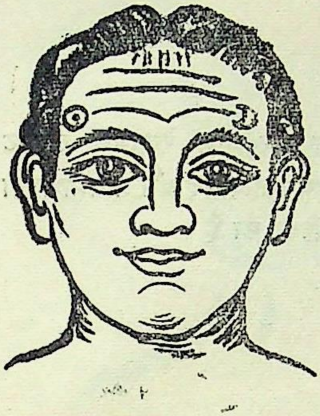
१०. जिस व्यक्ति के ललाट पर पाँच, छः, सात, नौ या अनेक रेखायें दिखायी दें उसको ५० वर्ष की परमायु होती है।

११. ललाट में रक्तवर्ण या वक्ररेखा रहने से आयु ४० वर्ष और भौंहों तक आयत रेखा रहने से ३० वर्ष की स्थायी आयु होती है।

१२. जिसके ललाटमें रेखायें बाईं ओर



(२१८)



(२१६)

वक्र होकर अङ्कित रहें, उनकी २० वर्ष की परमायु होती है। ये रेखायें छोटी हों तो जीवन का परिमाण अतिअल्प होता है।

१३. ललाट पर वृहस्पतिरेखा के ऊपर एक इस प्रकार वृत्तचिन्ह रहने से वह धनहानि का निर्देश करता है (चित्र ६)।

१. ललाट में सूर्य और चन्द्र रेखाद्वय इस प्रकार आपस में मिल जाने से वे उस व्यक्ति का अति सौभाग्य निर्देश करती हैं (चित्र ७)।

नर ललाट का आकार और चिन्ह-फल

जिसका कपाल उन्नत, विशाल, शंखाकृति, उच्च-नीच या अर्द्ध चन्द्राकार होता है, वह मानव निर्धन होनेपर भी विभवशाली होता है।

जिसके कपाल में झँझरीदार रेखायें चारो ओर फैली हों वह मनुष्य अध्यापक होता है।

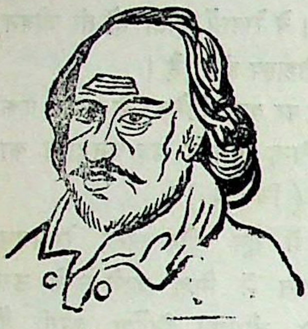
ललाट पर इस तरह की भग्नरेखायें निर्देश करती हैं कि यह व्यक्ति अनेक और विवध कार्यों का भार अपने ऊपर लेता है, लेकिन सामान्य कार्य-संपादन किया करता है।



(२२०

ललाट में अनेक शिरायें रहने से वह मनुष्य पाप के कार्य में लगा रहता।

स्वस्ति चिन्ह जैसा मंगलमय निशान जिसके कपालपर दिखायी दे और वह उन्नत शिराओं से व्याप्त हो तो वह व्यक्ति महाधनशाली होता है।



(२२१)

यह सुप्रशस्त और शुभ रेखायुक्त ललाट जगत् के सुप्रसिद्ध मनस्तत्वविद् और प्रतिभाशाली नाटककार शेक्सपियर का है।

जिसका ललाट ताम्रवर्ण और उन्नत होगा और जिसके कन्न-देश में कोई रेखा न दिखायी दे, वह व्यक्ति उन्मत्त होकर पृथ्वी परिभ्रमण करेगा।

जिसके कपालपर त्रिशूल चिन्ह दिखाई दे, वह व्यक्ति धनवान् और बहुत सन्तान युक्त होता है और १०० वर्ष की आयु पाता है।

जिसके ललाटपर बज्र, त्रिशूल और धनुष के चिन्ह दिखायी दें वह सबका प्रभु होकर रमणियों का प्रिय होता है।

नारी-ललाट

नारी का कपाल शिराशून्य रोंम विहीन, अर्द्ध चन्द्राकार, अनिम्न और तीन अंगुल परिमाण का होगा तो वह पति-परायणा, अरोगिनी और सौभाग्यवती होती है तथा स्पष्ट स्वस्तिक चिन्ह रहने से विभवशालिनी और राज्याधिकारिणी होती है।



(२२२)

जिस रमणी की भौंहें अनति-विशाल, नवोदित शशिकला को तरह मनोहर, वक्र आकृति की और ललाट रोमहीन होगा एवं अनुन्नत और अर्द्ध चन्द्राकार हो, वह नारी शुभ होती है।

दीर्घाकार रेखा को प्रलम्बिनी कहा जाता है। यह रेखा जिस नारी के कपाल में रहे, उसके देवर का विनाश होता है। उदर में और दोनों नितम्बों में यह रेखा रहने से पति-विनाश कराती है।

जिस रमणी के ललाट में त्रिशूल रहे, वह नारी सहस्त्रों नारियों पर प्रभुत्व प्राप्त करती है।

जिस रमणी के कपाल भाग में श्रीवत्स, स्वस्तिक चिन्ह और एक रेखा रहे, यह चिन्ह शुभ होता है।



(२२३)

(शुभ लक्षणवती नारी)

जिस रमणी का ललाट, उदर और भग, यह तीनों अंश लम्बमान रहें, वह नारी श्वसुर पति और देवर तीनों का भक्षण करती है, यानी उनकी मृत्यु होती है।

जिस कन्या के कपाल में या माँग में दक्षिणावर्त रेखा रहे, वह कुलक्षणा होती है, अतः उसका विबाह शुभकर नहीं है। उसे दूर से ही यत्नपूर्वक परित्याग करना चाहिये।



(२२४)

इस प्रकार की स्त्रियाँ प्रायः कलहप्रिया एवं कटु बोलने- में चतुर होती हैं तथा कष्ट झेलने की सहनशीलता इनका प्रधान गुण होता है।



(२२५)

ललाट में तिल या लम्बा निशान

१. यदि किसी पुरुष या नारी के ललाट की दाहिनी ओर एक संख्या के बगल में शनिरेखा के ऊपर एक तिल या एक लम्बा निशान हो और वह रेखा को स्पर्श न करे और उक्त तिल जैसा ही एक और तिल यदि छाती के बीच हो तो वह वपन या कृषि कार्य में सौभाग्य लाभ करती है। यही तिल यदि शहद, पद्मरागमणि या जवाहर जैसे रक्तवर्ण का हो तो वह नर या नारी जीवन पर्यन्त सुख-सौभाग्य का भोग किया करते हैं। यदि यह तिल काला हो तो अवस्था परिवर्तनशील होगी। यदि यह तिल मसूर जैसा हो तो वह पुरुष अधिकांश अग्रसर और परिवार में प्रधान होता है। नारी के ऐसा रहने पर वह उत्तराधिकार रूप में पैतृक धन की उत्तराधिकारिणी और मृतक का दान प्राप्त करेगी। यह तिल शुक्र, बुध और मंगल स्वभाव वाला होता है।

२. नर या नारी ललाट की दाहिनी ओर २ संख्या की बगल में वृहस्पतिरेखा के अधिकार के अन्दर इस रेखा को स्पर्श न करके एक तिल रहने से और दूसरा एक तिल शरीर के दाहिनी ओर रहने से ज्ञात होता है कि यह व्यक्ति विवाह सौभाग्य लाभ, दीर्घजीवी और अपने साहसिक कार्यों के कारण सम्मान एवं महान् ऐश्वर्य अधिकार प्राप्त करेगा। यदि यह तिल शहद जैसा हो तो किसी धार्मिक व्यक्ति की दया से भाग्यवान् होगा। यदि यह तिल काला हो तो वह अपव्ययी रूप में निन्दित होगा।

नारी के ऐसे लक्षणों वाला तिल रहने पर वह अपने कार्यों द्वारा आश्चर्यजनक सौभाग्य लाभ करेगी। यदि इस तिल का कुछ अंश मूँग की दाल या मसूर की तरह उठा हुआ हो तो ज्ञात होता है कि जातक या जातकी किसी गुप्त, अपूर्व और अज्ञात धन को प्राप्त करेंगे। यह तिल शुक्र और मंगल प्रकृति का होता है।

३. ललाट के दाहिने और ३ संख्या के बगल में मंगल रेखा के अधिकार के अन्दर एक तिल और इसीके अनुकूल एक दूसरा तिल दक्षिण बाहु पर रहने से वह युद्ध विषयक कार्य प्रयोग में धन और उत्तम सौभाग्य का निर्देश करता है। यदि तिल मधुवर्ण हो तो वह चौपायों द्वारा भाग्यलाभ करेगा। यदि रक्तवर्ण हो तो क्रीड़ा, गीत और नाटकाभिनय में सौभाग्य लाभ करेगा। यदि कृष्णवर्ण हो तो घोड़े पर से गिरने का भय रहता है अतः सावधान रहना होगा। यदि वह मसूर जैसा प्रत्यक्ष हो तो अग्नि सम्बन्धी व्यवसाय में सौभाग्य प्राप्त होगा।

नारी के ऐसे लक्षणों वाला तिल रहने से वह धनवान् स्वामीवाली और प्रसन्नता, निश्चय, दृढ़ता, सहिष्णुता, और मानसिक बल आदि एकत्र गुण प्राप्त होंगे।

४. ललाट के दाहिनी ओर ४ अंक के बगल रविरेखा के अधिकार के बीच उस रेखा को स्पर्श न करके एक तिल रहने से और वैसा ही एक और तिल पीठ में होने से ज्ञात होता है कि वह व्यक्ति जमींदार, मालिक या किसी बड़े के दान द्वारा धन, सम्मान और भोग सुख प्राप्त करता है। यदि यह तिल मधुवर्ण हों तो उसका सौभाग्य प्रधानतः अधिकार और भूमि के बीच होगा। यदि रक्तवर्ण हो तो सम्मान और पदोन्नति। यदि काला हो तो उसकी इच्छा का प्रतिबन्धक होगा और यदि वह सम्मान और धन प्राप्त करे तो मालिक के दान से प्राप्त करेगा, अपने गुण या योग्यता से न होगा।

किसी नारी के ऐसा तिल रहने से ज्ञात होता है कि वह रमणी किसी के मरने पर उत्तराधिकारिणी होगी, और सौभाग्यजनक द्रव्य प्राप्त करेगी।

५. ललाट के दाहिनी ओर ५ अंक के बगल शुक्ररेखा के अधिकार के बीच रेखा को स्पर्श न करके एक तिल रहने से और वैसा ही एक और तिल उदर में दाहिनी ओर रहे तो ज्ञात होता है वह व्यक्ति विवाह में प्रचुर धन प्राप्ति के साथ सौभाग्य और बन्धुत्व प्राप्त करेगा। यदि किसी के मधुरङ्ग का तिल हो तो वह व्यक्ति अपने साथियों में महत् और सौभाग्यशाली होता है। यदि रक्तवर्ण का हो वह महत् दयालु और संभ्रान्त लोगों में हितकर सम्मान लाभ करता है। यदि काला तिल हो तो वह व्यक्ति पवित्र या जितेन्द्रिय होकर परस्त्री सहगमन आदि से दूर रहता है। यदि वह मसूर सा उठा हुआ हो तो वह सम्मानास्पद-संवादवहन-कारी-वैदेशिक दौत्य कार्यादि में लगेगा।

यदि किसी नारी के ललाट में ऐसा ही तिल रहे तो सूचित होता है कि नारी सुखसौभाग्य लाभ करेगी। किन्तु वह अल्पायु प्राप्त करेगी और शत्रु सदा उसके अपकार की सोचा करेगा। यदि तिल काला हो तो वह नारी लज्जाशीलता और अपनी पवित्रता की रक्षा में सदा आग्रह रखेगी।

६. यदि ललाट के दाहिने भाग में ६ अङ्क के बगल में बुधरेखा के अधिकार में एक तिल ऐसी रेखा और चन्द्ररेखा के प्रतिबन्ध में न हो तो और वैसी ही एक और रेखा छाती की दाहिनी ओर ऊपर में हो तो ज्ञात होता है कि वह व्यक्ति उत्तम बुद्धियुक्त और श्रमशील होगा और अपनी प्रतिभा और उद्भावना शक्ति से सौभाग्य लाभ करेगा। तिल के मधुवर्ण होने से वह व्यक्ति व्यवसाय में सौभाग्य प्राप्त करेगा। तिल के रक्तवर्ण होने से विज्ञान अनुशीलन में सौभाग्यलाभ करेगा। यदि तिल काला हो तो धूर्तों के साथ पत्र व्यवहार कभी न करना चाहिये। यदि तिल मसूर-सा उठा हुआ तो वह अपने कार्य-समूह में बहुदर्शिता लाभ करेगा।

यदि नारी ललाट में ऐसा तिल रहे तो वह उत्तम प्रतिभाशालिनी, सुरसिका और दीर्घायु होगी। किन्तु यदि तिल काला हो तो मिथ्या अपवाद से सावधान रहना चाहिये। यह तिल बुध और बृहस्पतिग्रह के स्वभाव का होता है।

७. यदि किसी के ललाट में दाहिनी ओर ७ अङ्क के बगल में और चन्द्ररेखा के अधिकार में एक तिल इस रेखा का प्रतिबन्धक न हो या बिना स्पर्श के ही और वैसा ही एक तिल उदर में दक्षिण की ओर हो तो समझना होगा कि वह व्यक्ति व्यवसाय में लाभ करेगा। उसका भाग्योदय थोड़ा बहुत भ्रमण में भी होगा। इसके मधुवर्ण होने से दीर्घ भ्रमण में निश्चय लाभ होगा। यदि काला हो तो वह व्यक्ति प्रतारित होगा। मसूर-सा उठा रहने से विवाह में मंगल होगा।

नारी ललाट में ऐसा तिल रहने से उसके विवाह से उत्तम भाग्योदय होगा। मधुवर्ण हो तो उसका विवाह किसी विदेशी से होगा। रक्तवर्ण धनलाभ निर्देशक है। काला तिल, उसके पति को देश भ्रमण कराता है और काफी दिनों तक वियोग रखायेगा। मसूर-सा उठा रहने पर स्त्री पति के साथ भ्रमण करेगी। यह तिल वृहस्पति और मंगल स्वभाव का होता है।

८. ललाट के बाईं ओर शनिरेखा के अधिकार के बीच ८ अङ्क के बगल में एक तिल वृहस्पतिरेखा को बिना स्पर्श किये और वैसा ही एक तिल पृष्ठ के बायें भाग में होने से वह लम्बी जेलयात्रा वताता है। मधुवर्ण होने से मामूली कारण से शत्रु विवाद में कारावास होगा। रक्तवर्ण होने से शीघ्र कारामुक्त होगा और काला होने से उसका जीवन कारागार में ही समाप्त होगा। मसूर-सा उठा रहने पर उसके दुर्भाग्य में कुछ कमी होगी।

नारी ललाट में ऐसा तिल रहने पर उसकी भविष्यवाणी यह है कि वह अपने देश से वहिर्गत होकर अनेक शारीरिक और मानसिक क्लेश या उसके कारण का भोग करेगी और उसके दो पति होंगे। यह तिल शनि और वृहस्पति तथा बुध के स्वभाव का होता है।

९. ललाट के वाम भाग में वृहस्पतिरेखा के अधिकार में ९ अङ्क के बगल में एक तिल और पाकस्थली के बाएँ भाग में दूसरा एक तिल रहने से वह विलासी होने और सौभाग्य के अपव्यय के बारे में सतर्क करता है। यह मधुवर्ण हों तो स्थैर्य और मन की प्रशान्ति, विनय और शिष्टता प्रदान करता है। यदि रक्तवर्ण हो तो यह कठोर अवस्था और अति अवाध्यरीति का निर्देश करता है। और यदि तिल मटर जैसा हो तो लघु और अवनत होने का निर्देश करता है।

नारी ललाट में ऐसा तिल रहने से यह उसके निजी सौभाग्य का अपच्चय दम्भशीलता और असम्मानकर अश्लीलता का निर्देशन करता है। यह तिल शुक्र और मङ्गल के स्वभाव का होता है।

१०. ललाटके बायें भागमें मंगल रेखाके अधिकारमें १० अंकके बगलमें एक तिल और वामबाहुमें दूसरा एक तिल रहनेसे वह निर्देश करता है कि यह व्यक्ति इच्छासे नरहत्या करेगा और चिड़चिड़ा या क्रोधी स्वभावका, कलहप्रिय और बिना कारणके भर्त्सना करनेवाला होगा। यदि यह तिल मधुवर्ण हो तो वह हत्याके अपराधसे बचाकर अपने शत्रुओंका उपहास्य बनायगा। यदि रक्तवर्ण हो तो स्त्रियोंके लिए व्याकुल होगा। यदि काला हो तो द्वेषके कारण विश्वासघात करके हत्या करायगा।

नारी ललाटमें ऐसा तिल रहनेसे निर्देश करता है कि नारी कलहप्रिया और भर्त्सनाकारिणी होगी और वह अपने पड़ोसी द्वारा चोट खायगी। यह तिल शनिग्रह की पद्धतिका होता है।

११. ललाटके बाएँ भागमें रविरेखाके अधिकारके बीच एक तिल रहनेसे और वैसा ही एक तिल छातीमें बाईं ओर रहनेसे यह भय दिखाता है कि वह दुर्भाग्य और बड़ोंके सामने घृणाका पात्र होगा। यदि मधुवर्णका हो तो वह दरिद्र और अभावग्रस्त होगा। यदि काला हो तो हठी, अविचारी और शासनकी इच्छा रखनेवाला होगा। यदि यह चमड़ेके ऊपर उभारदार हो तो उसके दुर्भाग्यका भली प्रकार शमन कर सकेगा।

नारी-ललाटमें ऐसा चिन्ह रहनेसे वह उसकी दरिद्रता और दुर्भाग्यका निर्देशक होगा। यदि काला हो तो मन्द भाग्यको दृढ़ करता है। यह तिल मङ्गल चन्द्रके स्वभावका है।

१२. ललाटमें बाईं ओर शुक्ररेखाके अधिकारमें उसमें अछूता रहने पर और वैसा ही दूसरा तिल कन्धेपर रहनेसे बताता है कि वह किसी दूसरे व्यक्तिका दुःख और मनोकष्ट, शारीरिक और मानसिक क्लेश या उसके कारण पीड़ाकारक होगा। यदि मधुवर्णका हो तो उसके सन्बन्धियों द्वारा उसपर विपत्ति आयगी। यह रक्त-वर्ण हो तो सम्बन्धी या भाई-बन्धुओं द्वारा रक्तपात होगा। यदि यह तिल काला हो तो स्त्रियोंके कारण खून-खराबी होगी। चमड़ेके ऊपर उठ आनेसे दुर्भाग्यका कुछ शमनकारी अवश्य ही होगा।

नारी-ललाटपर ऐसा ही तिल रहनेसे वह चपलता, कृष्ण वर्ण होनेसे व्यभि-चारिणी होने का निर्देश करता है। वह नारी यौवनमें वेश्या और वृद्धकालमें कुकर्ममें सहायिका तथा कुटनी होगी और गहरे दुर्भाग्यमें पतित होती है। यह तिल मंगल और चन्द्रग्रहकी प्रकृतिका होंता है।

१३. किसी के ललाटमें बाईं ओर १३ अङ्कके बगलमें बुधरेखाके अधिकारमें रेखाको न छूते हुए यदि तिल वर्तमान हो और वैसी ही एक दूसरी ओर रेखा बाईं

ओर रहनेसे ज्ञात होता है कि वह व्यक्ति मुकदमेबाजीमें पड़ेगा और तुच्छता एवं शत्रुता प्राप्त करेगा। यदि वह मधुवर्ण हो तो वह उस व्यक्तिकी स्पष्ट प्रतिभा और कौशल के कारण विवाद पैदा होता है। यदि रक्तवर्ण हो तो विवाद अचिन्तन कार्य के फल से होगा। यदि काला हो तो कपटताके कारण विवाद होगा। यदि मसूर जैसा उभरा हो तो अपने सतर्क अध्यवसायके फलसे भाग्यकी उन्नति करेगा।

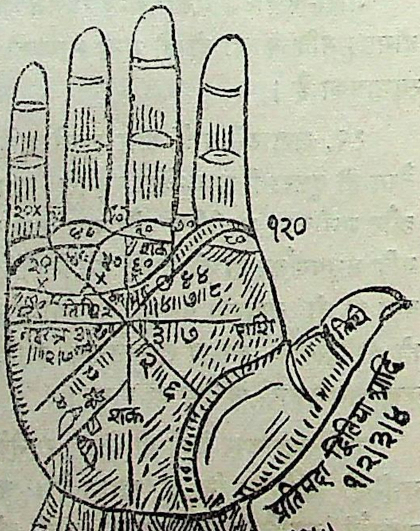
नारी ललाटमें वैसा ही तिल रहनेसे उस नारी के अनेक पति होंगे यानी वह वेश्या होगी। यदि काला तिल हो तो नारी पर-पुरुषगामिनी, वाह्यप्रिया या अति भाषिणी होगी। यह तिल मङ्गल और बुधकी प्रकृतिका होता है।

नष्ट जन्मपत्र विचार

अङ्क सामुद्रिक मतसे हाथका पञ्जा

जिनकी टिप्पणी या जन्मपत्री नहीं है, उनकी जन्मपत्री विविध संकेतों के अनुसार तैयार हो जाती है।

प्रथमतः—अङ्क और रेखा सामुद्रिक शास्त्रके मतसे मनुष्यके हाथोंके पंजेमें निर्दिष्ट स्थानकी रेखा और गणनासे जो अङ्क होगा या जो अङ्क दिखायी देंगे, उन अंकोंमें जन्मशक, मास, दिन, वार, तिथि, नक्षत्र, जन्म-लग्न, राशि और दशा आदि निरूपित हुआ करते हैं और पंजेमें निर्दिष्ट रेखा आदि कितनी दूर गयी हैं, उन्हें भी देखकर जन्ममास आदिका ज्ञान हुआ करता है। उसपंजो और उँगलियोंके पूर्वमें और उँगलियों के मूलमें निर्दिष्ट स्थानमें जन्मलग्न और जन्मकालमे कौन ग्रह किस राशि में थे, उन्हें जानकर पत्री तैयार की जा सकती है। इसके अतिरिक्त सामुद्रिक शास्त्र मतसे कपालकी रेखा और चिह्नादि देख कर और अङ्ग-प्रत्यङ्गके अवयवमें निर्दिष्ट स्थानकी ग्रह राशिके चिह्नादि देखकर भी पत्री तैयार की जा सकती है।



(१४)

द्वितीयः—केरलीय आदि ग्रंथोंकी गणना-प्रणालीके मतसे प्रश्नकर्ताके प्रश्नके

अक्षरोंको गिनकर या अन्य मतसे उस अक्षरका पिण्डाङ्क लेकर संकेतके अनुसार गणना द्वारा नष्ट जन्मपत्री पुनः बनायी जा सकती है।

तृतीयतः—प्रश्न-लग्न गणना शास्त्रके मतसे प्रश्नलग्न, उस लग्नके अंश द्वारा और त्रिशांश आदि निरूपण करके ग्रह स्पष्ट पञ्चांग देखकर या ग्रह स्पष्टके अनुसार उस समय कौन ग्रह किस राशिके किस अंशमें थे, इसे जानकर उनका और लग्नका बलाबल विचार करके नष्ट जन्मपत्रका उद्धार हो सकता है। ऐसी अवस्था में जिस प्रकार लग्न निरूपण करके पत्री तैयार की जा सकती है वह बृहज्जातक, दिनचन्द्रिका आदि ग्रन्थोंसे उद्‌धृत करके कुछ यहाँ दिया जाता है।

गर्भलग्न

आधानजन्मा परिबोधकाले संपृच्छतो जन्म वदेद् विलग्नात्।
पूर्वापरार्द्धे भवनस्य विद्धयाद् भानाबुदग्दक्षिणगे प्रसूतिम्॥

आधान लग्न द्वारा जिस प्रकार जन्मलग्नका निरूपण करना होता है, वह इस प्रकार बताया गया है। जिस व्यक्ति का आधानकाल और जन्मकाल की निश्चयता नहीं है, प्रश्नलग्न ही से उसका जन्म-समय निरूपण करना होगा।

किसी व्यक्ति के नष्टजातक उद्धारका प्रश्न करनेपर किस लग्नमें प्रश्न हुआ, इसे निश्चय करके उस समय उस लग्नका कौन होरा होता है, यह भी निश्चय कर लेना चाहिये। यदि लग्नके प्रथम होरामें प्रश्न हुआ है तो उत्तरायणमें अर्थात् माघ आदि छः मासोंमें और यदि द्वितीय होरामें प्रश्न हुआ है तो दक्षिणायन में अर्थात् श्रावणादि छः महीनोंमें जन्म हुआ है, निश्चय होगा।

वृहस्पतिकी स्थितिका निर्णय

वृहस्पति की स्थितिका निर्णय और उससे प्रश्नकर्ताकी अवस्थाका निरूपण करनेके लिये प्रश्न लग्नको तीन भागों में विभक्त करके द्रेष्काणमें प्रश्न हुआ है, इसे पक्का करना होगा। प्रथम द्रेष्काणमें प्रश्न होनेसे प्रश्नकर्ताके जन्मकालमें वृहस्पति प्रश्नलग्नमें ही थे। द्वितीय द्रेष्काणमें प्रश्न होनेसे पञ्चम स्थानमें और तृतीय द्रेष्काणमें प्रश्न होनेसे प्रश्नलग्नसे नवम स्थानमें जन्मकालमें वृहस्पति थे, ऐसा निर्णय करना होगा।

यदि लग्नके प्रथम द्वादशांशमें प्रश्न हो तो प्रश्नकर्ताके जन्मकालिक जन्म-लग्नमें ही वृहस्पति थे। द्वितीय द्वादशांशमें प्रश्न होनेसे, जन्मलग्नके द्वितीय स्थान में, इस प्रकार तृतीयादि द्रेष्काणमें प्रश्न होनेसे, प्रश्नकर्ताके जन्मकालमें, जन्म-लग्नसे तृतीयादि स्थानमें वृहस्पति अवस्थित थे, निश्चय करना होगा।

द्रेष्काणके अनुसार वृहस्पतिका स्थापन करके द्वादशांशके अनुसार जन्मग्नसे

किस स्थानमें हैं, यह स्थिर करना होगा, इससे प्रकारान्तरमें प्रश्नकर्ताका जन्मलग्न स्थिर होगा।

स्वरूप देखकर अवस्थाका निर्णय

प्रश्नकर्ताका स्वरूप देखकर अनुमान द्वारा अवस्था स्थिर करनी होगी। पूर्वकथित द्रेष्काणके अनुसार जन्मकालीन बृहस्पतिकी राशिका निश्चय करके उस राशिसे वर्तमानमें बृहस्पति जिस स्थानमें हैं, उस स्थान तक गणनामें जितनी संख्या होगी, उतने ही वर्षकी अवस्था प्रश्नकर्ताकी होगी, निश्चय करना होता है। विशेषतः प्रश्नकर्ताके प्रति दृष्टिपात करके देखना होगा, यदि उसकी अवस्था १२ वर्षसे अधिक और २४ वर्षके मध्यका अनुमान होता है तो उस निरूपित अंकमें १२ का योग देकर अवस्थाका निर्णय करें और २४ वर्षसे अधिक और ३६ के मध्यका अनुमान होनेसे २४ का योग देकर, ३६ से अधिक और ४८ के मध्यका अनुमान होनेपर ३६ जोड़कर और ४८ से ऊपर तथा ६० के मध्यका अनुमान होनेपर निरूपित अंकमें ४८ का योग देकर प्रश्नकर्ताका वयस स्थिर करना होगा। इस प्रकार जितनी उम्र अधिकका अनुमान होगा १२ बढ़ाकर जोड़ लेना चाहिये।

प्रकारान्तरसे—प्रश्नके समय प्रश्नकर्ता जिस अङ्गका स्पर्श करके बैठेगा। उसके अनुसार बृहस्पतिकी स्थितिके द्वारा निरूपित अङ्कमें १२ जोड़ना होगा। यदि प्रश्नकर्त्ता पैर या गुल्फ स्पर्श करके बैठेगा तो एक बार १२ जोड़ना होगा, जंघेके स्पर्शसे दो बार; जानु, उरू, मेढ़्र या मुष्क स्थानके स्पर्शसे तीन बार, नाभि या कमरके स्पर्शसे चार बार, उदर स्पर्शसे पाँच बार, हृदय या स्तन स्पर्शसे ६ बार, गंड स्पर्शसे सात बार, ओष्ठ स्पर्शसे आठ बार, कर्ण स्पर्शसे नौ बार और ललाट स्पर्शसे १० बार १२ जोड़कर वयोमान स्थिर करना होगा। एक सौ बीस वर्षसे अधिक अवस्था अनुमान होनेसे उसकी पत्रीकी गणना नहीं करनी चाहिए।

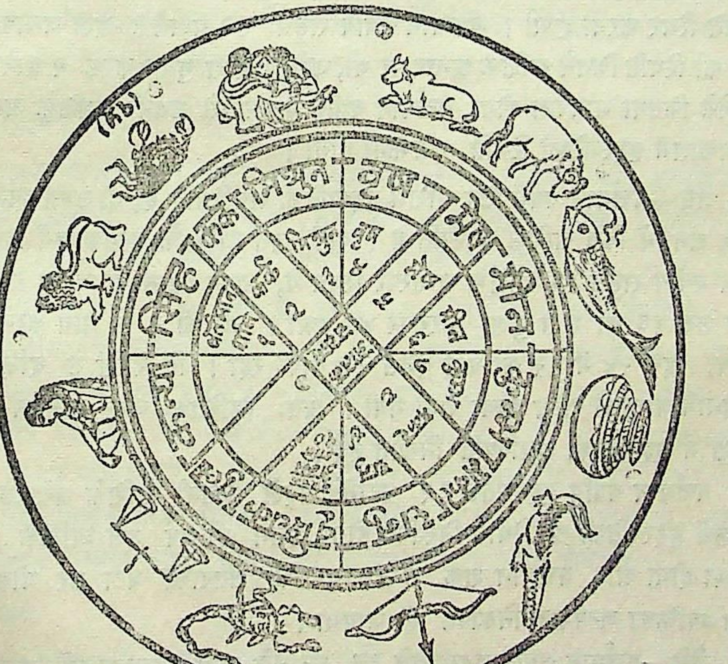
यदि प्रश्न लग्नमें रवि रहें अथवा रविके द्रेष्काणमें प्रश्न हो तो गरमीके मौसममें जन्म हुआ है, यह जानना होगा। इस प्रकार लग्नमें शनि रहनेसे शिशिर ऋतुमें, उसी प्रकार शुक्र लग्नमें रहनेसे वसन्त ऋतुमें, मंगल लग्नमें रहनेसे गरमीमें चन्द्रलग्नमें होनेसे वर्षा ऋतु, बुधलग्नमें होनेसे शरद् ऋतु, बृहस्पति लग्नमें रहनेसे हेमन्त ऋतुमें प्रश्नकर्ताका जन्म हुआ है, यह स्थिर होगा।

दो या उससे अधिक ग्रहोंके लग्नमें रहनेसे उनमें जो ग्रह बलवान् हों उनके द्वारा ऋतु निर्णय होगा। लग्नमें यदि एक भी ग्रह न रहें तो द्रेष्काण के अनुसार ऋतुका निर्णय होगा। अयन और ऋतुमें मेल असम्भव होनेसे मीमांसा का क्या उपाय है, बादमें लिखा जायगा।

शकज्ञानका अन्य प्रकार

पहले व्यक्तिकी आकृति देखकर अनुमान द्वारा जहाँतक हो सके वयः क्रमका निर्णय करो। बादमें उक्त अनुमानित वयोवत्सरको दो द्वारा पूर्ति करके ५ द्वारा हरण करनेसे जो भागफल हो उसे वर्तमान वर्षीय शनिसे दक्षिणावर्तमें गणना करनेसे जिस राशिमें समाप्त हो, उस व्यक्तिकी पत्रीमें शनिकी स्थिति पहले निरूपण करनी होगी। अथवा इसी पुस्तक के परिशिष्ट में स्पष्ट ग्रहस्थिति-चक्र से ग्रहस्थिति विवरण देख लेना चाहिए।

जैसे--यदि सिंह राशिमें वर्त्तमान शनिकी स्थिति है तो जिसकी अनुमानित अवस्था २६ वर्ष है, तो उसकी पत्रीमें किस राशिमें शनि है इसे जाननेके लिए पहले अनुमानित वयःक्रम संख्या २६ को २ द्वारा गुणन करनेसे ५२ हुआ। इस ५२ को ५ से विभक्त करनेसे १० लब्ध फल हुआ। सिंह राशिसे दक्षिणावर्त १० गणना



करनेसे वृश्चिक राशिमें अन्त होगा। अतः उस व्यक्तिके जन्मकालमें वृश्चिक राशिमें शनिकी अवस्थिति थी, यह मालूम हो गया। उपर्युक्त चक्रसे सरलतासे समझा और गिना जा सकता है। सिंहराशिमें कल्पित वर्त्तमान शनि अंकित है।

इस सिंहराशिसे दक्षिणावर्तमें गणना प्रदर्शनार्थ एक, दो इत्यादि अङ्क लिखे हुए हैं। इसमें दशम घर बृश्चिक राशिमें १० अङ्क और जन्म शनि लिखित है।

बादमें पूर्वोक्त शनिकी स्थिति, वर्तमान वर्षीय शनिसे जितनी राशिका अन्तर होगा उसे ५ द्वारा गुणा करके, ३ द्वारा भाग करनेसे, भाग फल जितना हो, वर्तमान वर्षीय राहुके उतनी राशि अन्तरपर उक्त व्यक्तिके जन्मकालमें केतु की अवस्थिति और केतु से सप्तम राशिमें राहुकी स्थिति जाननी होगी। जैसे—

यदि वर्तमान वर्षमें धनु राशिमें राहुकी स्थिति हो तो उक्त व्यक्तिके जन्मकाल में किस राशिमें केतु और राहुकी स्थिति थी ? यहाँ उक्त व्यक्तिके जन्मकालीन शनि, वर्तमान वर्षीय शनिसे १० राशिके अन्तर पर निर्णय हुआ है। अतः इस १० को ५ द्वारा गुणा करनेसे ५० हुआ। इस ५० को ३ से भाग करनेसे भागफल १६ हुआ। इस १६ में १२ को घटा देनेसे ४ बचा। धनुसे दक्षिणावर्त गणनामें ४ राशिमें कन्याराशि मिलती है। अतः जन्मकालमें कन्याराशि में केतु और कन्या से दक्षिणावर्तमें सातवीं राशि मीन होती है। इसी मीनमें जन्मकाल में राहुकी स्थिति स्थिर करनी होगी। वर्त्तमान वर्षीय राहुसे १२ घटानेके पहले जन्मकालीन केतु की स्थिति जितने राशिके अन्तर पर थी, उसे ३ द्वारा गुणा करके २ द्वारा भाग करनेसे जितना भागफल होगा, वर्त्तमान वर्षीय बृहस्पतिसे उतनी राशिके अन्तरपर जन्मकालमें बृहस्पतिकी स्थिति समझनी होगी।

जैसे—वर्त्तमान वर्षमें सिंह राशिमें बृहस्पतिकी अवस्थिति है, तो उक्त व्यक्ति के जन्म समयमें किस राशिमें बृहस्पति थे ? यहाँ उक्त व्यक्तिके जन्मकालमें केतु वर्तमान वर्षीय राहुसे १६ राशिके अन्तरपर स्थित थे, पहले दृष्टान्त में जाना गया है। अब उस १६ का ३ से गुणा करनेपर ४८ हुआ। ४८ को २ से भाग करनेसे २४ मिला। इस २४ में १२ को घटा देनेसे १२ बाकी रहा। सिंहराशि से दक्षिणावर्त गणनामें बारहकी राशि कन्या पायी गयी। अतः व्यक्तिके जन्म समयमें कन्या राशि में बृहस्पतिकी अवस्थिति निर्णीत हुई।

वर्त्तमान वर्षीय बृहस्पतिसे १२ घटानेके पहले जितनी राशिके अन्तरसे जन्मकालमें बृहस्पतिकी अवस्थिति निरूपित होगी, उतने ही वर्ष उस व्यक्तिके उम्रकी संख्या होगी और वर्त्तमान शक से उक्त वयसकी संख्याको घटा कर जोड़ देनेसे उस व्यक्तिका जन्मशक निरूपित हो जायगा।

जैसे—वर्त्तमान वर्षीय बृहस्पतिसे १२ घटानेके पहले जन्मकालमें बृहस्पतिकी स्थिति २४ राशिके अन्तरसे स्थिर हुई है। अतः उक्त व्यक्तिकी उम्र २४ वर्ष निरूपित हुई और वर्तमान शक यदि १८०५ है अथवा १२९० सन् से उक्त २४ को घटा देनेसे १७८१ या १२६६ होगा, उसमें १ जोड़ देनेसे १७८२ शक अथवा १२६७ सन् उसका जन्म शक और जन्म सन् होगा।

जन्म ऋतु ज्ञान

दक्षिणायनमें वर्षा, शरत् और हेमन्त ये तीन ऋतु और उत्तरायणमें शिशिर, वसन्त और ग्रीष्म ये तीन ऋतु हैं। दो-दो मासकी एक-एक ऋतु होती है। मार्गशीर्ष माससे हेमन्ततादि ऋतु आरम्भ होती है। मार्गशीर्ष और पौष—हेमन्त, माघ-फाल्गुन शिशिर, चैत्र-वैशाख बसन्त, ज्येष्ठ-आषाढ़ ग्रीष्म, श्रावण-भाद्र वर्षा और आश्विन कार्तिक शरत् होती है। शनि, शुक्र, मंगल, चन्द्र, बुध और वृहस्पति ये ६ ग्रह यथाक्रम शिशिरादि ६ ऋतुके अधिपति हैं। अर्थात् शिशिर ऋतुके अधिपति शनि, वसन्त ऋतुके अधिपति शुक्र इत्यादि।

उक्त छहों ग्रहोंमें जो ग्रह प्रश्नलग्नमें रहेंगे, उसके द्वारा ऋतु-निर्णय करना होगा। प्रश्नलग्नमें शनि रहनेसे शिशिर ऋतुमें, शुक्र रहनेसे वसन्त ऋतुमें, मंगल रहनेसे ग्रीष्म ऋतुमें, चन्द्र रहनेसे वर्षा ऋतुमें, बुध रहनेसे शरद् ऋतुमें, वृहस्पति रहनेसे हेमन्तमें प्रश्नकर्ता का जन्म हुआ है यह मानना चाहिए। प्रश्नलग्नमें दो या उससे भी अधिक ग्रह रहें तो जो ग्रह सबसे अधिक बलवान् होगा, उसके ही ऋतुमें जन्म हुआ है, स्थिर करना होगा।

मास-तिथि निर्णय

उक्त प्रकारसे ऋतु निर्णय करके मास निर्णय करना होगा। यदि लग्नके प्रथम अंशमें प्रश्न हो तों ऋतुका प्रथम मास और यदि द्वितीय अंशमें प्रश्न हो तो ऋतुके द्वितीय मासमें प्रश्नकर्ताका जन्म निश्चय करना चाहिए।

प्रत्येक लग्नमें १८०० कला हैं, उसके एक अंशमें ३०० कला होती हैं। अब देखना होगा कि लग्यके किस अंशमें प्रश्न हुआ है और प्रश्नके समय कितनी कला गत हुईं। यदि प्रथम ३०० कलाके मध्य प्रश्न हो तो ऋतुका प्रथम मास और यदि ३०० कला के बाद ६०० कलाके मध्य प्रश्न है तो ऋतुके द्वितीय मासमें जन्म निश्चय करना होगा। उक्त ३०० कला की दस-दस कला द्वारा एक-एक तिथि निर्णय करनी चाहिए। दस कलाके बीच प्रश्न होनेसे प्रतिपदा, बादकी दशकलामें द्वितीया क्रमशः इसी प्रकार तिथिका निर्णय करना होता है।

राशिज्ञान

प्रश्नलग्न और उससे पञ्चम तथा उससे नवम स्थान इन तीन राशियों में जो अधिक बलवान् राशि होगी, प्रश्नकर्ताकी वही राशि जाननी होगी।

नक्षत्र निर्णय

प्रश्नकर्ताके संस्कृत नाममें जितनी मात्रा अर्थात् नामकरण समय पितादिके रखे नाममें जितनी मात्रायें रहेंगी, उन्हें दूना कर गुणनफलमें प्रश्नके समयके

१२ अंगुल परिमित शंकु द्वारा योग करनेसे जितना अंक होगा, उसे २१ से भाग करके अवशिष्ट अङ्क द्वारा धनिष्ठादि नक्षत्र स्थिर करना होगा। जैसे—१ रहनेसे धनिष्ठा, २ बचनेसे शतभिषा, ३ रहनेसे पूर्वाभाद्रपदा इत्यादि।

शकाब्दके अनुसार वार आनयन

स्वपादयुक्तः शकाब्दकों मासांक दिन संयुक्तः।
द्वियुक्तः सप्तभिर्हीनो वारो भवति नान्यथा॥

मासांक आनयन

स्वनयनरसनेत्रं शून्यनेत्रेषु शून्यम्।
विधुकरयुगषट्कं मासिकं स्याद् ध्रुवाङ्कम्॥
युगहरणसमातौ वत्सरे सिंह आश्वे।
ध्रुवमृतुकरमिष्ठं श्रीहरेर्वारबोधे॥

जिस शकाब्दके जिस मासमें जिस दिन वार जाननेकी जरूरत हो, उस शकाब्द को अंक संख्या के साथ, उस शकाब्द अंकका चतुर्थांश जोड़कर उसके बगल में लिखित मासांक और उसी मासकी दिन संख्या और २ ऊपर से जोड़कर जो कुल जोड़ हो उसमें ७ का भाग देनेसे जो बचेगा उससे वार निकलेगा। जैसे—१ बचनेसे रविवार, २ बचने से सोमवार इत्यादि।

मासाङ्क	
वैशाख	०
ज्येष्ठ	३
आषाढ़	६
श्रावण	३
भाद्र	०
आश्विन	३
कार्तिक	५
मार्गशीर्ष	०
पौष	१
माघ	२
फाल्गुन	४
चैत्र	६

अब यदि शकाब्द का चतुर्थांश पूर्णांक न होकर भग्नांक हो तो भग्नांक के बदले १ ले लिया जाता है। जैसे—शकाब्द १७९९ इसका चतुर्थांश ४४९$\frac{३}{४}$ है, किन्तु ऐसे न रखकर उसके बदले ४५० रख लेना होगा। और जिस शकाब्दका चतुर्थांश भग्नांक न हो, वह शकाब्द केवल, भाद्रका ६ और आश्विनका २ मासांक रखना होगा। अन्यथा बगल में लिखित भाद्र और आश्विनके पूर्व निर्दिष्ट मासांक जोड़ देनेसे न मिलेगा। इस गणनामें यदि किसी समय मेल न बैठे तो १ बाद दे देनेसे निश्चय मिलेगा।

उदाहरण—१८०५ शकाब्द में सौर वैशाखकी पहली तारीख को कौन दिन होगा? ऐसे स्थान में शकाब्द संख्या १८०५ और उसका चतुर्थांश ४५२ और मासांक ० और दिनांक १, अतिरिक्त २ इन सबकों जोड़नेसे २२६० हुआ। इसे ७ से भाग करनेसे ६ बचा। अतः ६ शेष द्वारा १८०५ शकमें सौर वैशाख पहली तारीखको होगा, मालूम हो गया।

तिथि गणना

शकाब्द की संख्या को १६ द्वारा भाग करने से जो बचेगा, उसे ११ द्वारा जोड़ देने से जो अङ्क होगा, उसमें मासांक, दिन संख्या और अतिरिक्त ६ जोड़कर ३० द्वारा भाग करने से जो शेष बचेगा, उस अङ्क में जो तिथि हो, उस दिन वही तिथि जाननी होगी।[1]

मासांक
वैशाख १०
ज्येष्ठ १
आषाढ़ ३
श्रावण ५
भाद्र ७
आश्विन ६
कार्तिक १०
मार्गशीर्ष १०
पौष ६
माघ ०
फाल्गुन १०
चैत्र १०

जैसे १८०५ शक में सौर वैशाख की तारीख को कौन तिथि होगी? यहाँ १८०५ को १६ से भाग करने से ० शेष रहने से इसमें ११ गुणा करने पर भी शून्य हुआ। इस शून्य के पार्श्व में लिखित वैशाख का मासांक ०, दिनांक १ और अतिरिक्त ६ जोड़ने से ७ हुआ। इसे ३० से विभक्त नहीं किया जा सकता। अतः ७ अङ्क में पहली सौर वैशाख को ६० दंड के अन्दर शुक्ला सप्तमी तिथि ज्ञात हो गयी।

तिथि अङ्क

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से तिथि गिननी चाहिये। शुक्ल पक्ष प्रतिपद १ से क्रमशः पूर्णिमा को १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से १६ गिनकर क्रमशः अमावास्या तक ३० गिनना चाहिए।

---

१ इस प्रकार गणना में यदि यथार्थ न मिले तो मास के प्रथम होने से १ बाद और शेष होने से १ जोड़ना होता है।

तिथि गणना का चक्र

बँगला सन्	शकाब्द	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्र	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
१२७०–१२८९	१७८५–१८०४	२५	२६	२८	०	२	४	५	५	४	४	५	५
१२७१–१२९०	१७८६–१८०५	६	७	९	११	१३	१५	१६	१६	१५	१५	१६	१६
१२७२–१२९१	१७८७–१८०६	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२७	२६	२६	२७	२७
१२७३–१२९२	१७८८–१८०७	२९	१	२	४	६	८	९	९	८	८	९	९
१२७४–१२९३	१७८९–१८०८	१०	११	१३	१५	१७	१९	२०	२०	२९	१९	२०	२०
१२७५–१२९४	१७९०–१८०९	२१	२२	२४	२६	२८	०	१	१	०	०	१	१
१२७६–१२९५	१७९१–१८१०	२	३	५	७	९	११	१२	१२	११	१२	१२	१२
१२७७–१२९६	१७९२–१८११	१३	१४	१६	१८	२०	२२	२३	२३	२२	२२	२३	२३
१२७८–१२९७	१७९३–१८१२	२४	२५	२७	२९	१	३	४	४	३	३	४	४
१२७९–१२९८	१७९४–१८१३	५	६	८	१०	१२	१४	१५	१५	१४	१४	१५	१५
१२८०–१२९९	१७९५–१८१४	१६	१७	१९	२१	२३	२५	२६	२६	२५	२५	२६	२६
१२८१–१३००	१७९६–१८१५	२७	२८	०	२	४	६	६	६	६	६	७	७
१२८२–१३०१	१७९७–१८१६	८	९	११	१३	१५	१७	१८	१८	१७	१७	१८	१८
१२८३–१३०२	१७९८–१८१७	१९	२०	२२	२४	२६	२८	२९	२९	२८	२८	२९	२९
१२८४–१३०३	१७९९–१८१८	०	१	३	५	७	९	११	११	९	९	१०	१०
१२८५–१३०४	१८००–१८१९	११	२	१४	१६	१८	२०	२१	२१	२०	२०	२१	२१
१२८६–१३०५	१८०१–१८२०	२२	२३	२५	२७	२९	१	२	२	१	१	२	२
१२८७–१३०६	१८०२–१८२१	३	४	६	८	१०	१२	१३	१३	१२	१२	१३	१३
१२८८–१३०७	१८०३–१८२२	१४	१५	१७	१९	२१	२३	२४	२४	२३	२३	२४	२४

अब किस प्रकार तिथि अंक गणना करना होगा, इसका नियम लिखा जाता है।

प्रथम विधि—जिस सन् या जिस शकाब्दके जिस मासकी जिस तिथिको जानना हो उस मासकी तारीख चक्रमें लिखित मासके नीचे जो अंक अंकित है, उस अंकके साथ जोड़ देनेसे जो अंक आयेगा वही तिथिकी संख्या होगी। जैसे—

१८०३ शक या १२८८ सालके चैत्र मासके स्तम्भका २४ अंक, उस मासकी ३१ के साथ जोड़ देनेसे ५५ हुआ, उसमेंसे ३० निकाल देनेसे २५ बाकी बचा। यही २५ वीं कृष्णपक्षकी दशमी ज्ञात हो गयी। अतः ३१ वीं तारीखमें ६० दण्ड के अन्दर दशमी स्थिर हुई।

द्वितीय विधि—अमावास्या का दिन निरूपण करनेके लिये, जिस शकके जिस मासके जिस दिन के ६० दण्डके अन्दर अमावस्या जाननी है, चक्रके सन् मासके नीचे जो अंक है, उसमेंसे ३० बाद देनेसे जो बचेगा, उसी संख्यक दिनके ६० दण्डके अन्दर अमावस्या जानी जायगी। जैसे—

१८०३ शक या १२८८ सालके चैत्र मास के स्तम्भमें २४ अंक है, उसे ३० से घटा देनेपर ६ बाकी बचे। अतः चैत्र मासकी ६ तारीखको ६० दण्डके अन्दर अमावस्या होगी।

तृतीय विधि—किस शकके किस मासकी किस तारीखको ६० दण्डके अन्दर पूर्णिमा होगी, इसे जाननेके लिये चक्रमें लिखित मासके अंकसे ३० घटा देनेसे यदि १५ बाकी बचे तो उस मासकी ३० तारीखको पूर्णिमा होगी। यदि यह बाकी अंक १५ से अधिक हों तो १५ अंकके अतिरिक्त जो होगा, उसी संख्यक अंकमें पूर्णिमा होगी। यदि १५ अंकसे कम हो तो इस अंक के साथ १५ जोड़ देनेसे जो संख्या होगी, उसी संख्याके अनुसार मासकी तारीखमें पूर्णिमा होगी।

जैसे—१२८८ सालके ज्येष्ठ मासकी किस तारीखमें ६० दंडके अन्दर पूर्णिमा होगी, यह जाननेके लिये उस सन्के ज्येष्ठ मासके तस्तम्भका १५ अंक ३० में घटाने से १५ बचा। उपर्युक्त विधिके अनुसार ३० वीं ज्येष्ठकी पूर्णिमा ज्ञात हो गयी।

पंच-पक्षी क्रमसे

नष्ट जातक

पञ्च-पक्षी ग्रन्थके मतसे भी नष्ट जातकका जन्मलग्न, जन्मवार, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, जन्मराशि और जन्मकालमें कौन ग्रह प्रबल थे आदि विषय जिस प्रकार जाना जाता है, उसका कुछ अंश होरा ज्योतिषसे उद्धृत करके संक्षेपमें लिखा जाता है।

आरूढं प्रश्नलग्नेभ्यः प्रथमाक्षरतोऽपि वा।
अकारादि स्वराणाञ्च पञ्चानाञ्च विचारयेत्॥

प्रश्नकर्त्ताके प्रश्न वाक्यके आदि अक्षरमें जो स्वर वर्ण होगा या उसके आदि वर्णमें संयुक्त जो स्वर होगा, उसे अवलम्बन कर 'अ इ उ ए ओ' इन पाँच स्वरोंमें स्वजातीय एक स्वर ग्रहण करके, उस स्वरके संकेतके अनुसार पक्षी निरूपित करके प्रश्नकर्त्ताके प्रश्नका उत्तर देना होता है।

अकारश्श्येन आख्यात इकार पिङ्गलस्तथा।
उकारो वायसश्चैव एकारस्ताम्रचूड़कः॥
ओकारो नीलकंठश्च स्वरास्ते पक्षिसंज्ञकाः।

अकारसे श्येन (बाज) पक्षी, इकारसे पिङ्गल पक्षी, उकारसे काक, एकारसे कुक्कुट पक्षी, ओकरसे मयूर पक्षीकी कल्पना करनी होगी।

प्रथमे रविभौमौ च द्वितीये चन्द्र-चन्द्रजौ।
तृतीये जीववारश्च चतुर्थे भृगुवासरः॥
पंचमे मन्दवारश्च पक्षिणां क्रमशो लिखेत्।

अ स्वर से रवि और मङ्गलवार, इ स्वरसे सोम और बुधवार, उ स्वर से वृहस्पतिवार, ए स्वरसे शुक्रवार और ओ स्वरसे शनिवार। इसके द्वारा जन्मवार और ग्रह परिज्ञात होता है।

नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा च तिथयः क्रमात्।

अ स्वरसे नन्दा, अर्थात् प्रतिपद्, षष्ठी और एकादशी, इ स्वरसे भद्रा अर्थात् द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी, उ स्वरसे जया अर्थात् तृतीया, अष्टमी, और त्रयोदशी, ए स्वरसे रिक्ता अर्थात् चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी और ओ स्वरसे पूर्णा अर्थात् पंचमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावस्या। इसके द्वारा जन्मतिथि जानी जाती है।

अकारे मेषसिंयालिः इ कन्या युग्मकर्कटाः।
उकारे चापमीनौ च एकारश्च तुलावृषौ॥
ओकारो मृगकुम्भौ च राशीशास्तद् ग्रहेश्वरान्।
स्वराधः स्थापयेत् खेटान् राशीशो यस्य नायकः॥

अ स्वरसे मेष, सिंह और वृश्चिक, इ स्वरसे कन्या, मिथुन और कर्कट, उ स्वरसे धनु और मीन, ए स्वरसे तुला और वृष, ओ स्वरसे मकर और कुम्भ। इसके द्वारा जन्मलग्न और राशि जानी जाती है तथा राशि निरूपित हो जानेसे उस राशिके अधिपति द्वारा ग्रह निश्चय करके फलाफल कहा जाता है। जैसे—

मेष और वृश्चिक के अधिपति मङ्गल, वृष और तुलाके शुक्र, मिथुन और कन्या के बुध, कर्कटके चन्द्र, सिंहके रवि, धनु और मीनके वृहस्पति और मकर, कुम्भ के शनि अधिपति या स्वामी होते हैं। इसके द्वारा जन्मकालमें कौनसे ग्रह बलवान् थे और किस ग्रहकी दशामें जन्म है, यह जाना जाता है।

अकारे सप्त ऋक्षाणि रेवत्यादि क्रमेण च।
पञ्च पञ्च इकारादावेवं ऋक्षं स्वरोदये॥

अकार स्वर से—रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, और आर्द्रा।

इ स्वरसे—पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा और पूर्वाफाल्गुनी।

उ स्वरसे—उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती और विशाखा।

ए स्वरसे—अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा।

ओ स्वरसे—श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद। इसके द्वारा जन्म नक्षत्र और नक्षत्रानुसार राशि भी निरूपित हुआ करती हैं।

पहले जिस-जिस स्वरसे निरूपित हुई है, उसके द्वारा दिन या रातका जन्म है, यह मालूम होता है। जैसे—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु और मकर होने से रात्रिमें जन्म और सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक कुम्भ और मीन होनेसे दिनमें जन्म मानना चाहिये।

जिस-जिस पक्षी और स्वरमें जो-जो तिथि, वार, नक्षत्र, ग्रह, राशि इत्यादि निरूपित हैं, उन्हें जाननेके लिए नीचे एक चक्र दिया जाता है।

	श्येन	पिङ्गल	काक	कुक्कुट	मयूर
अक्षर	अ, क, छ, ड ध भ व	इ ख ज ढ न म श	उ ज झ त प य ष	ए घ ट थ फ र स	ओ च ठ द ब ल ह
राशि लग्न	मेष, सिंह वृश्चिक	कन्या, मिथुन कर्कट	धनु, मीन	तुला, वृष	मकर, कुम्भ
ग्रह और वार	रवि, मङ्गल	सोम, बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
तिथि	नन्दा-प्रतिपद् षष्ठी, एकादशी-	भद्रा-द्वितीया सप्तमीद्वादशी	जया-तृतीया अष्टमी त्रयोदशी	रिक्ता-चतुर्थी नवमी चतुर्दशी	पूर्णा-पंचमी दशमी, पौर्णमासी अमावास्या
नक्षत्र	२७ रेवती १ अश्विनी २ भरणी ३ कृत्तिका ४ रोहिणी ५ मृगशिरा आर्द्रा	७ पुनर्वसु ८ पुष्य ९ अश्लेषा १० मघा ११ पूर्वा-फाल्गुनी	१२ उत्तरा-फाल्गुनी १३ हस्त १४ चित्रा १५ स्वाती १६ विशाखा	१७ अनुराधा १८ ज्येष्ठा १९ मूल २० पूर्वा-षाढ़ा २१ उत्तरा-षाढ़ा	२२ श्रवण २३ धनिष्ठा २४ शतभिषा २५ पूर्वाभाद्र-पद २६ उत्तरा-भाद्रपद

पंच पक्षी



पञ्च पक्षी गणना के दो मत प्रचलित हैं। शिवोक्त पञ्च-पक्षी और पारिजात पञ्च पक्षी। इनमें गणनामें जो कुछ प्रभेद है, वह दिखाने के लिये कई वचन दोनों ग्रंथोंसे उद्धृत किये जाते हैं। शिवोक्त पञ्च पक्षी मतसे लिखते हैं—

"स्वरेण कल्पयेद्वारं वारात् पक्षी प्रजायते।"

प्रश्नकर्त्ता के प्रश्नवाक्यका आदि अक्षर जो स्वरवर्ण होगा, उसे ग्रहण करके इस स्वरसे पूर्व वचनके अनुसार पहले वार निरूपण करना होगा, बादमें शुक्ल पक्ष और कृष्णपक्षके भेदसे उस वारमें जो स्थिर है, उसे जानकर प्रश्न का उत्तर देना होगा। शुक्ल और कृष्णपक्ष में जिस-जिस वार में जो-जो पक्षी निरूपित है, वह कहा जाता है।

रवौ भौमे च मेरुण्डो मयूरवायसौ शनौ।
पदायुधः शिखी शुके काककुब्जौ गुरौ तथा॥
कुजः कुक्कुटकोऽन्दोः क्रमोऽयं शुक्लकृष्णयोः।

शुक्लपक्षमें—रवि और मङ्गलवारमें श्येन पक्षी (बाज), सोम और बुधवार में पिंगल पक्षी (उल्लू), वृहस्पतिवारमें काक, शुक्रवारमें कुक्कुट, शनिवारमें मयूर पक्षी की कल्पना करके गणना करनी होगी।

कृष्णपक्ष में—रवि और मङ्गलवार में श्येन पक्षी, सोम और बुधवार से कुक्कुट पक्षी, वृहस्पतिवार में पिंगल, शुक्रवार में मयूर और शनिवार में काक पक्षीकी कल्पना करके गणना करनी चाहिये।

दिन-रातके भेदसे नियम

दिनेषु शुक्लपक्षे यः कृष्णे रात्रिषु संक्रमः।
कृष्णपक्षे दिने यस्य शुक्ले रात्रिषु संक्रमः॥

शुक्लपक्षके दिनमें जिस वारमें जिस पक्षीका उदय हो, कृष्णपक्षकी रातमें उसी वारमें उसी पक्षीका उदय होगा। और कृष्णपक्षके दिनमें जिस पक्षीका उदय होगा, शुक्लपक्षकी रजनीमें उसी वारमें उसी पक्षीका उदय हुआ करता है।

पारिजात पञ्च पक्षीके मतसे

अब पारिजात पंच पक्षीके मतसे शुक्ल और कृष्णपक्ष भेदसे दिन और रातमें जो-जो पक्षी निरूपित हुआ है, वह कहता हूँ।

शुक्लपक्षके रवि और मङ्गलवारके दिनमें श्येन (बाज) और रात्रिमें काक, सोम और बुधवारके दिनमें पिङ्गल और रातमें कुक्कुट, बृहस्पतिवारके दिनमें काक और रात्रिमें मयूर, शुक्रवारके दिनमें कुक्कुट और रात्रिमें पिंगल तथा शनिवारके दिनमें मयूर और रात्रिमें श्येन।

कृष्णपक्षके रवि और मंगलवारके दिनमें कुक्कुट और रातमें श्येन, सोम और शनिवारके दिनमें मयूर और रातमें कुक्कुट, बुधवारके दिनमें काक और रातमें पिंगल, बृहस्पतिवारके दिनमें पिंगल, रातमें काक तथा शुक्रवारके दिनमें श्येन और रातमें मयूर।

अ इ उ ए ओ इन पाँच स्वरोंको पाँच पक्षी कल्पना करके गणनाकी प्रणाली दर्शित की गयी है। ये पाँचों स्वर श्वासरूपी पंचतत्वके अनुरूप मात्र हैं।

फल—निज शरीरमें इन पाँचों तत्वोंका उदय समझ सकनेसे उसके द्वारा निश्चय रूपसे नष्ट जातकके प्रश्नका उत्तर प्रदान किया जा सकता है। पंचतत्व विवरण-पवनविजय स्वरोदयमें अथवा शिवस्वरोदयमें विस्तर के साथ निरूपिता है।

॥ श्री ॥

ग्रह जन्य उत्पात एवं शान्ति

विभिन्न उत्पात	फल
१—गाँव में स्वेच्छा से जंगली पशुओं का प्रवेश—	गाँव एवं घर का उजाड़ होना
२—घर में बाँबी, इन्द्रजाल, जंगली कबूतर—	ग्रह पति का नाश
३—दो से अधिक चन्द्र सूर्य का दिखना—	रोग एवं युद्ध का भय
४—पृथ्वी में दरार पड़ना—	देश एवं राज्य संकट
५—तेरह दिन का पक्ष होना—	प्रजानाश, दुर्भिक्ष
६—निघति (प्रचण्ड शब्द) उल्कापात दिगदाह, भूकम्प	राजा एवं प्रजा का नष्ट होना
७—रजोवृष्टि, गंधर्वनगरः अग्निवर्षा—	

मूल मन्त्र—सभी ग्रहों दोषनाश के सबसे सुलभ उपाय यह है। पीपल, गौ एवं विद्वान् ब्राह्मण की पूजा।

श्लोक—
मन्दवारे तु ये ऽश्वत्थं प्रातरुत्थाय मानवः!
आलभन्ते च तेषां वै ग्रहपीड़ा व्यपोहतु ॥
यथा ग्रहो द्विजस्तद्वद्विज्ञेयो वेदपारगः।
तोषयन् मृदुवस्त्राद्यैः स्तुष्टमेनं विसर्जयेत् ॥
कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर! ग्रह पापहरं परम् ॥

ग्रह दोष नासक मन्त्र

तंत्र शास्त्र के अन्तर्गत मंत्रों का विशिष्ट महत्व है। चूकि तंत्रमंत्र गुरुपरम्परा वैशिष्ट्य के गुह्य है। अतः सर्वसाधारण इससे अपरिचित रहते हैं। हमने परम्परा प्राप्त ग्रह दोष निवारणार्थ मंत्रों का कुछ अनुभव किया है जिसे लोकोपरार्थ यहां उद्धृत कर रहे हैं।

गोचरगत ग्रहों का शुभ विचार

चन्द्र का शुभाशुभ विचार

शुभ—आपकी राशि से जब चन्द्र १, ३, ६, ७, १०, ११ इन स्थानों में हो तब वह शुभ फल देता है। ऐसा चन्द्र कार्य सिद्धि, द्रव्य, मित्र सुबुद्धि, इनका लाभ, ब्राह्मण सेवा और दान धर्म कराता है।

अशुभ—जब चन्द्र आपकी राशि से २, ४, ५, ८ और ९ इन स्थानों में हो तब वह अशुभ होता है।

पुराणोक्त चन्द्रजप।मंत्र

ह्रीं दधि शंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्। नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम्।

वैदिक चन्द्र मन्त्र

ॐ आप्यायस्व गौतमः सोमो गायत्री सोमप्रीत्यर्थं। जपे विनियोग।

ॐ आप्यायस्वसमेतुतेविश्व तः सोमवृष्ण्यं। भवावाजस्यसंगथे॥

तंत्रोक्त चन्द्रमन्त्र—श्रां श्री श्रौ सः चन्द्रमसेनमः।

११००० मंत्र जपने से कार्य सिद्धि होगी चन्द्रग्रह में मोती धारण करना चाहिये।

गोचर गत सूर्य का शुभाशुभ विचार

शुभ—जब रवि आपकी जन्मराशि से ३, ६, १०, ११ स्थानों में हो तब वह शुभ फल देगा। वह आपके लिये सुख, कीर्ति, द्रव्यलाभ, कुटुम्बियों से सुख, राज्यसम्मान, कार्यसिद्धि और पुत्र दायक होता है।

अशुभ—आपकी राशि से जब रवि १, २, ४, ५, ७, ८, ९ और १२ स्थानों में होगा, तब वह अशुभ फल देगा। उसका फल—रोगप्राप्ति, भय, शोक, अग्नि से पीड़ा, परदेश यात्रा और धन कानाश।

पुराणोक्त रविमंत्र—ह्रीं जवाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वं पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

वैदिक रविमंत्र

ॐ आकृष्णेनेत्यस्य मन्त्रस्य हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप्। सूर्यप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः॥

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानोनिवेशयन्नामृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवोयाति भुवनानिपश्यम्।

तंत्रोक्त रविमंत्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

नोट—मंत्र का जप ७००० से कार्य सिद्धि होगी। माणिक धारण करने से ग्रह शान्ति होती है।

मंगल का शुभाशुभ विचार—जब मंगल आपकी राशि से ३-६-११ इन

स्थानों में रहता है तो उसे शुभ समझना चाहिये। फल—शत्रुनाश, धन-भूमि और वस्त्र का लाभ, राज्यकृपा, शरीर में आरोग्य तथा सब जगह विजय दिलाता है।

अशुभ—जब मंगलजन्म राशि से १-२-४-५-७-८, ६-१० और १२ इन स्थानों में हो तो अशुभ फल देता है। उसका फल—रक्त विकार, चर्मरोग, शत्रुभय, परदेश गमन तथा मित्रों में मत भेद।

पुराणोक्त मंगल जपमंत्र—ह्रीं धरणी गर्भ संभूतं, विद्युतकान्ति समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गल प्रणमाम्यहम्॥

वैदिक मंगलमंत्र

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः रूपोऽङ्गारकोगायत्री। अंगारक प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।
ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पत्तिः पृथ्वीव्याअयं। अपांरेतांसिजिन्वति।

तन्त्रोक्त भौमयन्त्रा—क्रां, क्रों, क्रौं सः भौमाय नमः।

कोई भी मंत्र मतानुसार दस हजार जपना चाहिये तथा मूँगा धारण करने से ग्रहशान्ति होती है।

गोचर गत बुध का शुभाशुभ विचार

शुभ—जब बुद्ध आपकी जन्मराशि से २-४-६-८, १०, ११ इन स्थानों में हो तो शुभ मानना चाहिये। यह आपके लिये धन-लाभकारी, भाग्योदय, सुख और चित्त को स्वस्थ बनाने वाला होता है।

अशुभ—जब बुद्ध जन्मराशि से १, ३, ५-७-६-१२ इन स्थानों में हो तब अशुभ फल देता है।

उसका फल—सुखहानि, द्रव्यनाश, विश्वासीजनों से विरोध, शरीर पीड़ा, शत्रुभय, सदैव दुःख एवं वियोग, चोर और अग्नि से भय रहा करता है।

पुराणोक्त बुद्धसन्त्र—ह्रीं प्रियंगुकलिकाश्यामं, रूपेणा ग्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।

वैदिक बुद्ध सन्त्र

ॐ उदबुध्यध्यं बुधो बुधस्त्रिष्टुपू। बुध प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।
ॐउद्बुध्यध्वंसमनसः सखायः समग्निमिंध्वंबहवः सनीलाः।
दधिक्रामग्निमुषसंचदेवीमिन्द्रावतोवसेनिह्वयेवः॥

तन्त्रोक्त बुध मंत्र—ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

शान्ति के लिये मंत्र संख्या नौ हजार है तथा पन्ना रत्न धारण करने से ग्रह शान्ति होती है।

गोचरगत गुरु का शुभाशुभ विचार

शुभ—जब गुरु आपकी जन्मराशि से २, ५, ७, ६, ११ इन स्थानो में हो तब उसे शुभ समझना चाहिये। उसका फल-द्रव्यलाभ, सुख सम्पति और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है।

अशुभ—जब १,३,४,६,८,१०,१२इन स्थानोंमें गुरु हो तब वह अशुभ फल देता है।

उसका फल—मित्रों से विरोध, क्लेश, शारीरिक अस्वस्थता है।

पुराणोक्त गुरुमन्त्र– ह्रीं, देवाना च ऋषीणां च गुरुं कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूत त्रिलोकशं तं नमामिवृहस्पतिम् ॥

वेदोक्त गुरुमन्त्र

ॐ बृहस्पते अतीत्यस्य गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्। बृहस्पतिप्रीत्यर्थं ज़पे विनियोगः॥
ॐ बृहस्पतेअतियर्यो अर्हाद्दयु मद्विभातिक्रतुमजनेषु। यद्दीदयच्छ्वसऋतप्रजात-
तदस्मासुद्रविणंहिचित्रम्॥

तन्त्रोक्त गुरुमन्त्र—ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः।

गुरु की शान्ति के लिये उपरोक्त मन्त्र ६ हजार जपे। पुखराज धारण करे, ग्रह शान्ति होगी।

गोचरगत शुक्र का शुभाशुभ फल विचार

शुभ—आपकी जन्मराशि से जब शुक्र १, २, ३, ४, ५, ८, ९, ११, १२ इन स्थानों में होगा तब उसका शुभ फल जानना। वह वन्धु, पुत्र और स्त्री जाति से सुख लाभप्रद होता है। श्रेष्ठ और गुणीजनों से सम्पर्क कराता है।

अशुभ—जब जन्मराशि से ६, ७, १० इन स्थानों में शुक्र रहता है, तब उसे अशुभ समझना चाहिये, वह रोग, चिन्ता, शोक, कार्यनाश और क्लेश देता है।

पौराणिक शुक्रमन्त्र—ह्रीं हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥

वेदोक्त शुक्रमन्त्र

ॐ शुक्रंत इत्यस्य मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः शुक्रो देवता त्रिष्टुप् छन्दः।
शुक्रप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः॥

ॐ शुक्रंते अन्यद्यजतंते अन्य द्विषुरुपेअहनीद्यौरिवासि।
विश्वादिमाया अवसिस्वधावोभद्रातेपूषन्निहरातिरस्तु॥

तन्त्रोक्त मंत्र—द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

शुक्र की शान्ति के लिये २६ हजार जप जाप करना होगा तथा हीरा धारण करने से ग्रह शान्ति होगी।

गोचर गत शनिका अशुभ फल विचारः।

शुभ—आपकी जन्म राशि से शनि ३, ६, ११ इन स्थानों में हो तो तब उसे शुभ समझना चाहिये।

उसका फल—नवीन उद्योग, मनोरथ सिद्धि, सम्मान देता है।

अशुभ—आपकी राशि से जब गोचर का शनि १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १०, १२, इन स्थानों में होगा तब अशुभ फल देगा।

उसकाफल—लोगों से विरोध, द्रव्य और जीविका के साधन की हानि, इष्ट वन्धु विद्रोह, कार्यनाश आदि अशुभ फल देता है।

पुराणोक्त शनि जप मंत्र—श्री नीलाञ्जन समाभासं रवि पुत्रंय माग्रजम् । छाया मार्तण्ड संभूतं नमामि शनैश्चरम् ॥

वैदिक शनि मंत्र—ॐ शमग्नि रित्यस्यर्विविठिः ऋषिः शनैश्चर देवता उष्णिक् छंदः । शनैश्चर प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥ ॐ समग्निरग्निभिः करच्छंनस्व पतुसूर्यः । शंवातोवात्वरपाअपस्त्रिधः ।

तन्त्रोक्त मंत्र—प्रां प्रीं प्रौं शनयेनम ।

शनि के लिये २३ हजार मंत्र का जाप तथा नीलम का धारण ग्रह शान्ति में सहायक होगा ।

गोचर गत राहु शुभाशुभ फल विचार

शुभ—आपकी जन्मराशि से जब राहु १, ३, ६, ६, १०, ११ इन स्थानों में हो तब वह शुभ फल प्रद होगा ।

शुभ—स्त्री, पुरुष और द्रव्य की प्राप्ति तथा मुक़दमे में विजय होती है ।

अशुभ—आपकी राशि से २, ५, ८, ७, ४, १२ इन गोचर स्थानों में राहु जब आता है तब उसे अशुभ समझना चाहिये ।

अशुभ फल—गृह कलह एवं आर्थिक चंचलता रहती है ।

पौराणिक राहु मंत्र

ॐ अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् । सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥

बैदिक राहु मंत्र

ॐ कयान इत्यस्य मन्त्रस्य वामदेवो राहुर्गायत्री । राहु प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥

ॐ कयानश्चित्रआभुवदूतीसदावृधः सखा । कयाशचिष्ठयावृता ॥

तंत्रोक्त मंत्र— भ्रां भ्रीं सौं सः राहवेगमः ।

राहु की शान्ति के लिये अट्ठारह १८ हजार मंत्र का जाप तथा गोभेद रत्न धारण करने से ग्रह शान्ति होगी ।

केतु शुभाशुभ फल विचार

शुभ—आपकी जन्मराशि से १–३–६–६–११ इन स्थानों में जब केतु गोचर से आवें तब उसे शुभ मानना चाहिये ।

उसका फल—धन का लाभ, राज्य सम्मान, स्त्री सुख, वंश की वृद्धि आदि शुभ फल होता है ।

अशुभ—आपकी जन्मराशि से जब केतु २, ४, ५, ७, ८, १२ इन स्थानों में हो तब उसे अशुभ समझना चाहिये।

उसका फल—पारस्परिक कलह, व्यापार में हानि, और मृत्यु के समान क्लेश प्राप्त होता है।

पुराणोक्त जपमंत्र

ह्रीं पलाशपुष्प संकाशं तारका ग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥

वैदिक जप मंत्र

ॐ केतु कृण्वन्नित्यस्य मन्त्रस्य मधुछन्दा ऋषिः केतुर्देवता गायंत्री छन्दः केतु प्रीत्यार्थ जपे विनियोग ॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥

तंत्रोक्त मंत्र—स्रां स्रीं स्रौं सः केतवेनमः।

केतु की शान्ति के लिये सतरह १७ हज़ार जाप होना चाहिये तथा लाजवर्त, लहसुनियां वैडूर्य्यमणि धारण करने से शान्ति होगी।

नवग्रह शान्ति सूचक दानविधि

सूर्य—माणिक, गौ, सोना, लालपुष्प, तांबा, गुण, घी, गेहूँ, केशर, मूंगा, लालवस्त्र, चन्दन, इन चीजों का दान होना चाहिये।

चन्द्र—मोती, सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दही, शंख, कपूर, तेल, चन्दन, सफेद वस्त्र, सफेद फूल।

मंगल—मूंगा, सोना, तांबा, मसूर, गुड़, घी, केशर, कस्तूरी, लाल कपड़ा, कनेर का फूल, लाल चन्दन।

बुद्ध—पन्ना, सोना, कासा, मूंगा, घी, खांड़, हरा कपड़ा, हाथीदांत, पुष्प, फल पुस्तक, कपूर, षटभोजन।

गुरु—पुखराज, सोना, चांदी, चने की दाल, घी, खांड़, हलदी, पुस्तक, मधु, पीला कपड़ा, फल, पुष्प, भूमि, छत्र, नमक।

शुक्र—हीरा, सोना, चांदी, चावल, चन्दन, चित्र, वस्त्र, पुष्प, घी, सफेद घोड़ा, सुगन्धित द्रव्य, खांड़, गौ, भूमि।

शनि—नीलम, तिल, उड़द, तैल, कृष्ण वस्त्र, लोहा, भैस, जूता, कस्तूरी, सोना, कुल्थी, पुष्प ।

राहू—सोने का नाग, उड़द, सप्तधान्य, गोमेद, तिल, खड्ग, तैल, लोहा, सूप, कम्बल, सीसा, नीला कपड़ा, फूल, घोड़ा ।

केतु—लहसुनियां रत्न, सोना, लोहा, तिल, सप्तधान्य, बैल, धूम्रवर्ण वस्त्र, नारियल, कंबल, बकरा, फूल, शस्त्र आदि दान देना चाहिये ।

सूर्य राशि बोधक चक्र देखनेकी विधि

उपरोक्त चक्रसे सूर्यकी राशि जिस वर्षमें जानना हो, उस सम्वत्के कोष्ठके बगल में मेषादि राशि अङ्कित हैं और राशि एवं सम्वत् के सामने समान कोष्ठ में महीना,पक्ष,(कृ.शु.)तिथि और वार लिख दिए गए हैं अतः समान कोष्ठमें लिखित मास,पक्ष,तिथि, वारको उस राशिमें सूर्य प्रवेश करता है ऐसा जानना चाहिए ।

उदाहरण—सम्वत् १६६१ में यदि मकरका सूर्य जानना है तो, ऊपरकी लाइन (सम्वत्की लाइन) में १६६१ के कोष्ठमें और नीचे बगलमें राशिका कोष्ठ है उसमें मकरके सामने 'पौष शु. ७ शुक्र' लिखा हुआ है, अतः यह समझना चाहिए कि "सम्वत् १६६१ में पौष शु. ७ शुक्र" को सूर्य मकरका हुआ ।

गुरु-शनि-राहु राशिबोधक चक्र देखनेकी विधि

उपरोक्त चक्रसे गुरु शनि, राहु आदिमें से किसी ग्रह का राशि ज्ञान जिस सम्बत् में अपेक्षित हो तो उस सम्वत्के कोष्ठके बगलमें गुरु आदि ग्रह दिखाए गए हैं उनमें से जिस ग्रहकी राशि अपेक्षित हो उस ग्रहके सामनेवाले सम्वत्के समान कोष्ठमें ग्रहकी राशिका ज्ञान हो जायगा ।

उदाहरण—यदि सम्वत् १६६१ में गुरुकी राशिका ज्ञान करना है तो सम्बत् १६६१ के नीचे व गुरुके सामनेवाले समान कोष्ठमें 'शु० आषा० कृ० ८ सोमे मेषे' लिखा हुआ है, अतः यह समझना चाहिए कि 'शुद्ध आषाढ़ कृष्ण ८ सोमवार' को गुरु मेष राशि पर आया उसके आगे 'का० शु० ३ गुरौ व० ग. मीने' तथा 'पौ० शु० १४ शुक्रे मा० ग० मेषे' भी लिखा है अतएव यह समझना चाहिए कि 'कार्तिक शुक्ल ३ गुरुवार' को वक्रगतिसे मीन राशि पर गुरु गया है और इसी प्रकार पौष शुक्ल १४ शुक्रवार' को पुनः मार्गी होकर मेष राशिपर आ गया है ऐसा जानना चाहिए । इसी प्रकार शनि, राहु ग्रहोंका राशिचार भी जानना चाहिए ।

सूर्य राशि बोधक चक्र।

राशि सम्वत्	१९६१	१९६२	१९६३	१९६४	१९६५	१९६६	१९६७	१९६८	१९६९	१९७०
मेष	वै.कृ. १२ भौम	चै.शु.७बुध	वै.कृ.५शु.	शु.चै.शु.१शनि	चै.शु.११रवि	वै.कृ.७सोम	चै.शु.४बुध	चै.शु.१५गुरु	वै.कृ.१०शु.	चै.शु.६शनि
बृष	ज्ये.कृ.११शुक्र	वै.शु.९शनि	ज्ये.कृ.६चन्द्र	वै.शु.२भौम	वै.शु.१२बुध	ज्ये.कृ.८गुरु	वै.शु.६शनि	ज्ये.कृ.१रवि	ज्ये.कृ. ११च.	वै.शु.८भौम
मिथुन	शु.आ.कृ. ३० सोम	ज्ये.शु.१२बुध	आषा.कृ.८गुरु	ज्ये.शु.३शुक्र	ज्ये.शु.१५रवि	आषा.कृ.११ सोम	ज्ये.शु.७भौम	आषा.कृ.२ भौम	शु.आषा.कृ. १४शु.	ज्ये.शु.११श.
कर्क	शु.आ.शु.३शुक्र	आ.शु.१४शनि	आ.कृ.१०सोम	आषा.शु.६भौ.	आ.कृ.२गुरु	शु.आ.कृ.१३ गुरु	आषा.शु.९श.	आ.कृ.५रवि	शु.आषा. शु.१सोम	आषा.शु.१३ बुध
सिंह	आ.शु.५चन्द्र	भाद्र.कृ.१गुरु	भाद्र.कृ.१२गुरु	आ.शु.७शुक्र	भाद्रकृ.५रवि	शु.आ.शु.१सो	आ.शु.११भौम	भाद्र.कृ.७बुध	आ.शु.४शुक्र	आ.शु.१५ शनि
कन्या	भा.शु. ६गुरु	आश्वि.कृ.६श	आश्वि. कृ.१३ रवि	भाद्र.शु.९सोम	आश्विकृ.६ बुध	भा.शु.१बुध	भाद्रशु.१२शुक्र	आश्वि.कृ.८श	भा.शु.६चन्द्र	आश्वि.कृ.१ भौम
तुला	आश्वि.शु.८ रवि	का.कृ.३सोम	का.कृ.३०बुध	आश्वि.शु.११ गुरु	का.कृ.७शु.	आश्वि.शु.२ श.	आश्वि.शु.१४ सोम	का.कृ.१०भौ.	आश्विशु.६बु.	का.कृ.१गुरु
बृश्चिक	का.शु.८भौम	मार्गकृ.३बुध	मार्गकृ.१४गुरु	का.शु.१२शनि	मार्गकृ.७रवि	का.शु.२सोम	का.शु.१५बुध	मार्गकृ.११गु.	का.शु.६शुक्र	मार्ग.कृ.२श.
धन	मार्गशु.७बुध	पौ.कृ.४शुक्र	पौ.कृ.३०शनि	मार्गशु.११र.	पौषकृ.६चन्द्र	मार्गशु.३बुध	मार्गशु.१४गुरु	पौषकृ.१०.शु.	मार्ग.शु.६रवि	पौष.कृ.२सो.
मकर	पौषशु.७शुक्र	मा.कृ.३शनि	माघकृ.१४र.	पौ.शु.११भौम	माघकृ.७बुध	पौ.शु.२गुरु	पौ.शु.१३शुक्र	माघकृ.१०रवि	पौष.शु. ६ सोम	माघ.कृ.१भौम
कुम्भ	मा.शु.६शनि	फा.कृ.२रवि	फा.कृ.३०भौम	माघशु.११बुध	फा.कृ.६गुरु	मा.शु.३शनि	माघशु.१४रवि	फा.कृ.१०सोम	मा.शु. ५ भौम	फा.कृ.२गुरु
मीन	फा.शु.७चन्द्र	चै.कृ.३भौम	चै.कृ.३०गुरु	फा.शु.११शुक्र	चै.कृ.६शनि	फा.शु.२रवि	फा.शु.१५भौम	चै.कृ.१०बुध	फा.शु.५गुरु	चै.कृ.२शुक्र

सूर्य राशि बोधक चक्र।

राशि सम्वत्	१९७१	१९७२	१९७३	१९७४	१९७५	१९७६	१९७७	१९७८	१९७९	१९८०
मेष	वै.कृ.३सोम	शु.वै.कृ. १४ भौम	चै.शु.९बुध	वै.कृ.६शुक्र	चै.शु.२शनि	चै.शु.१३रवि	वै.कृ.९सोम	चै.शु.५बुध	वै.कृ.२गुरु	वै.कृ.१३शुक्र
वृष	ज्ये.कृ.५गुरु	अ.वै.कृ.३० शुक्र	वै.शु.११शनि	ज्ये.कृ.७रवि	वै.शु.४भौम	वै.शु.१५बुध	ज्ये.कृ.१०गुरु	वै.शु.७शनि	ज्ये.कृ.३रवि	शु.ज्ये.कृ.१४ सोम
मिथुन	आषा.कृ.६रवि	ज्येष्ठशु.२सो.	ज्ये.शु.१३बुध	आषा.कृ.१० गुरु	ज्ये.शु ६शुक्र	आषा.कृ. १श.	आषा.कृ.१३ सोम	ज्ये.शु.९भौम	आषा.कृ.५बुध	अ.ज्ये.कृ.३० गुरु
कर्क	श्रा.कृ.९गुरु	आषा.शु.४शु.	आषा.शु.१५ शनि	श्रा.कृ.१२सो.	आषा.शु.८भौ.	श्रा.कृ.३बुध	शु.श्रा.कृ.३० गुरु	आषा.शु.१२ शनि	श्रा.कृ.७रवि	आषा.शु.३सो.
सिंह	भा.कृ.१०रवि	श्रा.शु.७भौम	भा.कृ.२बुध	शु.भा.कृ.१४ गुरु	श्रा.शु.९शुक्र	भा.कृ.६रवि	शु.श्रा.शु२सो.	श्रा.शु.१३भौ.	भा.कृ.८बुध	श्रा.शु.५शुक्र
कन्या	आश्विन.कृ.११ बुध	भा.शु.९शुक	आश्विन.कृ.५श.	शु.भा.शु.१	भा.शु.११सो.	आश्विन कृ.८बु.	भा.शु.४गुरु	भा.शु.१४शुक्र	आश्विन.कृ.१० शनि	भाद्र.शु.७चन्द्र
तुला	का.कृ.१३श.	आश्विन.शु.१० रवि	का.कृ.५सोम	आश्विन.कृ.३० भौम	आश्विन.शु.१२ गुरु	का.कृ.९शुक्र	आश्विन.शु४श.	आश्विन.शु.१५ रवि	काकृ.१२भौ.	आश्विन.शु.८बु.
वृश्चिक	मार्ग कृ.१४ सोम	का.शु.१०भौ.	मार्ग कृ.५बुध	का.शु.१गुरु	का.शु.१३श.	मार्ग कृ.९रवि	का.शु.५चन्द्र	का.शु.१५भौ.	मार्ग.कृ.१२गुरु	का.शु.८शुक्र
धन	पौषकृ.१३ भौम	मार्गशु.९बुध	पौषकृ.६शु.	मार्गशु.१श.	मार्ग शु.१३र.	पौषकृ.१०भौ.	मार्ग शु.५बुध	मार्ग शु.१५गुरु	पौषकृ.१२शुक्र	मार्ग शु.८शनि
मकर	माघकृ.१३बुध	पौषशु.१०शु.	माघ कृ.५श.	पौष शु.१रवि	पौष शु.१२ सोम	माघकृ.९बुध	पौष.शु.४गुरु	पौषशु.१५शुक्र	माघ कृ.११श.	पौष शु.८चन्द्र
कुम्भ	फा.कृ.१३शु.	माघ शु.९श.	फा.कृ.४रवि	माघ शु.१भौ.	माघशु.१३बुध	फा.कृ.८गुरु	माघशु.३शु.	माघशु.१५रवि	फा.कृ.१२चन्द्र	माघ शु.७भौम
मीन	चै.कृ.१४रवि	फा.शु.९.सोम	चै.कृ.५भौम	फा.शु.१बुध	फा.शु.१३बुध	चै.कृ.८शनि	फा.शु.४रवि	फा.शु.१५सोम	चै.कृ.१२बुध	फा.शु.७गुरु

सूर्य राशि बोधक चक्र

राशि सम्वत्	१९८१	१९८२	१९८३	१९८४	१९८५	१९८६	१९८७	१९८८	१९८९	१९९०
मेष	चै.शु.८शनि	वै.कृ.५सोम	शु.चै.शु.१भौ.	चै.शु.१२बुध	वै. कृ. ७गुरु	चै.शु. ४शनि	चै.शु.१५रवि	वै.कृ.११ सोम	चै.शु. ६भौम	वै.कृ. ३गुरु
वृष	वै.शु.९भौम	ज्ये.कृ.६गुरु	वै.शु.३शुक्र	वै.शु.१३शनि	ज्ये.कृ.८रवि	वै.शु. ६भौम	ज्ये.कृ. २बुध	ज्ये.कृ.१२गुरु	वै.शु. ८शुक्र	ज्ये.कृ.५रवि
मिथुन	ज्ये.शु.१२शनि	आषा.कृ.८ रवि	ज्ये.शु४सोम	ज्ये.शु.१५बुध	आषा.कृ.११ गुरु	ज्ये.शु.८शुक्र	आषा.कृ.३श.	शु.आषा.कृ. १३ रवि	ज्ये.शु.१०भौ.	आषा.कृ.७बुध
कर्क	आषा.शु.१४ भौ	श्रा.कृ.११गुरु	श्रा.शु.६शु.	श्रा.कृ.२शनि	शु.श्रा.कृ.१३ रवि	आषा.शु.१० भौम	श्रा.कृ.५बुध	शु.श्रा.शु.१ गुरु	श्रा.शु.१२शु.	श्रा.कृ.९रवि
सिंह	भा.कृ.२शनि	भा.कृ१२रवि	श्रा.शु.८सोम	भाद्र.कृ.५बुध	शु.श्रा.शु.१गु.	श्रा.शु.११शु.	भा.कृ.७शनि	श्र.शु.४सोम	श्रा.शु.१५भौम	भाद्रकृ.११बुध
कन्या	आश्विन.कृ.३ भौम	आश्विन.कृ.१३ बुध	भाद्र.शु.९गुरु	आश्विन.कृ.७श.	भा.शु.२रवि	भा.शु. १३सो.	आश्विन.कृ.८ भौम	भाद्रशु.६गुरु	आश्विन.कृ.२शु.	आश्विन.कृ.१२ शनि
तुला	का.कृ.४गुरु	का.कृ.३० शनि	आश्विन.शु.११ रवि	का.कृ.७सोम	आश्विन.शु.३ भौम	आश्विन.शु.१४ गुरु	का.कृ.१०शुक्र	आश्विन.शु.६श.	का.कृ.२रवि	का.कृ.१३भौ.
वृश्चिक	मार्ग.कृ.४शनि	मार्ग कृ.१४ रवि	का.शु. १२भौ.	मार्ग.कृ.८बुध	का.शु. ३गुरु	का.शु.१३शु.	मार्गकृ.११रवि	का.शु.७सोम	मार्ग.कृ. २भौम	मार्ग.कृ.१३बु.
धन	पौष कृ.४सोम.	पौषकृ.३०भौ.	मार्ग.शु.११बु.	पौ. कृ. ७गुरु	मार्ग.शु. ३शनि	मार्गशु.१४रवि	पौ.कृ.१०चन्द्र	मार्ग.शु. ६भौम	पौ.कृ. २गुरु	पौषकृ.१३शुक्र
मकर	माघकृ.३भौम	मा.कृ.१४बुध	पौ.शु.११गु.	माघ कृ. ७शनि	पौ.शु. २रवि	पौ.शु. १३सोम	माघकृ.११बुध	पौषशु. ६गुरु	माघ कृ. २शुक्र	माघकृ.१३श.
कुम्भ	फा.कृ३बुध	फा.कृ३०शुक्र	माघ शु.११श.	फा.कृ.६रवि	माघ शु. २सोम	माघ शु. १४बु.	फा.कृ.१०गुरु	माघशु.६शुक्र	फा.कृ.१शनि	फा.कृ.१३चं
मीन	चै.कृ.३शु.	शु.चैकृ.१४श.	फा.शु.११सो.	चै.कृ. ७भौम	फा.शु. २सोम	फा.शु. १५शुक्र	चै.कृ.११शनि	फा.शु.६रवि	चै.कृ. १सोम	चै.कृ.१४बुध

राशि सम्वत्	१९९१	१९९२	१९९३	१९९४	१९९५	१९९६	१९९७	१९९८	१९९९	२०००
मेष	शु.वै.कृ.३०शु.	चै.शु.१०श.	वै.कृ.५ रवि	चै.शु.२भौम	चै.शु.१४बुध	वै.कृ.९गुरौ	चै.शु.६शनि	वै.कृ.२ रवि	वै.कृ.१३सोम	चै.शु.८भौम
वृष	शु.वै.शु.१सोम	वै.शु.११भौम	ज्ये.कृ.७बुध	वै.शु.४ शुक्र	वै.शु.१५शनि	ज्ये.कृ.१०रवि	वै.शु.६सोम	ज्ये.कृ.४बुध	शु.ज्ये.कृ.१४ गुरु	वै.शु.१०शुक्र
मिथुन	ज्ये.शु.२गुरु	ज्ये.शु.१४श.	श्रा.कृ.१०र.	ज्ये.शु.६चन्द्र	श्राषा.कृ.१भौ.	श्राषा.कृ.१३ गुरु	ज्ये.शु.९शुक्र	श्राषाकृ.५शनि	शु.ज्ये.शु.१र.	ज्ये.शु.१२भौ.
कर्क	श्राषा.शु.५सो.	श्रा.शु.१५भौ.	श्रा.कृ.१२बुध	श्राषा.शु८शुक्र	श्रा.कृ.४शनि	शु.श्रा.कृ.३० रवि	श्राष.शु.१२ भौम	श्रा.कृ.८बुध	श्रा.शु.३ गुरु	श्रा.शु.१४शु.
सिंह	श्रा.शु.६गुरु	भा.कृ.३शनि	शु.भा.कृ.१४र	श्रा.शु.१०चन्द्र	भा.कृ.५भौम	शु.श्रा.शु.३गुरु	श्रा.शु.१४शुक्र	भाद्रकृ.९श	श्रा.शु५सोम	भा.कृ.२भौम
कन्या	भाद्रशु.८रवि	श्राश्विन.कृ.५ भौम	शु.भा.शु.१बुध	भा.शु.११गु.	श्राश्विन.कृ.७शु.	भाद्रशु.४रवि	भा.शु.१५सोम	श्राश्विन कृ.१० भौम	भा.शु.७ गुरु	श्राश्विन.कृ.४शु.
तुला	श्राश्विन.शु.९बु.	का.कृ.६गुरु	श्राश्विन.शु.१शु	श्राश्विन.शु.१२ रवि	का. कृ.९सो.	श्राश्विन.शु.५ भौम	श्राश्विन शु.१५ बुध	का.कृ.१२शु.	श्राश्विन शु.८ शनि	का.कृ.४रवि
बृश्चिक	का.शु.१०शु.	मार्ग.कृ.६शनि	का.शु.१रवि.	का.शु.१३भौम	मार्गकृ.९बुध	का.शु.५गुरु	का.शु.१५शु.	मार्गकृ.१२रवि	का.शु.९चन्द्र	मार्ग.कृ.४भौम
धन	मार्ग.शु.१०श.	पौ.कृ.५रवि	मार्गशु२भौम	मार्ग.शु.१२बु.	पौषकृ.९गुरु	मार्गशु.५शनि	पौषकृ.१रवि	पौषकृ .१२सो.	मार्गशु.८भौम	पौषकृ.५गुरु
मकर	पौ.शु.१० चन्द्र	माघकृ.६भौ.	पौषशु.१बुध	पौ.शु.१२गुरु	माघ कृ.९श.	पौषशु.५रवि	पौषशु.१५सोम	माघकृ.११भौ.	पौषशु.९ गुरु	माघकृ.४शुक्र
कुम्भ	माघशु.९भोम	फा.कृ.५बुध	माघशु.१शुक्र.	माघशु.१३श.	फा.कृ.९रवि	माघशु.४सोम	फा.कृ.१ बुध	फा.कृ.१२गुरु	माघशु.८शुक्र	फा.कृ.३शनि
मीन	फा.शु.१०गुरु	चै.कृ.५शुक्र	फा.शु.१शनि	फा.शु.१३सोम	चै.कृ.९भौम	फा.शु.४बुध	फा.शु.१५गुरु	चै.कृ.१२शनि	फा.शु.८रवि	चै.कृ.३सोम

सूर्य राशि बोधक चक्र ।

राशि सम्वत्	२००१	२००२	२००३	२००४	२००५	२००६	२००७	२००८	२००९	२०१०
मेष	वै.कृ.५ गुरु	शु.चै.शु.१शु.	चै.शु.१२शनि	वै.कृ.८रवि	चै.शु.४भौम	चै.शु.१५बुध	वै.कृ.११गुरु	चै.शु.७शुक्र	वै.कृ. १रवि	शु.वै.कृ.३० सोम
वृष	ज्ये.कृ.५शनि	वै.शु.३सोम	चै.शु.१४भौम	ज्ये.कृ.९बुध	वै.शु.६शुक्र	ज्ये.कृ.२शनि	ज्ये.कृ.१३रवि	वै.शु.८सोम	ज्ये.कृ.५[illegible]	शु.वै.शु.१गुरु
मिथुन	आषा.कृ.८बुध	ज्ये.शु.४गुरु	ज्ये.शु.१५शुक्र	श्रा.कृ.११र.	ज्ये.शु.८सोम	आषा.कृ.४ भौम	शु.आषा.कृ. १४ बुध	ज्ये.शु.११शु.	आषा.कृ.७श.	ज्ये.शु.३रवि
कर्क	श्रा.कृ.११रवि	श्रा.शु.७चन्द्र	श्रा.कृ.२भौम	शु.श्रा.कृ.१३बु.	आषा.शु.१० शुक्र	श्रा.कृ.६शनि	शु.आषा.शु.१ रवि	श्रा.शु.१२चन्द्र	श्रा.कृ.१०बुध	आषा.शु.५गुरु
सिंह	भाद्रकृ.१३बुध	श्रा.शु.८गुरु	भाद्र.कृ.५शनि	शु.श्रा.शु.१रवि	श्रा.शु. १२ सोम	भा.कृ.७भौम	श्रा.शु.४गुरु	श्रा.शु.१५शुक्र	भाद्रकृ ११श.	श्रा.शु.६रवि
कन्या	आश्विन.कृ.१४ शनि	भा.शु.९रवि	आश्वि.कृ.७ भौम	भाद्रशु.३बुध	भा.शु.१३गु.	आश्वि.कृ.९शु.	भाद्र शु.६रवि	आश्वि.कृ.२ सोम	आश्वि.कृ.१२ भौम	भा.शु.८बुध
तुला	का.कृ.१४सो.	आश्वि.शु.११ बुध	का.कृ.७गुरु	आश्वि.शु३शु.	आश्वि.शु.१४ शनि	का.कृ.१०सो.	आश्वि.शु.७ भौम	का.कृ.३बुध	का.कृ.१४शु.	आश्वि.शु.९ शनि
बृश्चिक	मार्ग.कृ.३०बु.	का.शु.१२शुक्र	मार्ग.कृ.८शनि	का.शु.४रवि	का.शु.१४सोम	मार्गकृ.११बुध	का.शु.७गुरु	मार्ग.कृ.३शु.	मार्ग.कृ.१३श.	का.शु.१०च.
धन	पौषकृ.३०शुक्र	मार्ग.शु.१०शु.	पौषकृ.७रवि	मार्ग.शु.४भौम	मार्ग.शु.१४ बुध	पौ.शु.१०गुरु	मार्ग.शु.७शुक्र	पौ.कृ.२शनि	पौषकृ.१३सो.	मार्गशु.१०भौ.
मकर	माघकृ.१४श.	पौ.शु.११रवि	माघकृ.८भौम	पौ.शु.३बुध	पौ.शु.१४गुरु	माघकृ.१०शु.	पौषशु.७रवि	माघकृ.२सोम	माघकृ.१३भौ.	पौ.शु.९बुध
कुम्भ	फा.कृ.३०सोम	माघशु.११भौ.	फा.कृ.७बुध	माघशु.२गुरु	माघशु.१४श.	फा.कृ.१०रवि	माघशु.६चन्द्र	फा.कृ.१भौम	फा.कृ.१३गुरु	माघशु.१०शुक्र
मीन	चै.कृ.१४भौम	फा.शु.१२गुरु	चै.कृ.७शुक्र	फा.शु.३शनि	फा.शु.१४रवि	चै.कृ.११भौम	फा.शु.६बुध	चै.कृ.२गुरु	चै.कृ.१३शुक्र	फा.शु.१०रवि

सूर्य राशि बोधक चक्र।

राशि सम्वत्	२०११	२०१२	२०१३	२०१४	२०१५	२०१६	२०१७	२०१८	२०१९	२०२०
मेष	चै.शु.११भौम	वै.कृ.६बुध	चै.शु.३ शुक्र	चै.शु.१४शनि	वै.कृ.१०रवि	चै.शु.५सोम	वै.कृ. २बुध	वै.कृ.१३गुरु	चै.शु. ९शुक्र	वै.कृ.४शनि
वृष	वै.शु.१२शुक्र	ज्ये.कृ.७शनि	वै.शु.४सोम	ज्ये.कृ.१भौ.	ज्ये.कृ.११बुध	वै.शु. ६गुरु	ज्ये.कृ.४शनि	शु.ज्ये.कृ.३० रवि	वै.शु.१०सोम	ज्ये.कृ.५भौम
मिथुन	ज्ये.शु.१३सो.	श्रा.कृ.१०बुध	ज्ये.शु.६गुरु	श्राषा.कृ.२शु.	श्राषा.कृ.१२ शनि	ज्ये.शु.९चन्द्र	श्राषा.कृ. ६ भौम	शु. ज्ये. शु. १ बुध	ज्ये. शु. १२	श्रा.कृ.८शनि
कर्क	श्राषा शुक्ल १५ शुक्र	श्रा.कृ.१२सोम	श्रा.शु.९ सो.	श्रा.कृ.४भौम	शु. श्रा.कृ. ३ बुध	श्राषा.शु.११ गुरु	श्रा.कृ.८शनि	श्राषा.शु. ४ सोम	श्रा.शु.१४सोम	श्रा.कृ.१०भौ
सिंह	भाद्र. कृ .३ भौम	शु.भा.कृ.३० बुध	श्रा.शु.१०गुरु	भा.कृ.७शनि	शु.श्रा.शु. रवि	श्रा.शु.१४ सोम	भा.कृ. १० भौम	श्रा.शु.६गुरु	भा.कृ.२शुक्र	भा.कृ.१३श.
कन्या	श्राश्विन.कृ.५ शुक्र	शु.भा.शु.१शु.	भाद्रशु.१२र.	श्राश्विन.कृ.८ भौम	भा.शु.४बुध	श्राश्विन.कृ.१४ गुरु	श्राश्विन.कृ.११ शुक्र	भाद्र.शु. ७ रवि	श्राश्विन.कृ.४ सोम	श.श्राश्विनकृ. ३०भौम
तुला	का.कृ. ६ रवि	श्राश्विन.शु.२ सोम	श्राश्विन.शु.१३ बुध	का. कृ.९गुरु	श्राश्विन.शु.५शु.	का.कृ.१शनि	का.कृ.१२सो.	श्राश्विन.शु८ भौम	का.कृ.५बुध	श्रधि.श्राश्विन. कृ.३०गुरु
बृश्चिक	मार्गकृ.६भौम	का. .२बुध	का.शु१३शुक्र	मार्ग.कृ.८शुक्र	का.शु.६रवि	मार्गकृ.१सोम	मार्गकृ.१२ बुध	का.शु.९गुरु	मार्ग.कृ.५शुक्र	का.कृ.३०श.
धन	पौ.कृ.६बुध	मार्ग.शु.२शुक्र	मार्ग.शु.१३ शनि	पौ.कृ.९रवि	मार्गशु.६भौम	पौषकृ.१बुध	पौष कृ.१२ गुरु	मार्ग.शु.८शुक्र	पौष.कृ.४शनि	मार्ग.कृ.३० सोम
मकर	माघकृ.६शुक्र	पौ.शु.१शनि	पौषशु. १२र.	माघकृ.८सोम	पौषशु.५बुध	माघ.कृ.१गुरु	माघकृ.११शुक्र	पौषशु.८शनि	माघकृ.५सोम	माघ कृ.३० भौम
कुम्भ	फा.कृ.५शनि	माघशु.१रवि	माघशु.१३भौ.	फा.कृ. ९बुध	माघ शु.५गुरु	माघ.शु.१५शु	फा.कृ१२रवि	माघशु.८सोम	फा.कृ.४भौम	फा.कृ.१४बुध
मीन	वै.कृ.६सोम	फा.शु.१भौम	फा.शु.१३गुरु	चै.कृ. ८गुरु	फा.शु.१५शनि	फा.शु.१५शनि	चै.कृ. १२भौम	फा.शु.९बुध	चै.कृ.४गुरु	शु.चै.कृ.१४शु.

गुरु-शनि-राहु राशि बोधक चक्र ।

ग्रहाः सम्वत्	१९६१	१९६२	१९६३	१९६४	१९६५	१९६६	१९६७	१९६८	१९६९	१९७०
गुरुः	शु. आषा. कृ. ८ सोम मेषे का.शु.३गुरौ व.ग.मीने पौ.शु.१४शुक्रे मा. ग. मेषे	ज्ये.शु.९रवौ वृषे	आषा.शु.३ सोमे मिथुने	आषा.शु.४ रवौ कर्के	श्रा.शु.९गुरौ सिंहे	भा.कृ.४शुक्रे कन्यायाम्	आश्वि.कृ. ३० सोमे तुलायाम्	का. शु. १० बुधे वृश्चिके	मार्ग.कृ. २ भौमे धनु	पौष. कृ. ३ भौमे मकरे
शनिः	प्रारम्भे मकरे माघकृ.१४ शुक्रे कुम्भे	यावदब्दं कुम्भे	यावदब्दं कुम्भे	वै.कृ.१चन्द्रे मीने भा.शु.१० भौमे व.ग.कुम्भे माघकृ.८रवौ मीने	यावदब्दं मीने	शु.श्राकृ.९रवौ मेषे शु.श्रा.शु.१० गुरौ व.ग.मीने फा.शु.१३बुधे मा.ग.मेषे.	यावदब्दं मेषे	यावदब्दं मेषे	ज्ये.कृ.३शनौ वृषे	यावदब्दं वृषे
राहुः	अधि.आषा. कृ. १ भौमे सिंहे	फा.कृ.१० रवौ कर्के	यावदब्दं कर्के	भा.कृ.३० शनौ मिथुने	यावदब्दं मिथुने	चै.शु.५शुक्रे वृषे	यावदब्दं मेषे	यावदब्दं मेषे	ज्ये.कृ.१गुरौ मीने	मार्ग. कृ. ६ बुधे कुम्भे

गुरु-शनि-राहु राशि बोधक चक्र ।

ग्रहाः सम्वत्	१९७१	१९७२	१९७३	१९७४	१९७५	१९७६	१९७७	१९७८	१९७९	१९८०
गुरु	ज्ये.कृ.५गुरौ कुम्भे श्रा.कृ.१बुधे व.ग.मकरे पौषशु.१३ बुधे म.ग.कुम्भे	अधि.वै.कृ. १३ भौमे आश्विन.कृ.६ बुधे कुम्भे पौष कृ.११ शनौ मीने	वै.शु.१४भौमे मेषे	ज्ये.शु.५शनौ बुधे	ज्ये.शु.२चन्द्रे मिथुने	आषा.शु. १ शनौ कर्के	श्रा.कृ.१३बुधे कर्के	श्रा.शु.८गुरौ कन्यायाम्	आश्विन.कृ.१२ चन्द्रे तुलायाम्	आश्विन.शु. ७ भौमे वृश्चिके
शनिः	आषा.कृ. २ बुधे मिथुने	यावदब्दं मिथुने	श्रा.कृ.२चन्द्रे कर्के	यावदब्दं कर्के	भा.कृ.१० शनौ सिंहे	यावदब्दं सिंहे	आश्विन.शु.५ रवौ कन्यायाम्	चै.शु.५बुधे व.ग.सिंहे आषा.कृ. आषा.कृ. १० गुरौ मा. ग. कन्यायाम्	यावदब्दं कन्यायाम्	आश्विन.कृ. १४ भौमे तुलायाम्
राहुः	यावदब्दं कुम्भे	ज्ये.कृ. ११ भौमे मकरे	पौ.शु.१चन्द्रे धनुषि	यावदब्दं धनुषि	आषा.शु.६ रवौ वृश्चिके	माघ.शु.११ शनौ तुलायाम्	यावदब्दं तुलायाम्	आषा.शु. १० गुरौ कन्यायाम्	चै.कृ.७शुक्रे सिंहे	यावदब्दं सिंहे

गुरु-शनि-राहु राशि बोधक चक्र ।

ग्रहाः सम्वत्	१९८१	१९८२	१९८३	१९८४	१९८५	१९८६	१९८७	१९८८	१९८९	१९९०
गुरुः	का. शु. १४ सोमे धनुषि	चै.शु.१४बुधे मकरे आषा.कृ. ६शुक्रे व.ग.धनुषि मार्ग.शु. १४रवौ मा.ग.मकरे	शु..चै.शु.२बुधे कुम्भे श्रा.शु.१४रवौ व.ग.मकरे मार्ग.शु. २भौमे मा.ग.कुम्भे	वै. कृ. ३ बुधे मीने	वै. शु. ११ सोमे मेषे	वै. शु. १० शनौ वृषे	ज्ये.कृ. १२ रवौ मिथुने	शु.आषा.शु. १२ शनौ कर्के का.शु.१३चंद्रे सिंहे पौष.कृ.८शुक्रे व. ग. कर्के	आषा. शु. २ भौमे सिंहे	श्रा.शु.१९बुधे कन्यायाम् माघ.कृ.३गुरौ तुलायाम् चै.कृ.१४बुधे कन्यायाम्
शनिः	यावदब्दं तुलायाम्	माघ. कृ. २ शुक्रे वृश्चिके	वै.कृ.१३ चन्द्रे व.ग. तुलाभे आश्वि.कृ. १४ भौमे मा.ग.वृश्चिके	यावदब्दं वृश्चिके	पौष. कृ. ११ रवौ धनुषि	यावदब्दं धनुषि	यावदब्दं धनुषि	पौष. शु. ३ रवौ मकरे	यावदब्दं मकरे	यावदब्दं मकरे
राहुः	आश्वि.कृ. १२ गुरौ कर्के	यावदब्दं कर्के	शु. चै. शु. २ बुधे मिथुने	का. शु. ७ भौमे वृषे	यावदब्दं वृषे	वै. शु. १३ भौमे मेषे	पौष कृष्ण ३ सोमे मीने	यावदब्दं मीने	आषा. कृ. ८ रवौ कुम्भे	फा.शु.१बुधे मकरे

ग्रहाः सम्वत्	१९९१	१९९२	१९९३	१९९४	१९९५	१९९६	१९९७	१९९८	१९९९	२०००
गुरुः	भाद्रकृ. ९रवौ तुलायाम् माघ कृ. १४ शनौ वृश्चिके	चै.शु. १४बुधे व.ग.तुलायाम् आश्वि.शु. ७३ सोमे मा.ग. वृश्चिके फा.शु.३भौमे धनुषि	ज्ये.शु. ९शुक्रे व.ग.वृश्चिके आश्वि.शु. ८ शुक्रे धनुषि फा.कृ.१४ गुरौ मकरे	वर्षारम्भे मकरे श्रा.कृ.१शनौ व.ग.धनुषि का.शु.४ रवौ मा.ग. मकरे चै.कृ.८गुरौ कुम्भे	यावदब्दं कुम्भे	वै.कृ. १बुधे मीने	चै.शु. ७ रवौ मेषे	वै.कृ.१४शुक्रे वृषे	शु.ज्ये.कृ.९ शनौ मिथुने	ज्ये.कृ.७बुधे कर्के का.कृ.३शनौ सिंहे फा.कृ.४रवौ व.ग. कर्के
शनिः	वै.कृ. ४ भौमे कुम्भे श्रा.कृ.१४गुरौ व.ग.मकरे पौ.कृ.१२बुधे मा.ग. कुम्भे	यावदब्दं कुम्भे	फा.कृ.३०शुक्रे मीने	यावदब्दं मीने	यावदब्दं मीने	ज्ये.कृ.१शनौ मेषे	यावदब्दं मेषे	आषा.कृ. ८भौमे वृषे पौषकृ.११रवौ व.ग. मेषे चै.कृ.४शुक्रे पुनः वृषे	यावदब्दं वृषे	श्रा.कृ.९रवौ मिथुने पौषशु.४गुरौ ब.ग.वृषे
राहुः	यावदब्दं मकरे	श्रा.शु. ४शनौ धनुषि	माघशु. ८शुक्रे वृश्चिके	यावदब्दं वृश्चिके	आश्वि.शु. १५ रवौ तुलायाम्	यावदब्दं तुलायाम्	चै.शु.२ भौमे कन्यायाम्	मार्गकृ. ११ शनौ सिंहे	यावदब्दं सिंहे	ज्ये.शु.२शुक्रे कर्के

गुरु-शनि-राहु राशि बोधक चक्र ।

ग्रहाः सम्वत्	२००१	२००२	२००३	२००४	२००५	२००६	२००७	२००८	—२००९	२०१०
गुरुः	आषा.कृ. ११ शुक्रे सिंहे मार्ग. कृ. १० शुक्रे कन्यायाम्	अधि.चै.शु. ११ शुक्रे ८ बुधे व.ग. सिंहे आषा. शु. ४ शुक्रे पुनः कन्यायाम् मार्ग.शु.६सोमे तुलायाम्	वै.कृ.५रवौ वग कन्यायाम् श्रा.शु.१५सोमे पुनः तुलायाम् माघ. कृ.१बुधे वृश्चिके	ज्ये.शु.५रवौ व.गतुलायाम् भाद्र. कृ. ९ भौमे पुनः वृश्चिके माघकृ. ८सोमे धनुषि	आषा.शु.१बुधे व.ग.वृश्चिके आश्वि.कृ.१० भौमे पुनः धनुषि फा.कृ.९सोमे मकरे	चै.कृ. ४बुधे कुम्भे	फा. शु. १२ भौमे मीने	यावदब्दं मीने	चै.शु.४शनौ मेषे	शु. वै. कृ. १० गुरौ वृषे श्राशु.१५सोमे मिथुने मार्गकृ १३ शु. व. ग. वृषे
शनिः	वै. कृ. ८ शनौ मिथुने	भाद्र. कृ. १० शनौ कर्के पौष. शु. १३ भौमे व.ग.मिथुने	ज्ये. कृ. ११ रवौ कर्के	आश्वि. शु. ९ गुरौ सिंहे पौषशु.६शनौ व. ग. कर्के	आषा.शु.७ भौमे पुनः सिंहे	यावदब्दं सिंहे	भाद्र.कृ.१२ शनौ कन्यायाम्	यावदब्दं कन्यायाम्	मार्ग. शु. २ बुधे तुलायाम्	अधि. वै.कृ. ३ शनौ व.ग. कन्यायाम् श्रा.शु.९बुधे पुनः तुलायाम्
राहुः	पौष. शु. ६ गुरौ मिथुने	यावदब्दं मिथुने	आषा. शु. ११ बुधे वृषे	मा. कृ. २ बुधे मेषे	यावदब्दं मेषे	भाद्र कृ. ७ भौमे मीने	फा.कृ. १३ सोमे कुम्भे	यावदब्दं कुम्भे	आश्वि. शु. २ रवौ मकरे	यावदब्दं मकरे

ग्रहाः सम्वत्	२०११	२०१२	२०१३	२०१४	२०१५	२०१६	२०१७	२०१८	२०१९	२०२०
शुरुः	वै.कृ.२भौमे मिथुने भाद्रशु.८ रवौ कर्के माघशु.११ गुरौ व.ग. मिथुने	वै.शु.१२भौमे पुनः कर्के शु.भा.शु. १० सोमे सिंहे फा.शु.१४रवौ व. ग.कर्के	वै.शु.१३भौमे मा.ग.सिंहे का.कृ.९रवौ कन्यायाम्	वै.कृ.३बुधे व.ग.सिंहे आषा. कृ. ७बुधे मा.ग. कन्यायाम् मार्ग.शु.७गुरौ तुलायाम्	ज्ये.कृ.१४ शनौ व.ग.कन्याभे अधि.श्रा.शु. ५सोमे मार्गी. तुलायाम् पौ.कृ.२रवौ व.ग.वृश्चिके	आषा.कृ.१ रवौ व.ग. तुलायाम् श्रा. शु. १४ चन्द्रे मा.ग, वृश्चिके माघशु.८शुक्रे धनुषि	फा.कृ.९शुक्रे मकरे	फा.कृ.५शनौ कुम्भे	फा.कृ.१२गुरौ मीने	चैत्र कृष्ण ३० शनौ मेषे
शनिः	यावदब्दं तुलायाम्	का.शु.२बुधे वृश्चिके	यावदब्दं वृश्चिके	फा.कृ. ७सोमे धनुषि	आषा.कृ.७ रवौ व. ग. वृश्चिके का.कृ.७सोमे मा.ग.धनुषि	यावदब्दं धनुषि	फा.कृ. २गुरौ मकरे	भाद्र.शु.३बुधे व.ग.धनुषि आश्वि.शु. २ बुधे मकरे	यावदब्दं मकरे	माघ शु. १५ भौमे कुम्भे
राहुः	वै.शु.८शनौ धनुषि	शु.भाद्र.शु. ११ भौमे वृश्चिके	यावदब्दं वृश्चिके	वै.कृ.१चन्द्रे तुलायाम्	भाद्र.शु.१२ बुधे कन्यायाम्	यावदब्दं कन्यायाम्	वै.कृ.१भौमे सिंहे	का.कृ.७सोमे कर्के	यावद०ं कर्के	ज्ये. कृ. ११ रवौ मिथुने

उपर्युक्त सारिणी (सूर्य गुरु, शनि, राहु राशिवोंधक) देने का कारण यह है कि प्रस्तुत समय में नष्ट जन्माङ्ग बनाते समय लोगों को कठिनाई पड़ती है कि प्रश्न कर्ता के जन्म कालिक ग्रह किस राशि पर थे और कब किस मास में, किस सम्वत् में उस ग्रह की राशि बदली है आदि विचार प्रत्येक हस्तरेखा से फल कहने वाले ज्यौतिषी के सामने उपस्थित होते हैं, क्योंकि ज्यौतिष त्रिस्कन्ध है और सामुद्रिक या हस्त-रेखाशास्त्र संहितास्कन्ध का ही एक अंग है परन्तु आज के हस्तरेखाविद् पाश्चात्य पद्धति को अपना कर ही प्रायः हस्तरेखा फल कहते हैं तो उनके सामने नष्ट पत्र साधन करने के साधन प्रायः उपस्थित नहीं रहने से उपरोक्त साधन में असमर्थता प्रकट करते दिखाई पड़ते हैं, अतएव यह सारणियाँ देकर उक्त कठिनाइयों को दूर करने की चेष्टा की गई है। इन सारणियों में सम्वत् १६६१ से २०२० तक के सूर्य और गुरु, शनि, राहु का राशिचार दिया गया है। इसके प्रश्न कर्ता के जन्म समय का सम्वत् एवं मास तिथि ज्ञान होने से उस समय की ग्रह स्थिति का बोध उपरोक्त सारणियों से, सुलभता से हो जायगा। तथा नष्ट साधन में विशेष सहायता उपरोक्त सारणियों से मिलेगी। नष्ट साधन के और भी अनेक प्रकार हैं तथा कुछ तो प्रस्तुत पुस्तक में भी दिये गए हैं यदि इनके ऊपर ठीक से अभ्यास किया जाय तो नष्ट पत्र बनना कोई कठिन नहीं है ऐसा शास्त्रीय मत है।

हाथ की छाप लेने की विधि—पहले हाथ को साबुन से धोकर प्रेम की स्याही किसी एक शीशे के प्लेट के ऊपर रबर के रुलर से फैला लेवें, पश्चात् रुलर को धीरे से हाथ के ऊपर फिरावें और बाद में उस हाथ को किसी मोटे (गद्देदार) कपड़े पर साधारण फुलिस्केप साइज के चिकने कागज को रखकर स्याही लगे हुए हाथ को स्वाभाविक स्थिति में (हलके दबाव से) उसपर रखकर दबाव देने से हाथ की रेखाएँ सुन्दर एवं सुस्पष्ट उठ आवेंगी। इस प्रकार से लिए हुए चित्रों से हाथ की समस्त छोटी-बड़ी रेखायें उभर आती हैं और फल कहने में सहायक होती हैं। जबतक हाथ की समस्त रेखायें सुस्पष्ट नहीं होती तबतक फलकथन में असुविधा होती है।

हस्त देखने की विधि—साधारणतः हस्तपरीक्षा करने की विधि सबको जाननी चाहिए और हस्त परीक्षा किस प्रकार करनी चाहिए, रेखाओं एवं चिह्नोंके अतिरिक्त ग्रहों के स्थान, चिह्न आदि का भी हस्तपरीक्षामें कितना महत्व है इन सब तत्त्वों पर विचार कर लेना आवश्यक हो जाता है एवं हाथ दिखाने वाले को भी चाहिए कि प्रतःकाल उठकर शौचादि से निवृत्त होकर स्नानादि कर सुगन्धित द्रव्य लगाकर अपने धर्म के अनुसार अपने इष्ट देव का ध्यान करने के बाद में दैवज्ञ को हाथ दिखानेके लिए उनके स्थान पर फल-फूल, नैवेद्य (मीठा आदि), दक्षिणा लेकर उनके स्थान पर जावें और नम्रतापूर्वक हाथ दिखावें। यह स्मरण रखें कि दैवज्ञके पास खाली हाथ जाने से फल पूरा नहीं घटता और न तो धूर्तता (वंचकता) ही करे, इससे भी फलादेश ठीक नहीं उतरता यह सब शास्त्रनिषिद्ध है।

प्रातःकाल ८ बजे तक और अपराह्न में ३ से ५ बजे तक का समय हाथ देखने के निमित्त उत्तम माना गया है और किसी-किसी का मत तो है कि पुरुषस्वभाव वाली स्त्रियों का दाहिना हाथ और स्त्री स्वभाव वाले पुरुषों का बाँया हाथ मध्यान और रात्रि में ७ से ६ बजे तक देखना चाहिये।